॥ श्री ॥

ललितललाम

ललितकौमुदी टीका सहित ।

प्रसिद्ध कवि श्रीमतिरामजी के ललितललाम ग्रन्थ की टीका ।

जिसे

बूंदी राज्य प्रतिष्ठित वाल्टरकृत राजपूत-हितकारिणी सभा तथा कौंसिल के मेम्बर श्रीकविराज रावगुलाबसिंहजी ने कविता प्रेमियों के हितार्थ रची,

और जिसे

बाबू रामकृष्णवर्म्मा भारतजीवनसम्पादक ने उक्त कविराज जी की सहायता से प्रकाश किया ।

काशी ।

भारतजीवन प्रेस में मुद्रित हुई ।

सम्वत् १९५४ ।

प्रथम बार १०००

मूल्य ॥/

धन्यवाद ।

आज हम अत्यन्त कृतज्ञता और धन्यवाद-पूर्वक निवेदन करते हैं कि इस अनूठे ग्रन्थ के प्रकाश करने में बूँदीनरेश श्री १०८ महाराज रघुवीरसिंह जी ने हमारी बहुत ही सहायता की है। महाराज जैसे विद्यानुरागी है वैसेही गुणग्राही भी हैं, इनकी गुणग्राहकता हमारे भारतवर्ष में सर्वत्र प्रसिद्ध है और उदारता वीरता सुजनतादि गुणों से तो महाराज परम्परा से भूषित चले आते हैं। ये समस्त गुण तो महराज के वंश के पूर्वपुरुषो मे ऐसे विराजमान थे मानो उन्ही के लिये इन गुणों की सृष्टि हुई थी। अंग्रेजी सर्कार मे भी श्री १०८ महाराज रघुवीरसिंह जी का बहुत मान्य है। यह इनकी अनूठी सुशीलता विद्यानुरागिता तथा गुण-ग्राहकताही का कारण है कि एक से एक भारी

सर्दार और विद्वज्जन महाराजके दर्बार में शोभा पा रहे हैं। हम अन्तःकरण से श्रीमहाराज को धन्यवाद देते हैं और जगदीश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारेसुयोग्य महाराज बहादुर चिरायु होकर देशहितसाधनपूर्वक सदा प्रजा का पालन करते रहे।

रामकृष्णवर्म्मा
भारतजीवनसम्पादक
काशी।

ललितललाम के टीकाकार श्रीरावजी साहिब श्रीकविराज गुलाबसिंहजी का जीवनचरित्र ।

ये कविराजजी इन दिनो श्रीमन्महाराज बूंदीन्द्र श्रील समुद्र श्री१०८ रघुबीरसिंहजी के दर्बार को भूषित करते हैं। इनकी पूज्य पितामह श्रीसेढूरामजी को अलवर के महाराज श्रीबख्तावरसिंहजी ने सुकविजी की पदवी दी थी और इनके पूज्य पिताजी का नाम श्रीमहताबसिंहजी है। कविराजजी का जन्म अलवर राज्य के प्रथम स्थान राजगढ़ में श्री सम्वत् १८८० के भादो सुदी १ को हुआ। पाँचही वर्ष की अवस्था मे पढने लिखने का शोक अधिक हुआ, भाषा काव्य और संस्कृत मे सारस्वतचन्द्रिका कण्ठस्थ कर गये थे। तदु परान्त अलवर मे आकर रावजी ने श्रीपूर्णमलजी से भाषा ग्रन्थ और संस्कृत ग्रन्थ अर्थ सहित पढे। फेर पण्डित जगन्नाथ जी से कुवलयानन्द काव्यप्रकाश आदिक ग्रन्थ भली प्रकार पढे। इसके अनन्तर अलवर महाराज श्रीशिवदानसिंहजी की महाराणीजी झालावाड की के श्रीमहाराजकुमार भये उनकी बधाई कें अन्त मे रावजी साहिब को पूरो इज्जत

और पूरी जीविका होने का विचार हो गया था। उस स
मय से चन्द रोज पहिलेही एजण्टी हो गई जिससे कुछ
दिन पीछे रावजी साहिब अलवर महाराज की सम्मति से
सम्वत् १८९८ में झालावाड को चले, तब गैल में करौली
महाराज श्रीजयसिंहपालजी से मिल वहां दस रोज रह
कर आगे को चले तो बूंदी के महाराज श्री १०८ रामसिंह
जी संस्कृत प्राकृति अपभ्रंस पिंगलादि भाषाओं के जानने
वाले येइनकी विद्या और काव्यशक्ति को देख बहुतही प्रस
न्न हुये और भली प्रकार सत्कार देकर उन्होंने इनको अपने
दर्बार में रख लिया, तब से ये कविराजजी आज पर्यन्त
बूंदी दर्बार को ही सुशोभित कर रहे हैं। श्रीमहाराज
बहादुर ने प्रसन्न हो कर इनको जलोदो और बांख्यों दो
ग्राम दिये और सालगिरह के उत्सव में बनी हुई बहुत
लागत की खास पौशाक के दस्तूर से अधिक पाँच सौ
रुपये का दुशाला घर के बिना धारण करा बख्शी फेर
ताजीम और सिरपेचादि उत्तम भूषण छड़ी आदि सत्कार
कर साखत सहित हाथी बख्शी उसपर इनको चढा लवा
जमा साथ देकर इनकी हवेली पहुचाया फेर महाराज ब
हादुर श्री १०८ रघुवीरसिंहजी ने पगन के वास्ते सुवर्ण
कड़ा बख्शा। राजपूताने में यह इज्जत बहुतही बडो गिनो
जाती है और कठिनता से प्राप्त होती है। कविराजजी वा
स्टर संस्थापित राजपूतहितकारिणी सभा के और कौंसिल

के मेम्बर हैं और महकमा रजिस्टरी के हाकिम हैं, और स
हर्ष प्रकाश करने में आता है कि हमारे काशीकविसमाज
के एक मात्र भूषण हैं। बूंदी में उनकी बड़े सर्दारों में गि
नती है, ऐसा उत्तम विभव पाने पर भी श्रीराव साहब की
सुशीलता और मिलनसारी प्रशंसा के योग्य है, । रावजी
साहिब के रचित ग्रन्थ ये हैं। रुद्राष्टक १ रामाष्टक २ गङ्गा,
ष्टक ३ शारदाष्टक ४ बालाष्टक ५ पावसपचीसी ६ प्रेमप
चीसी ७ रसपचीसी ८ समस्यापचीसी ९ गुलाब कोष
काण्ड चार १० नामचन्द्रिका ११ नाम सिंधुकोश भाग
चार १२ व्यंग्यार्थचन्द्रिका १३ बृहद्व्यंग्यार्थचन्द्रिका १४ भू
षणचन्द्रिका १५ ललितकौमुदी १६ नीतिसिंधु खण्ड चार १७
नीतिमंजरी १८ नीतिचन्द्र भाग दोय १९ काव्यनियम २०
वनिताभूषण २१ बृहद्वनिताभूषण २२ चिन्तातन्त्र २३ मू
र्खशतक २४ ध्यानरूप सवति का बहुकथचरित्र २५ आदि
त्यहृदय २६ कृष्णलीला २७ रामलीला २८ सुलोचनालीला
२९ विभीषण लीला ३० दुर्गास्तुति ३१ लक्षणकौमुदी ३२
कृष्णचरित्र में गोलोकखण्ड । वृन्दावनखण्ड । मथुराखण्ड
द्वारिकाखण्ड । विज्ञानखंड । ३३ । कृष्णचरित्र सूची ३४ ।
इन्होंने अपने भाई के पुत्र श्रीरामनाथजी को गोद लिया
है ये भी सिद्धान्तकौमदी आदि संस्कृत के ग्रन्थ और भाषा
के ग्रन्थ बहुत पढ़े हैं। अच्छी कविता करते हैं इन्होंने स
मस्यासार १ सतीचरित्र २ रामनीति ३ नीतिसार ४ प्रभु

दशक ५ परमेश्वराष्टक ६ ये ग्रंथ बनाये हैं। राव जी के घर में भाषाकाव्य का ऐसा प्रचार है कि उनकी घरकी दासी पुत्री चन्द्रकला बाई की कविता जिसे हमारे कविसमाज के सभी लोग पढ चुके हैं वास्तव में प्रशंसा के योग्य होती है। क्यों न हो विद्वान का साहचर्य्य भी दूसरों को विद्वान कर देता है। श्रीचन्द्रकलाबाई के बनाये ग्रंथ जसुनाश तक १ रामचरित्र २ पदवीप्रकाश ३ महोत्सवप्रकास ४ ये उत्तम हैं हम लोग इनग्रंथो कोदेख चुके हैं और इनके वि द्यार्थी अलवर में उमराव हैं किसनपुर के ठाकुर चहुवाण श्रीविड़दसिंह जी इनके छोटे भाई श्रीईश्वरीसिंहजी ये अल वर महाराज श्री मङ्गलसिंह जी के साला हैं और धवाला केठाकुरन रूका श्रीहनुवतसिंहजी आदि बहुत ग्रंथ करता हैं। बूंदी मे चौव श्रीजगन्नाथजी आदि ग्रंथकर्त्ता है। जग दीश्वर श्री राव जो साहब को चिरायु करें।

रामकृष्ण वर्म्मा।

श्रीगणेशाय नमः ।

अथ ललितललाम ।

कवि गुलाबराय कृत ।

ललितकौमुदी टीका सहित ।

दोहा ।

गणप गिरा गिरिजा गिरिश ग्रहपति गुरु गोपाल ।
राम सिया राधा रमा मो पर होहु कृपाल ॥१॥
हाथ जोरि बिनती करौ बार बार सिर नाय ।
टीका ललितललाम को तुमही देहु बनाय ॥२॥

अथ नृपवंशवर्णन – दोहा ।

है बूँदी अमरावती सुर से मनुज तमाम ।
तहँ सुरपति सम होत भो भावसिंह मतिधाम ॥
शर शशि ऋषि भू * वर्ष में भावसिंह भो भूप ।
भयो तिनहि के समय में ललितललाम अनूप ॥
भावसिंह नृप को तनय कृपासिंह बलवान ।
भो हिन्दुन की रीति को रक्षक राम समान॥५॥

---

* १७१५ ।

कवित्त।

एक समैं साह की पठाई फौज आई घोर पट्टन मैं मन्दिर के तोरन कौं है हुश्यार । सो सुनि सुजान कृष्णसिंह जू ने जाय तहाँ लीनौ घेरि केशव को मन्दिर महा उदार ॥ सुकवि गुलाब खग्ग खोलि धार वारिधि मे खलन डुवाय छीनि लीने सव के हथ्यार । मन्दिर वचाय किर्त्ति कीनी महिमण्डल में राखी एह हिन्दुन की पैज बाँधि कै कुमार ॥ ६ ॥

कृष्णसिंह सूनु अनिरुद्धसिंह महावीर दक्षिण मे जाय मरहट्ट जीते तीन वार। चौथे अवरङ्गजेब साह सुत आजम की वेगम को छीनि भये दक्खनी गरूरदार ॥ तव करि कोप खग्ग खोलि खल मौलि तोरि वेगम छिनाय जङ्ग जीति किर्त्ति कै अपार। रज रजपूतन की राखि लाज साहन की ता समै भयो सपूत हाडा हिन्दु को अधार॥७॥

दोहा।

सुत अनिरुद्ध भुवाल को भौ वुधसिंह नरेश ।
तिनकी कीरति जोन्ह सी फैली देश विदेश ॥८॥

छप्पय–एक दिना दरवार साहआलम के जातै ।

मिल्यो यवन मदमत्त वकत कछु अनमिल बातै॥
तीजी डयोढी माँहि खीज तहँ भूपहि आई ।
मारि कटारी राव देह खल खेह मिलाई ॥
पुनिससुतआजमहिमारिरनजयजसश्रोलमकौदियो
तब पञ्चहजारी आप बुध महाराव राजा भयो ॥

दोहा।

भयो भूप बुधसिंह को सुत उम्मेद भुवाल ।
जीति खग्ग बल सबल रिपु लीनौं सुजस विसाल॥

कवित्त।

काहू समै पाय भूलि भूमि बुधसिंह जू की खलन छिनाय रिपु रीति कछु काल की । तब करि कोप पैज रोपि श्री उमेदसिंह खग्ग खर धारन तैं खीन खल खाल की॥ सुकवि गुलाब विचलाय अरि सैन सब भूमि अपनाय द्विज दीन प्रतिपाल की। सग हित हाल करि जाचक निहाल करि नृपता बहाल करि कीरतिविसाल की॥

दोहा।

पुनि अजीत को राज दै धरि मन विमल विचार।
सब तीरथ करि राजऋपि बसत भये केदार॥१२॥

कवित्त ।

प्रवल प्रतापी महिपाल श्रीउमेद-सुत महा-
राव राजा भे अजीतसिंह महाराज। तखत वि
राजे पाय आयु साल अष्टादश तीखे तेग धारि
भये राजन के सिरताज ॥ सुकवि गुलाव कहै
अधिक उपाधिकारि मैना मारि मारि करे अ-
खिल अभूत काज। अकस विचारि रान अरुसी
सँवारि पुनि वय वीस साल माँझ लीनौं जाय
सुरराज ॥ १३ ॥

दोहा ।

सुत अजीत को विष्णु वय मास चार दिन तीन।
किय राजर्षि उमेद नैं नाती तखतनसीन ॥१४॥

कवित्त ।

भयउ अजीत सुत विष्णुसिंह महावीर द्युति
मैं दिवाकर सो कमनीय काम सो। सिन्धु सो
गँभीरता मैं वीरता मैं पारथ सो वचन विशेषता
मैं गुरु मतिधाम सो ॥ सुकवि गुलाव प्रजापा
लन मैं माधव सो वलि सो विनै मैं अरि-नासन
मैं वाम सो। धरमधुरीण धीर वलावन्ध पातसाह
सरल स्वभाव माँहि राव राजा राम सो ॥ १५ ॥

दोहा।

विष्णुसिंह के सुत भयो राम धर्म्म-अवतार ।
ज्यौं दशरथ के राम भौ सुमति जगत हितकार॥

कवित्त।

सोभा मैं निसाकर सो तेज मैं दिवाकर सो दान मैं उमावर सो कीरति को धाम है। रूप मै मनोज सो अलिप्त मैं सरोज सो है भोज काव्य मौज माँहि चोजही सौं काम है॥ सुकवि गुलाव कहै ग्यान मैं जनक सो है वनक सरीर को सुरेस सो तमाम है ॥ वैरिन मैं विप्रराम नीति माँहि जदुराम बुंदीनाथ राजा राम शील माँहि राम है॥ १७॥

पूरन गँभीर धीर वहुवाहिनी को पति धा रत रतन महा रावत प्रमान है। लखि द्विजराज करै हरष अपार मन पानिप विपुल अति दानी छमावान है॥ सुकवि गुलाव शरनागत अभयकारी हरि उरधारी उपकारीह्न महान है। वला वन्त शैल पतसाह कवि कौल भानु रामसिंह भूतलेन्द्र सागर समान है॥ १८॥

दोहा।

रामसिंह नृप कै प्रथम त्रुग सुत भये सुजान ।
भीमसिंह बलधर्म अरु रङ्घनाथ छवि-यान ॥१६॥

कवित्त।

दीनदयाधारी देखि विक्रम विचार्यो सब हर अनुमान्यौं लखि वीरता की वार मैं। धीरता निहारि राम जान्यौं कविराजन नैं सुरतरु ठान्यौ दीह दान निरधार मै ॥ सुकवि गुलाब आब देखि देखि आनन की मदन बखान्यौ मनमोहन विचार मै। बल बिसतार माँहि मान्यौ भीम भीमसिंह पारथ पिछान्यौ धनु बान के प्रचार मै॥२०॥

बालक सुरेश को सो पालक अशेषन को टालक दुनी दुख को छविधाम काम सो। तेज मैं दिनेश सो गणेश सो विचार माँहि वचन विशेपता मैं गुरु अभिराम सो॥ सुकवि गुलाब कनकाचल सो धीरता मैं सिन्धु सो गँभीरता मैं वीरता मैं वाम सो। श्याम सो सुजान खलहरन कलान माँहि पितु अनुशासन मै रङ्घनाथ राम सो॥ २१॥

दोहा ।

इन जुग राजकुमार नै पितु आगैही जाय ।
वास कस्यो सुरलोक मैं अनुचित समय बसाय ॥
ता पाछै नृप राम कै उपजे चार कुमार ।
नखशिख शुभलक्षण भरे छत्र धर्म अवतार॥२३॥

कवित्त ।

शील सुधो अधिक उदार रघुवीरसिंह परम दयालु गुणधाम काम अवतार । रङ्गराजसिंह मतिसागर उदार अति द्विजहितकार खलटारक अरि विदार ॥ सुकवि गुलाब रघराजसिंह महा धीर सरल सुशील प्रजापाल दीनदुखहार । रघु वरसिंह सिंह सोहै रन-कानन को दुज्जन कौं दायक प्रवाह खर खग्गधार ॥२४॥

करन समान मन पारथ सो पूरो पन काम सो अनूप तन पृथु सो पृथी को वर। वलि सो विचार उपकार-कर विक्रम सो हरि सो छ्रुस्यार कार हर सो दया को घर ॥ सुकवि गुलाब रण-धीर रघुवीरसिंह सिन्धु सो गँभीर द्विज दीन उर पीर-हर । परम प्रतापी अरि-तापी निज छत्र-थापी दुज्जन उथापी जुवराज सुतराम कर॥२५॥

जौलौ या मही मैं शशि सूर को प्रकाश होय जौलौं ईस सीस पै प्रवाह गङ्गपानी को। जौलौ नभमण्डल मैं थान रहै तारन को जौलौं जग वीच है विचार वर वानी को ॥ सुकवि गुलाव जौलौ शेष पै धरातल है जौलौ है पुरान मैं निसान वलि ज्ञानी को। जौलौ करै परम अनन्द चव नन्दन रु तौलौ होहु अचल प्रताप राम दानी को ॥ २६ ॥

दोहा।

सभा माँहि इक दिवस यह दियो हुक्म न्रपराम।
कियो ग्रन्थ मतिराम नै नीको ललितललाम ॥
पै टीका काहु न करी जो अव टीका होय ।
कठिन अर्थ आशयहु मै तो समुझै सव कोय ॥
कोविद कवि गुरु शुक्र से जद्यपि हुते अपार ।
तदपि अल्पमति मै धरी आज्ञा सीस उदार ॥
सम्वत्* शशि दिशनिधि अवनि क्वारमास रविवार।
कृष्णपक्ष दशमी विषै भौ टीका अवतार ॥३०॥

अथ कविवंश वर्णन—कवित्त।

वन्दीवश माँहि भये प्रगट अनन्तराम पट्टन

* १६४१।

मैं तौरनाथ माने मुख्य मन्त्रकार । जैपुरादि राजनहू ताजीमादि मानजुत दीनें दान तिनही कौं योग्य जानि केही वार ॥ तिहिँ सुत सेढूराम आये अलवर माँझ सुकवि वखानि कियो वखतेश सतकार । कवि महताव भये तासु पुत्र शीलसिंधु तिनकै गुलाव भयो ग्रन्थ को प्रकासकार ॥३१॥

वालकपने सैं मन खींचि जग कामन सौं सुरनर वानी विषै कीनो श्रम को समाज। अलवरनाथ करी प्रीति औ प्रतीति अति तौहू सीख लेय कियो देशाटनही को साज ॥ प्रथम करौलीनाथ दीनौं सनमान अति दिन दश वसि बूँदी मारग लियो दराज । तहँ हित ठानि सनमानि रुजगार करि महाराव राजाराम राखि लियो महाराज ॥ ३२ ॥ दोहा ।

वहुरि खास पोसाकहू सालगिरह की वेस ।
विन धारन कीनी हरषि दीनी राम नरेश॥३३॥
सहजादे साहिव कियो मेल आगरे चार ।
वहुरि लाठ साहिव कियो दिल्ली मधि दरवार ॥
राम शिविर अँगरेज नृप तहँ आये जिहिँ वार ।

तब हौंह हाजिर रह्यो आदर सहित उदार॥३५॥
पुनि सम्वत चौतीस में दियो जलोटो याम ।
अरु अटोक डोढी करी पैठत बखत तमाम॥५६॥
पुनि दीनी ताजीम अरु ग्राम दूसरो दीन ।
साखति जुत गज एक दिन दीने राम प्रवीन॥३७॥
देलवाड मो साथ अरु सादर गज चढवाय ।
खिलत सहित नृपराम नै दियो सदन पहुँचाय॥
अब करि पञ्च मुसाहिब रु सामिल राखि सलाह।
दियो प्रकृति अधिकार मुहि रामसिंह नरनाह ॥
श्रीजुत जसजुत विजयजुत जुत मन वाँछित काम।
राजौ महि सिर शेष लौ सुतन सहित नृपराम॥

अथ ललितकौमुदी टीका सहित ललितललाम ।

दोहा ।

सुखद साधुगन को सदा गजमुख दानि उदार।
सेवनीय सब जगत को जग मा बाप कुमार॥४१॥

यह मङ्गलाचरण है मङ्गलाचरण वह कहावै जो ग्रन्थ के आदि में विघ्ननिवारण के अर्थ इष्टदेव कों मनाइये सो तीन प्रकार को है जामें वस्तु को जतायबो होय सो वस्तु निर्देशात्मक १ जामें आशीर्वाद होय सो आशीर्वादात्मक २ जामें नमस्कार होय सो नमस्कारात्मक ३ । यहा केवल व स्तुति निर्देश है जय नम वाचक शब्द नहीं यातें यह वस्तु निर्देशात्मक मङ्गलाचरण है। साधुन के गन कों सदा सुख दायक है गज क मुख सो मुख है दानी है उदार दक्षिण है अथवा बडो दानी है सब जगत के सेवन करिवे योग्य है, जगत् के मा बाप जो पार्वती शिव तिनको कुमार है । उदारो दातृमहतोर्दक्षिणेऽचाभिधेयवत् । इति मेदिनी ।

दोहा ।

कवि मतिराम गणेश कों सुमिरत सुख सरसात ।
श्रौंन पौन लागें विघन तूल तूल उडि जात॥४२॥

मतिराम कवि कहै है गणेश कों सुमिरतें सुख सरसावत है कानन की पवन लगतेंही विघ्न समूहन को तूल समाव

अर्थात् फैलाव सोई भयो तूल रुई सो उडि जात है, अथवा विघ्न है सो रुई के तुल्य उडि जात है यहां सुमिरत सुख सरसात में हेतु, विघ्न में रूपक, तूल तून में लमकालङ्कार है।

दोहा।

मदरसमत्तमिलिन्दगनगानमुदित गणनाथ ।
सुमिरत कविमतिराम कौं ऋद्धिसिद्धि निधि हाथ॥

मद जल करिके मस्त जो भ्रमरन के समूह तिनके गुञ्जार करिके प्रसन्न जो गणेश तिनकौं सुमिरतें मतिराम कवि कौं सम्पूर्ण ऋद्धि आठौं सिद्धि नवनिधि हाथ में है । हेतु अलङ्कार है ॥ ४३ ॥

सवैया ।

पारवती के पयोधर के पय ज्योति जगी अति उज्जल जो है । ईश के सीस शशी सुरसिन्धु अमीजुत पावन पाप वियो है ॥ सिद्धिवधू कुच मण्डन को मतिराम मनो मुकता मन मोहै । साधुन को सु वसी करतार करीमुख के कर शीकर सोहै ॥ ४४ ॥

साधुन कौं भली प्रकार बस करिबे वारो और तारिबे वारो करीमुख जो गणेश ताके सुड पै सीकर जो जलकन सोहै है सो कैसो है पार्वती के कुच के ऊपर दुग्ध बिन्दु है जाकी जोति जगी है फेरि जलकन कैसो है, मस्तक पै

मानो चन्द्रमा है फेरि महादेव के मस्तक पै सुरसिंधु गंगा हैं। शशि कैसो हैं अमृत सहित है। गंगा कैसी हैं पवित्र है और पापन कों दूर करे हैं। मतिराम कहे हैं सिद्धि हैं साई भई स्त्री ताके कुच के मंडन को मानो मुक्ता है मन कों मोहे है। उक्तास्पदावस्तूत्प्रेक्षालंकार है ॥ ४४ ॥

छप्पय ।

मुकुट मोर पर पुञ्ज मञ्जु सुरधनुष विराजत ।
पीतवसन छिन२ नवीन छिनछवि छवि छाजत ॥
वचन मधुर गंभीर घोष वरषत प्रमोदवर ।
वृन्दावन वर बाल-बेलिवृन्दनविलासकर ॥
मतिराम सकल सन्तापहर भावसिंह भूपाल-मन ।
गोविन्द नदनन्दन सुखद घनसुन्दर आनदघन॥

महाराज भावसिंहजी के आनन्दघन नामक सुन्दर इष्टदेव ठाकुर हैं जिनको अब भी पूजा होती है तिनको घन समान रूपक करिके वर्णन है, सो कैसे हैं गोविन्द हैं नँद के नन्दन हैं सुख के दाता हैं । मोर की पाँखन के समूह को सुन्दर मुकुट है सो इन्द्र को धनुष विराजे है छिन १ में नवीन पीतवसन है सो छिनछबि जो बीजुरी ताकी छवि छाजे है, मधुर गम्भीर वचन हैं सो घोष नाम गर्जना है सुन्दर प्रमोद है सो वर्षा है वृन्दाबन की सुन्दर वनिता हैं सोई भई बेलिन को समूह तिनसे विलास को

करिवेवारो है, मतिराम कवि कहै है भावसिंह राजा के मन के सम्पूर्ण सन्तापन कों हरिबेवारो है सम अभेदरूप कालङ्कार है ॥ ४५ ॥ दोहा।

जगत-विदित बूँदीनगर सुख सम्पत्ति को धाम।
कलिजुगहू में सत्यजुग तहाँ करत विश्राम ॥

बूदीनगर है सो जगत् में प्रगट है सम्पूर्ण सम्पदान को घर है। जहां कलिजुग में भी सत्यजुग आराम करै है॥४६॥

पढत सुनत मन दै निगम आगम स्मृति पुरान।
गीत कवित्त कलान के जहँ सब लोग सुजान ॥

जहां बूदी में मन लगाय के लोग निगम आगम स्मृति पुराण पढते सुनते हैं गीत कवित्त कलान मे सब लोग सुजान है ॥ ४७ ॥

सरद-वारिधर से लसत अमल धौरहर धौल ।
चित्रनि-चित्रित सिखर जहँ इन्द्रधनुष से नौल॥

सरदऋतु के मेघ से निर्म्मल धौले महल लसत हैं जहँ बूदी में तस्वीरन करिकै चित्रित सिखर है सो नवीन इन्द्र धनुष से है। पूर्णोपमालङ्कार है ॥ ४८ ॥

महलनि ऊपर जहँ बने काञ्चनकलस अनूप ।
निज प्रभानि सौं करत हैं गगन पीत अनुरूप ॥

जहँ बूदी में महलनि के ऊपर कञ्चन के सुन्दर कलस बने हैं अपनी कान्ति सौं आकास कौं पीत रङ्ग करत हैं ॥

जहँ विमान वनितान के श्रमजल हरत अनूप ।
सौध-पताकनि के वसन होइ विजन अनुरूप ॥

जहा देवाङ्गनान के श्रमजल कों भली प्रकार हरें हैं महलनि को पताकान के वस्त्र पङ्खा के म्वाफिक हो कर ॥

वीनावेनु निनाद मृग मोहि अचल करि चन्द ।
सौध-सिखर ऊपर जहाँ दम्पति करत अनन्द ॥

वीना और बेन के शब्द सें मृगन कों मोहि कैं चन्द्रमा कों अचल करिकें जहा बूंदी मैं दम्पति महलनि के शिखर के ऊपर आनन्द करते हैं। अर्थात् चन्द्रमा के रथ के मृग वाहन हैं उनके मोहे तें रथ रुकत है॥ ५१ ॥

जहाँ छहों ऋतु मे मधुर सुनि मृदङ्ग मृदु सोर।
सङ्ग ललित ललनानि के नृत्य करत गृह-मोर॥

बूंदी मैं छह ऋतु मैं मीठे कोमल पखावजन के शब्द सुनि कै सुन्दर स्त्रियन के साथ पाले मयूर नाच करते हैं। भ्रमालङ्कार है। मोरन कों मृदङ्गरव मैं घनरव को भ्रम है॥

मरकत लाल प्रवाल मनि मुकुत हीर अवदात।
ललित राजपथ मैं जहाँ जरकस वसन बिकात॥

पन्ना लाल मूंगा मणि मोती हीरा उज्ज्वल बूंदी मैं सुन्दर बाजार मैं जरी के वस्त्र बिकते हैं॥ ५२ ॥

मद जल वरषत भूमि के जलधर सम मातङ्ग ।
विना परनि के खग जहाँ सुन्दर तरल तुरङ्ग ॥

पृथ्वी * मेघ समान हाथी है सो मद्धी के पानी कौं बर्षते है, बूंदी में सुन्दर चञ्चल घोड़े है सो बिना पाँखन के पक्षी हैं। न्यून अभेदरूपकालङ्कार है ॥ ५४ ॥

सदा प्रफुल्लित फलित जहँ द्रुम वेलिन के बाग।
अलिकोकिलकलधुनिसुनतलहतश्रवनअनुराग॥

बूंदी में वृक्ष बेलडीन के बाग है सो सदा फूलें फलैं हैं और कोकिलन के सुन्दर शब्द सुनि के कान अनुराग कौं प्राप्त होते है ॥ ५५ ॥

कमल कुमुद कुवलयन के परिमल मधुर पराग।
सुरभि-सलिल-पूरे जहाँ बापी कूप तड़ाग॥५६॥

कमल कुमुद कुवलयन के सुगन्ध और मीठे पराग हैं सुन्दर जल के पूरे बूंदी में बावडी कुआ तालाब हैं ॥ ५६ ॥

शुक चकोर चातक चुहिल कोक मत्त कलहंस।
जहँ तरवर सरवरन के लसत ललित अवतंस॥

सुवा चकोर पपीहा चुहिल करते हैं चकवा हंस मस्त हैं बूंदी में तालाबन के वृक्ष सुन्दरन * शिरोमणि लसते हैं।

अक्षयवट बालक-उदर ज्यौं संसार समाय।
सकलजगत-पानिप रह्यो बूँदी में ठहराय॥५८॥

प्रलयकाल में अक्षयवट में नारायण बाल रूप धरि कें रहे हैं ताके पेट में जैसे संसार समावे है तैसे सम्पूर्ण जगत् को पानी अर्थात् तेज बूंदी में ठहरि रह्यो है, दृष्टान्तालङ्कार

तामैं प्रतिबिम्बित मनौं सम्पतिजुत सुरलोक ।
घर घर नर नारी लसैं दिव्य रूप कैं ओक॥५८॥

ता पानिप में मानौं सम्पति सहित देवलोक झलकै है। घर घर के नर नारी है सो दिव्यरूप के लसैं हैं और ओक स्थान भी दिव्यरूप के लसैं है अर्थात् मनुष मकान सुरलोक कैसे है ॥ ५८ ॥

चन्द्रमुखिन के भौंहजुग कुटिल कठोर उरोज ।
वाननि सौं मन कौं जहाँ मारत एक मनोज ॥

स्त्रियन की भौंह दो यही कुटिल हैं कठोर कुचही हैं बूंदी में एक मनोजही वाननि सौं मन कौं मारै है अर्थात् कुटिल कठोर मारक कोइ नहीं है। परिसंख्यालङ्कार॥६०॥

जहाँ चित्त-चोरी करै मधुर-वदन-मुसकानि ।
रूप ठगत है दृगन कौं और न दूजो जानि॥६१॥

बूंदी में मधुर मुख मुसकानि है सो चित्त को चोरी करै है नैननि कौं रूप है सो ठगै है और दूसरो नहीं जानौं अर्थात् चोर ठग नहीं है। परिसंख्यालङ्कार ॥ ६१ ॥

ता नगरी को प्रभु वडौ हाडा सुरजनराव ।
रच्यो एक सब गुननि को वर विरञ्चि समुदाव॥

ता नगरी को स्वामी समर्थ हाडो सुरजनराव होत भयो सो मानों विधि नें सब गुनन को सुन्दर एक समुदाव रच्यो है ॥ ६० ॥

छप्पय ।

एक धर्म्म गृह खम्भ जम्भारिपु-रूप अवनि पर ।
एक बुद्धि गम्भीर धीर वीराधि वीरवर ॥
एक ओज अवतार सकल सरनागतरच्छक ।
एक जासु करवाल निखिल खलकुल कहँ तच्छक॥
मतिरामएकदातानिमनिजगजसअमलप्रगट्टियउ।
चहुवानवंश-अवतंस इमि एक राव सुरजन भयउ॥

धर्म्म घर को खंभ एक भयो, पृथ्वी पै इन्द्र समान एक भयो, बुद्धिमान गम्भीर धीरवान बीरन कों अधिबीरन को पति एक भयो, प्रताप को अवतार और सम्पूर्ण सरनागतन को रच्छक एक भयो, जाको खड्ग सम्पूर्ण दुष्टन के समूह कों सर्प एक भयो, मतिराम कहे है दातान में मणि एक भयो जगत् में निर्म्मल जस प्रगट कियो चहुवानवंश को शिरोमणि या प्रकार एक सुरजनराव भयो ॥ ३१ ॥

मनहरन ।

दान समै गनै धन हन सो कुबेरहू को तनक सुमेरु महादानि ऊँचे मन को । पृथु सों प्रथित पृथ्वी प्रबल प्रतापवन्त प्रभु पुरहूत सों प्रगट पूरे पन को ॥ मतिराम कहै वैरी वारन विदारिवे कों रूप धरें राजे मृगराज रनवन को।

दुरजनवधू-उरजन को सिँगारहर ऐसो जस गावैं
सुरजन सुरजन को ॥ ६४ ॥

दान समय मैं कुबेर के धन कों भी तृन सम गिनै है, सुमेरु कों भी छोटो गिनैहै ऊँचा मन को महादानी है, पृथ्वी पै पृथु राजा सो थित है प्रबल प्रतापवन्त है इन्द्र सो प्रभु है प्रगटही पूरेपन को है। मतिराम कहै है शत्रु है सोही भये हाथी तिनके बिदारिबे कों मानौ रूप धरें हुते रनरूपी बन को सिंह राजै है बैरीन की स्त्रियन के कुचन के सिँगार कों दूर करत है। अर्थात् बैरीन कों मारि गेरै तब बैरी वधू हार उतारि गेरै देव औ मनुष्य सुरजनसिंह को ऐसो जस गावैं हैं। बैरो वारनरूपक, सुरजन सुरजन जमक॥६४॥

दोहा।

भयो भोज सुरजन-तनै अतुल ओज की खानि।
हिन्दुन की राखी मरम निज मूँछन में आनि॥

सुरजनसिंह को सुत भोज भयो सो अप्रमाण प्रताप की खानि भयो हिन्दुन की लाज अपनी मूछन मैं लाय राखी अर्थात् बादशाह की माता मरी तब सब राजान की मूछ डाढी मुड़ाइबे को हुक्म भयो तासों सब राजान ने मूछ डाढी मुडवाई, भोज ने नही मुडवाई ॥ ६५ ॥

मनहरन।

जेते ऐंडदार दरबार-सिरदार सब ऊपर प्रताप दिल्लीपति को अभङ्ग भो । मतिराम कहै

करवार के कसैया केते गाडर से मूँडे जग हाँसी
को प्रसङ्ग भौ ॥ सुरजन-सुत रज-लाज-रखवारो
एक भोजही तैं साहि को हुकम-पग पङ्ग भौ ।
मूँछनि सौ राव मुख लाल रंग देखि मुख औ-
रनि को मूँछनि बिनाही स्याम रंग भौ ॥ ६६ ॥

जितने करवाले साही की सभा के सर्दार थे उन सब के ऊपर दिल्लीनाथ को प्रताप अभङ्ग भयो अर्थात् कोइ पै मूछ मुडावा को हुक्म मेट्यो नहीं गयो। मतिराम कहै है कितनेही खडग बाँधनेवाले भेड की तरह मूडे जगत् में हाँसी को जिकर हुये सुरजनसिंह को पुत्र रजपूती की लाज को रखनेवाला एक भोजही से पातसाह को हुक्म पग, पाँगलो भयो अर्थात् भोज ने हुक्म नहीं मान्यौं, मूछनि सहित राव को मुख लालरङ्ग को देखिकै औरनि को मुख मूछनि बिनाही श्यामरङ्ग भयो। गाडर से मूडे पूर्णोपमा ६६

दोहा।

वंश-वारिनिधि रतन भौ रतन भोज को नन्द ।
साहनि सौं रन रंग मै जीत्यौ वखतविलन्द ॥

वंश है सोही भयो समुद्र तामें रत्न भयो भोज को सुत, रत्नसिंह है सो पातसाहन सौं संग्राम के रङ्ग में बखतबिलन्द जीत्यौ। रूपक ॥ ७० ॥

मनहरन ।

बिगर हथ्यारन हजूर आइबे को हुकम मान्यौं नहि दिल्लीपति आलमपनाह को । मतिराम कहै दल दक्खिनी समेत साहिजहाँ सो हटायो बीर बारिधि उछाह को ॥ भोज को सपूत भयो फौज को सिँगार अति ओज को दिनेश दुरजन दिलदाह को । रावरतनेश कर ओट राख्यो करि वार करिवार ओट राख्यौ कोट पातसाह को॥६८

हथियारन बिना दर्बार में आइबे को हुकम नहीं मान्यौं दिल्लीनाथ जगत के रक्षक को, अर्थात् पातसाह ने हुकम दियो हो कि सब राना बिना शस्त्र दर्बार में आया करैं सो रत्नेश ने नहीं मान्यो । मतिराम कहै है दक्षिण की फौज समेत शाहजहाँ हटा दियो बीर और उछाह को समुद्र भोज को सपूत है सो फौज को सिंगार भयो, प्रताप को सूरज, बैरीन के मन को जराइबेवारो रावरतनेश ने हाथ में खड्ग झेलि राख्यौ और वार करिकै पातसाह को कोट आड़ में राख्यौ अर्थात् खड्ग चलाय के कोट बचायो । करि वार करिवार जमक ॥ ६८ ॥

दोहा ।

भयो राव रतनेश को गोपीनाथ कुमार ।
सुजस अपार बखानिये दान कृपान उदार॥६९॥

राव रत्नेश के कुमार गोपीनाथ भयो जाको सुजस अपार बखानिये है, दान कृपान में उदार भयो ॥ ६८ ॥

मनहरन ।

सगर मैं सिंह-सम कीने करिवर सुरपुर के निवासी सूर शत्रुन के साथ के। कहै मतिराम गज गाँव दै निवाजि कीनें सकल निहाल जे गवैया गुनगाथ के॥ राव रतनेश के कुमार के सुजस फैलि रहे पुहमी मैं ज्यों प्रवाह गंग पाथ के। रीझ खीज मौज फौज दान औ कृपान ऊँचे जगत बखानैं दोऊ हाथ गोपीनाथ के ॥ ७० ॥

संग्राम में सिंहसमान गोपीनाथ ने, शत्रुन के साथ के सूर जे हैं तिन्हें भये हाथी तिनकों देवलोक के वासी किये अर्थात् मारि नांखे मतिराम कहे हैं निवाजि कै गज ग्राम दे करिकै गुन कथान के गानेवाले सब निहाल किये। राव रत्नेश के सुत के सुजस हैं सो पुहुमी में फैलि रहे हैं, जैसे गङ्गा के जल के बहाव। रीझ में खीज में मौज में फौज में दान में और कृपान में जगत् है सो गोपीनाथ के दोनों हाथ ऊँचे बखाने है। लुप्तोपमारूपक ॥ ७० ॥

दोहा।

गोपीनाथ तनै भयो पानिप-पारावार ।
शत्रुशाल छितिपालमनि छत्रधर्म्म अवतार ॥७१॥

गोपीनाथ के सुत शत्रुशाल भयो सो कवि को समुद्र भयो पृथ्वीपालकन में मनि औ छत्र धर्म को अवतार भयो॥

मनहरन।

पण्डित सुकवि भाट चारन को गुन समुझैया सावधान सदा सुजस विधान मैं। कवि मतिराम जाको तेजपुञ्ज दिनकर दुज्जन को दाहकार दसहूँ दिसान मैं ॥ गोपीनाथ-नन्द चित चाही बकसीसनि सौं जाचक धनेश कीनें सकल जहान मैं। ज्ञान मैं दिवान शत्रुशाल सुरगुरु साहिबी मैं सुरपति सुर-तरवर दान मैं ॥ ७२ ॥

पंडित सुकवि भाटचारन इनके गुन को समुझैया सदा सुजस की बिधि मैं सावधान। मतिराम कहै है जाको प्रताप गन सूर्य है सो दशी दिशान मैं दुर्जन कों जराइबे वारो है, गोपीनाथ के नन्द नें चित्त को चाही बकसीसन सौं सपूर्ण जगत के जाचक कुबर किये, दिवान शत्रुशाल है सो ज्ञान में बृहस्पति है प्रभुता मै इन्द्र है दान में कल्पवृक्ष है। रूपक अत्युक्ति उल्लेखालङ्कार है ॥ ७१ ॥

सवैया।

औरंग दारा जुरे दोउ जग भये भट युद्ध विनोद बिलासी। मारु बजे मतिराम बखानैं भई अति अस्त्रनि की बरखा सी। नाथ तनै तिहिँ ठौर

भिर्यो जिय जानि कै छत्रिन कौं रन कासी ॥
सीस भयो हर हार सुमेरु छता भयो आपु सुमेरु
को वासी ॥ ७३ ॥

औरंगजेब और दारा साह दोनों जग में जुरे भट हैं सो युद्ध के विनोद के विनाशी भये मारू राग बजे है, मतिराम बखानै है अस्त्रनि को अति बर्षा सी भई तिहि ठौर में गोपीनाथ को सुत भिर्यो जीव में छत्रीन कों रन है सो कासी जानि कै अर्थात मुक्तिदाता समुझि कै शत्रुशाल को सीस है सो महादेव के हार को सुमेर भयो अर्थात मुंडमाल को सुमेर और राजा आपु सुमेर को बासी भयो अर्थात देवता भयो ॥ ७३ ॥

दोहा।

शत्रुशाल सुत सत्य मैं भावसिंह भूपाल ।
एक जगत मै जगत है सब हिंदुन की ढाल ॥७४॥

शत्रु शाल को सुत भावसिंह भूपाल है सो सत्यही जगत में सब हिंदून की एक ढाल जगमगावै है ॥ ७४ ॥

छप्पै।

तिमिरतुलित तुरकान प्रवल दिशि विदिशि प्रगट्टत । चलत पथ पथीन धरम श्रुति करम निघट्टत । लखत न लोचन लोक अवनिपति मोह नींद रम । धरनि वलय सब कारत जानि कलि-

काल आप बस। मतिराम तेज अति जगमगत भावसिंह भूपाल महँ। दिनकर दिवान दिन दिन उदित करत सुदिन सब जगत कहँ ॥ ७५ ॥

अन्धकार तुल्य प्रबल मुसलमानो दिशा विदिशान मै प्रगटतें धर्म श्रुति कर्मरूप पन्थ के मिटते धर्मात्मा पथिकन के न चलते भूमिपाल राजा है सो अज्ञान रूप नींद के रस मैं लोक कौं नैनन सौं नहीं देखते कलिकाल मैं सब पृथ्वी मंडल कौं अपने बस करत जानि करिकै। मतिराम कहै है तेज अत्यन्त जगमगावे है, भावसिंह भूपाल मैं दिनकर समान दिवान है सो नित्यप्रति अपनौं उदय करतो भयो सब जगत कौं सुन्दर दिन करै है। उपमालङ्कार है ॥

मनहरन।

परम प्रबीन धीर धरमधुरीन दीनबन्धु सदा जाकी परमेसुर मैं मति है। दुज्जन बिहाल करि जाचक निहाल करि जगत मैं कीरति जगाई जोति अति है। राव शत्रुशाल को सपूत पूत भाव सिंह मतिराम कहै जाहिँ साहिबी फबति है। जानपति दानपति हाडा हिन्दुवानपति दिल्ली पति-दलपति बलाबन्धपति है ॥ ७६ ॥

अति चतुर है, धीर है धर्म की धूर कौं धारण करिबे वारो है, दीनन को सहायक है जाकी सदा नारायण मै

बुद्धि है, अर्थात् परमेश्वर में प्रीति है दुर्जनन कों बिगारिबे वारो है, जाचकन कों निहाल करिबेवारा है, जगत में जस की अति जोति जगाई है। मतिराम कहै है राव शत्रुशाल को सपूत पूत भावसिंह है, ताकों साहिबी सोहै है, सुजान को पति है, दान को पति है, हाडान को पति है, दिल्लीनाथकी फौजको पति है, बलाबन्ध पर्वतका पति है।

सवैया॥

मौजन सो मतिराम कहै कवि लोगन को जिमि भोज बढावै। रोस किये रनमण्डल मैं खल-देह की खालनि भूमि मढावै॥ रीझहु खीज मैं राव सता-सुत कीरति मैं अति जोति चढावै। भाऊ दिवान गुरू सब भूपर भूपन दान कृपान पढावै॥ ७६॥

मतिराम कहै है मौजन सों कवि लोगन कों भोज की तरह बढावै है अर्थात भोजवत्सत्कार बकसीस करै है रोस करने पै संग्राम मंडल में दुष्टन की देह की खालनि सों पृथ्वी कों मढावै है अर्थात मारि कै जमीन पै पटकि दे है, रीझ में भी खीझ में भी राव शत्रुशाल को सुत है सो कीरति मैं अत्यन्त जोति चढावै है। दिवान भावसिंह है सो सब धरा पै गुरु है राजान कों दान कृपान पढावै है अर्थात् वे सब इनकों देखि कै दान वीरता करै हैं॥७७॥

दोहा ।

भावसिंह की रीझ को कविता भूषन-धाम ।
ग्रन्थ सुकवि मतिराम यह कीनो ललितललाम॥

भावसिंह की रीझ के वास्ते कविता अलंकारन की घर उत्तम कवि मतिराम ने यह ललितललाम ग्रन्थ कियो॥

अथ अलंकार लक्षण दोहा ।

रस अर्थन तें भिन्न जो शब्द अर्थ के माहिं ।
चमत्कार भूषन सरिस भूषन मानत ताहि ॥१॥

अथ अलंकारांगकथन दोहा ।

मुख चपादि उपमेय हैं शशि झपादि उपमान ।
समानार्थ वाचक लखौ धर्म एक गुन जान ॥२॥

चौपाई ।

है उपमेय विषय अरु वर्ण्य । उपमानतु विषयी स अवर्ण्य ॥ प्रासंगिक कह प्रस्तुत जानि । अप्रसंग अप्रस्तुत मानि ॥ भेद्य विशेष्य विशेषण भेदक । बहु व्यापक सामान्य अखेदक ॥ अल्प व्यापक आहि विशेष । भूषण भाषक नाम अशेष॥

दोहा ।

जाको वर्नन कीजिये सो उपमेय प्रमान ।
जाकी समता दीजिये ताहि कहत उपमान ॥

जिसको वर्नन करिये सो उपमेय मानते हैं जिनकी बराबरी दीजिये तिसकों उपमान कहते हैं ॥ ७८ ॥

उपमालंकार लक्षण दोहा।

जहां बनिये दुहुनि की सम छवि को उल्लास। पंडित कवि मतिराम तहँ उपमा कहत प्रकास ॥

जहां उपमेय उपमान को समान छवि को उल्लास ब निये मतिराम कहै है तहां प्रगटही पंडित कवि उपमा अलंकार कहते हैं

उदाहरन मनोहर।

एक रजपूत है दिवान भावसिंह जाको जग जुरैं चौगुनो चढत चित चाव मैं। शत्रुशाल नंद को सुजस मतिराम यातें फैलत महीपति समाज समुदाव में ॥ दिल्ली के दिनेश के प्रचंड तेज आंच लागे पानिप रह्यो न काहू भूपति तलाव मैं। ऐसे सब खलक तें सकल मकिलि रही राव मै सरस जैसें सलिल दरयाव मैं ॥ ८१ ॥

एक दिवान भावसिंह रजपूत है जाको चित्त जग जुरे पै चौगुनें चाव मैं चढे है मतिराम कहै है याही तें शत्रुशाल के नन्द को सुजस है सो राजान के समाज के समूह में फैले है। दिल्ली के सूर्य के प्रचंड तेज की आंच ल गने सें कोइ राजा रूप तलाव मैं पानिप नहीं रह्यो अर्थात्

सब राजा पातसाह से दबि गये, सब जगत सें संपूर्ण लाज सिमटि कै राव भावसिंह में ऐसें रही जैसे समुद्र में पानी अर्थात पातसाह के तेज सें सबकी मर्जाद राव में रही जैसें ग्रीषम मे समुद्र में पानी रहै है इहां राव उपमेय समुद्र उपमान को समान बर्नन है यातें उपमा है ॥ ८१ ॥

सवैया ।

प्रानपियारो मिल्यो सपनें मै परी जब नैसुक नीद निहोरें । कंत को आइवो त्योंही जगाय सखी कहि बैन पियूषनिचोरें ॥ यौं मतिराम भयो हिय मे सुख बाल कैं बालम सौं दृग जोरें । ज्यौं पट मे अतिही चटकीलो चढै रंग तीसरी बार कें बोरें ॥ ८२ ॥

सखी उक्ति सखी सें प्रानप्यारो सपने में मिल्यौ जब निहोरे से नेंक नींद आइ तब तैसेही सखी ने जगाय कै पति क आइवे के बचन अमृत के निचोड सो कह्यो मतिराम कहै है बालम सौं नेंत्र मिलतेंही नायिका के हिये में ऐसें सुख भयो जेसें तीसरी बार के डुबैवे सों वस्त्र में अत्यन्त चटकदार रंग चढै है अर्थात नायिका कौं तीन बार सुख भयो स्वप्न में सखी के कहे सें, देखे से, इहां नायिका उपमेय पट उपमान को समान बर्णन है यातें उपमा है ॥८२॥

पूर्णोपमा लक्षण दोहा ।

वाचक अरु उपमेय जहँ साधारन उपमान ।
पूरन उपमा कहत है तहँ मतिराम सुजान ॥८३॥

जहां वाचक और उपमेय साधारन धर्म उपमान ये च्यारो होय मतिराम कहै है सुजान लोग तहां पूर्णोपमा कहते है ॥ ८३ ॥

उदाहरण मनोहर।

आलस वलित कोरैं काजर-कलित मतिराम वै ललित अति पानिप धरत हैं। सारस सरस सोहैं सलज सहास सगरव सविलास ह्वै मृगनि निदरत हैं॥ वरुनी सघन वक्र तीछन कटाछ वड़े लोचन रसाल उर पीरही करत हैं। गाढे ह्वै गड़े हैं न निसारे निसरत मैन-वान से विसारे न विसारे विसरत हैं॥ ८४ ॥

आलस करिकै वेष्टित कोर है काजरजुक्त है मतिराम कहै है वे अति सुन्दर हैं पानिप कौं धारण करै हैं कमल सौं अधिक सोहै है लाजसहित हास्यसहित गर्वसहित विलाससहित होय के मृगन को निरादर करैं है वरुनी सघन और बाको है, कटाच्छ पैने है, लोचन बडे और रसाल है, सो उर में पीडा कौं करै है मजबूत होय कै गडे है निकासे पै निकसै नही है कामदेव के सर से बिष वारे है भूलने से भूले नहीं जाते हैं। इहां नैन उपमेय कामवान उपमान से वाचक बिसारे धर्म है याते पूर्णोपमा है ॥ ८४ ॥

दोहा।

भौंह कमान कटाच्छ सर समर-भूमि विचलै न।
लाज तजैंहू दृगनि कौ सलज सूर से नैन ॥८५॥

भौंह कमान हैं कटाच्छ सर हैं ठौर समर है तहा सैं डिगै नहीं हैं लाज तजे पै भी नायक नायिका के नैन हैं सो लाज सहित सूर से हैं अर्थात निलज सिपाही भागै हैं सलज भागै नहीं, इहा नैंन उपमेय सूर उपमान, से वाचक ठहरिबो धर्म है यातैं पूर्णोपमा है ॥ ८५ ॥

अथ लुप्तोपमा लच्छण दोहा।

होत एक है तीन कौं इन चारिहु में लोप ।
तहाँ होत लुप्तोपमा बरनत कबि मति-ओप ८६

उपमेय उपमान वाचक धर्म इन चारिन मैं सौं एक को दोय को तीन को लोप होय तहा लुप्तोपमा होय है मति की ओप से कवि वरनत हैं ॥ ८६ ॥

उदाहरण मनोहर।

मत्ता को सपूत भावसिंह भूमिपाल जाकी किर्त्ति जौन्ह करत जगत चित चाव है। कविन को मतिराम कामतरु ऐसो कर अगद को ऐसो रण मैं अडोल पाव है॥ चद कैसो जोति चड-कर कैसो तेज पुरहूत कैसो पुहुमी मैं प्रगट प्र-भाव है। अरजुन पन मुनि मन धनपति धन जग पति तन मृगपति रन राव है॥ ८७॥

शत्रुशाल को सपूत भावसिंह भूमिपाल है जाकी कीर्त्ति चन्द्रिका है सो जगत के चित्त कौं चाव करै है मति

राम कहै है जाको हाथ कविन को कल्पद्रुम सो है जाको पग रन मै अडोल अंगद को सो पग है, चन्द्रमा की सी जोति है षडक्षर सूर्य कैसो तेज है इन्द्र को सो पृथ्वी पै प्रगटही प्रभाव है अर्जुनवत पन है मुनिवत् मन है कुबेर वत धन है जगपति सार्वभौम को सो तन है राव है सो रन में मृगपति सिंह तुल्य है । यहा जोह किति जो०ह उपमान कीर्ति उपमेय चितचाव करिबो धर्म है वाचक नही याते वाचकलुप्ता है कामतरु उपमान कर उपमेय ऐसो वाचक है धर्म नहीं यातें धर्मलुप्ता है। अंगद को ऐसो रन मै अडोल पाव है यामें राव को पग उपमेय, ऐसो वाचक अडोल धर्म है उपमान नहीं यातें उपमानलुप्ता है चन्द कैसी जोति, चन्द उपमान, कैसो वाचक, जोति धर्म है, उपमेय नही याते उपमेयलुप्ता है इत्यादि जानों ॥८७।

मालोपमा लक्षण दोहा

जहाँ एक उपमेय को होत बहुत उपमान ।
तहाँ कहत मालोपमा कवि मतिराम सुजान ८८

जहां एक उपमेय को बहुत उपमान होय तहा मालोपमा कहत है कबिलोग सपूर्ण सुजान जे हैं ते ॥ ८८ ॥

उदाहरण—सवैया ।

तेज-निधाननि में रवि ज्यो छबिवंतन मै विधु ज्यो छबि छाजै । सैलनि में ज्यो सुमेर लसै वर वृच्छनि में कलपद्रुम साजै ॥ देवनि मै

मतिराम कहै मघवा जिमि सोहत सिद्ध-सम जै। राव सतासुत भाऊ दिवान जहान के राजनि मै इमि राजै॥ ८९॥

तेजवानन में सूरज ज्यों छविवानन मै जैसे चन्द्रमा छवि साजै है पवतनि में जैसे सुमेर लसै है सुदर रूखन में जैसें देवतरु राजै है मतिराम कहै है देवन मे जैसें इन्द्र सिद्धि सजें सोहत हैं रावशत्रुशाल को सुत दिवान भाव सिंह है सो जगत के राजान में ऐसें राजै है। इहा एक भावसिंह उपमेय है रविशशि सुमेर सुरतरु इन्द्र ये पाच उपमान हैं यातें मालोपमा है॥ ८९॥

दोहा।

रूपजाल नँदलाल के परि करि बहुरि छुटैं न।
खजरीट मृग मीन से ब्रजवनितन के नैन॥९०॥

नदलाल के रूप के जाल में परि के फेरि छूटै नहीं खंजन हरिन सफरी से ब्रज त्रियन के नैन हैं सो अर्थात जैसे जाल में परि के खजन मृग मीन नहीं छूटैं तैसें कृष्ण के रूप सें ब्रजसुदरीन के नैन नहीं दूर होय। इहा नैन उपमेय है खजन मृग मीन उपमान है यातें मालोपमा है॥

अथ रसनोपमा लक्षण दोहा।

जहाँ प्रथम उपमेय सो होत जात उपमान।
तहां कहत रसनोपमा कविमतिराम सुजान॥

जहां प्रथम उपमेय है सो उपमान हो तो जाय तहं रसनोपमा कहत हैं मतिराम कहे है सुजान जे हैं ते ।८१।

उदाहरण मनोहर।

काहू को न वडो कुल काहू को न वडो भाग देखे वर भूमिपाल सकल जहान के। काहू को न वडो हियो काहू को न वडो हाथ काहू के न वडे हाथी सुकवि वखान के॥ कहे मतिराम सब राजत अनूप गुन राव भावसिंह वलावध सुलतान के। वश सम वखत वखत सम ऊंचो मन मन सम कर कर सम करी दान के ८२

कोई को वडो कुल नहीं है कोई को वडो भाग नही है सब जगत के सुंदर राजा देखे कोई को हियो वडो नही है कोई को हाथ वडो नही है कोई के हाथी वडे नही हैं सुकबिन के वषान योग्य मतिराम कहे हैं सब गुन अनूप राजते हैं राव भावसिंह बलावध्य के पातसाह के वंश समान वखत है वखत समान ऊंचो मन है मन समान ऊंचे कर हैं कर सम दान के हाथी ऊंचे हैं। यहां वश उपमेय है वखत उपमान है यातें रसनोपमा है॥ ८२॥

अनन्वय लक्षण दोहा।

जहाँ एकही वात को उपमेयो उपमान ।
तहाँ अनन्वय कहत हैं कवि मतिराम सुजान॥

जहा एकही बस्तु कों उपमेय उपमान कहे तहा अ-नन्वयालकार कहते है मतिराम कवि कहे है सुजान जे हैं ते ॥ ८३ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सुरजन कैसी सुरजनही मे साहिवी है भोज कैसी भोजमें अकड वड भाग मे । रतनेस कैसी रतनेस मे कहत मतिराम करतूति जीति जाके वारवाल मे ॥ गोपीनाथ कैसी गोपीनाथ मे स-पूती भई शत्रुशाल कैसी रजपूती शत्रुशाल मे । भूमि सव देखी और काहू मे न पेखी छवि भाव सिंह कैसी भावसिंह भूमिपाल में ॥ ८४ ॥

सुरजनसिंह की सो साहिवो सुरजनसिंह मे ही है भोज कोसो अकड वड भागो भोज मेंही ही, मतिराम कहे है रत्नश कैसो करतूति रत्नेश में ही रही जाके खड्ग में जीतिही गोपीनाथ की सी सपूतो गोपीनाथ मे भई शत्रु शाल कोसो रजपूतो शत्रुशाल में भई सव पृथ्वी देखी और कोई में नही परयो, भावसिंह कीसी छवि भावसंह में है इहा सुरजन भोज रत्नसिंह गोपीनाथ शत्रुशाल भावसिंह येही उपमेय येही उपमान है याते अनन्वयालकार है ॥

अथ उपमेयोपमान लक्षण--दोहा ।

जहा होत है परसपर उपमेयो उपमान ।
तहँ उपमेयुपमान कहि वरनत सुकवि सुजान ॥

जहा परस्पर उपमेय उपमान होत है तहा उपमेय उपमान होत है तहा उपमेयुपमान कहु करि सुजान बर्नते है ॥ ८५ ॥

उदाहरण सवैया।

वारण ते वकसै जिनकी ममता न लहै वढि बिध्य समूचो। कित्ति सुधा दिगभित्ति पखारत चन्द-मरीचिन को करि कूचो ॥ राव सता-सुत को मतिराम महीपति क्यौ करि और पहूचो। भूपर भाऊ भुवप्पति को मन सो कर औ कर सो मन ऊचो ॥ ८६ ॥

ते हाथी बकसै हैं जिनकी बराबरी नही पावै वढि करिकै सपूर्ण विंध्याचल कीर्ति सुधा है सो दिशा भी तिनकौं धोवै है चन्द्रमा की किरनन को कूचो बनाय कै अर्थात बहुत फैलि रही है मतिराम कहै है राव शत्रुशाल के सुत कौं और राजा कैसें पहुचें पृथ्वी पै भावसिंह भूपति के मन सो ऊचो हाथ है हाथ सो ऊचो मन है अर्थात् इन सम तृतीय नही यहा मन कौं कर की उपमा लगी करको मन को उपमा लगी यातें उपमानोपमेयालकार है ॥ ८६ ॥

अथ प्रतीप लक्षण दोहा।

जहँ प्रसिद्ध उपवर्न को पलटि कहत उपमेय।
वरनत तहा प्रतीप हैं कवि जन जगत अजेय ॥

जहा प्रसिद्द उपमान कौं पलटि के उपमेय कहै तहा प्रतोप बरनते हैं जगत में प्रतोत कबिजन है ते ॥ ८७ ॥

उदाहरण कबित्त ।

जाकी खीज भूपति भिखारी से निहारे होत भूप से भिखारी जाकी रीझ पै सराह की। नृपति को थप्पन उथप्पन समर्थ शत्रुशालसुत करै कारतूति चित चाह की। कहै मतिराम फैली चहूं चक्क आन चहुवान कुलभानु भावसिंह नरनाह की ॥ राव सम्बिर उमराव कैसे पावै पातसाह सरि पावै वलावध पातसाह की ॥८८॥

जाकी कोप से राजा है सो भिखारी सें होते देखि, भिक्षुक हैं सो राजा से होते देखे जाकी रीझ ऐसो तारीफ की है राजान कौं बनावा बिगाड़वा मैं समर्थ है शत्रुशाल को सुत है सो चितचाहो करतूति करै है मतिराम कहै है चारौं ओर दुहाई फैली है चहुवान कुल के सूरज भावसिंह राजा की राव की बराबरी पातसाह के उमराव कैसें पावैं पातसाह समता पावै वलावध नाम पर्वत के पातसाह की। इहा पातसाह उपमान हो सो उपमेय कियो यातें प्रतीप है अधिक गुनवारो उपमान होय है यातें पातसाह उपमान मान्यौं पतीप नाम उलटा को है सो पाचौ भेदन मैं उलटो चाहिये ॥ ८८ ॥

दूजो प्रतीप लक्षण दोहा।

जहां और उपमान लहि वर्न्य अनादर होय ।
तहौं प्रतीपहि कहत हैं कवि कोविद सब कोय ॥

जहां और उपमेय लहि याको अर्थ उपमान उपमेयता कौं पावै मुख्य उपमेय को अनादर होय तहां भी प्रतीप ही कहते हैं कवि पंडित सब कोई ॥ ९९ ॥

उदाहरण कवित्त।

सागर मैं गहिराई मेरु मैं उचाई रति नायक मैं रूप की निकाई निरधारिये। दान देवतरु मैं सयान सुरगुरु मैं प्रसाद गगनीर मैं सु कैसे कै बिसारिये ॥ तरनि मैं तेज बरनत मतिराम जोति जगमगै जामिनीरमन मैं विचारिये। राव भावसिंह कहा तुमही बड़े हौ जग रावरे कैं गुन और ठौरहू निहारिये ॥ १०० ॥

समुद्र में गम्भीरता है, सुमेरु में उचाई है, कामदेव में रूप की निकाई निश्चय है, सुरतरु मे दान है, प्रसन्नता गंगा के जल में है सो कैसे करि भूलिये। मतिराम कहै है रवि में तेज बरनत है, निशापति में जोति जगमगावै है सो विचारि लीजे। हे राव भावसिंह कहा जगत में तुमही बड़े हौ? आप के गुन और ठौर भी देखिये है, इहां सिंधु सुमेरु काम सुरतरु गुरु गंगाजल रवि शशि आठो

उपमान उपमेय भये मुख्य उपमेय भावसिंह को अनादर भयो यातें द्वितीय प्रतीप है ॥ १०० ॥

तृतीय प्रतीप लक्षण दोहा।

जहाँ अनादर आन को उपावर्न्य उपमेय ।
बरनत तहाँ प्रतीप हैं कोऊ सुकवि अजेय॥१०१॥

जहां उपमेय कौं उपमेय बनि कै आन जो उपमान है ताको अनादर होय तहा भी प्रतीप बरनत हैं कोई अजीत सुकवि ॥ १०१ ॥

उदाहरण दोहा।

जलधर छोडि गुमान कौं हौंही जीवनदानि ।
तोसो ही पानिप भयौ भावसिंह को पानि ॥

हे मेघ इस गरूर कौं छोडि कि मैंही जीवन को दानी हौं, भावसिंह को हाथ तो समान ही पानिप को भयो है इहा पानि उपमेय सें जलधर उपमान को अनादर है।

प्रश्न। प्रतीप नाम उलटा को है उलटो भये प्रतीप अलकार होय पहिले दूसरे भेदन मैं उपमान उपमेय भयो या उलटापन तैं प्रतीप भयो, तीसरा भेद मैं उपमेय उपमेय ही रह्यौ तो प्रतीप कैसे भयो। उत्तर। दूसरे भेद में उपमान से उपमेय को अनादर है यामें उपमेय से उपमानकों अनादर है यह उलटो भयो यातें प्रतीप है ॥ १०२ ॥

चतुर्थ प्रतीप लक्षण दोहा।

जहँा वर्न्य सों और को उपमा वचन न होय ।
ताहू कहत प्रतीप हैं कवि कोविद सब कोय ॥

जहा उपमेय को समान और को उपमान कहवो नहीं होय ताकों भो प्रतीप कहत हैं कवि पडित सब कोइ ।

उदाहरण कवित ।

विक्रम मैं विक्रम धरमसुत धरम मै धुन्धमार धीर मैं धनेस वारों धन मै । मतिराम कहत प्रियव्रत प्रताप मै प्रबल वल पृथु पारथहि वारौ पन मै ॥ शत्रुसाल नन्दरैया राव भावसिंह आजु मही की महीप सब वारौ तेरे तन मै । नल वारौं नैननि मैं बलि वारौ बैननि मै भीम वारौं भुजनि मै करन करन मैं ॥ १०४ ॥

पराक्रम मै विक्रमादित्य कौं वारौं, धर्म में युधिष्ठिर कौं वारौं धीरज में धुन्धमार कों वारौं, धन मैं कुबेर कौं वारौं । मतिराम कहत है प्रबलप्रताप में प्रियव्रत कौं वारौं वल मै पृथु कौं वारौं, पन मै पारथ कौं वारौं हे शत्रुसाल के नन्द राजान के राजा भावसिंह पृथ्वी के सब राजा तेरे तन मैं वारौं, नैननि मैं नल कौ वारौं बचननि मैं बलि कौं वारौं, भुजानि में भीम कौं वारौं, हाथनि मे करन कौं वारौं अर्थात विक्रम, युधिष्ठिर, धुन्धमार, कुबेर, प्रियव्रत, पृथु पारथ वर्त्तमान सब राजा नल बलि भीम करन ये भावसिंह से नहीं इहा सब राजा उपमान हैं, तें उपमेय भये और भावसिंह मुख्य उपमेय को समतायोग्य नहो यातैं चतुर्थ प्रतीप है ॥ १०४ ॥

पचम प्रतीप लक्षण दोहा ।

कहा कछु न उपमान को यो जहँ करत बखान ।
तहो प्रतीपहि कहत हैं कोउ कवि सज्ञान ॥

कहा है? कछु नहीं है ऐसे जहा उपमान को बर्नन करै तहा प्रतीप ही कहत हैं कोई ज्ञानवान कवि ॥ १०५ ॥

उदाहरण कवित्त ।

दिन दिन दीने दूनी सम्पति वढत जाति ऐसो याको कछू कमला को वर वर है । हेम हय हाथी हीर वकसि अनूप जिमि भूपनि को करत भिखारिन को घर है ॥ कहै मतिराम और जाचक जहान सब एक दानि शत्रुसालनन्दन को कर है । राव भावसिंह जू कि दान की वडाई देखि कहा कामधेनु है कछू न सुरतरु है ॥

दीने से राज रोज दूनो सम्पति बढती जाती है इस तरह को याकों लक्ष्मी को सुन्दर बरदान है, सुबर्ण घोडा हाथी हीरा बकसि के जैसो सुन्दर राजान को घर है तैसो भिक्षुन को घर करे है । मतिराम कहै है और सब जहान जाचक है, एक शत्रुसालनन्दन को हाथ दानी है राव भावसिंह जी के दान को बडाइ देखि के कामधेनु कहा है? कल्पवृक्ष कछू नहीं है । इहा कामधेनु सुरतरु उपमान है सो उपमेय भये और हाथ उपमेय के आगे कहा कछू न शब्द करि कै व्यर्थ भये, यातें पचम प्रतीप है ॥ १०६ ॥

पुन दोहा।

काहा दवागनि के पियें कहा धरें गिरि धीर।
विरहानल में जरत व्रज बूडत लोचननीर ॥

दावानल के पिये से कहा भयो ? है घोर पर्वत धारण करे सें कहा भयो ? व्रज है सो विरह की अग्नि में जरे हैं नैनन व जल में बूडे है अर्थात् विरहानल सो दावानल नहीं लोचन जल सो इन्द्रकोप जल नहीं इहां विरहानल नैन जल उपमेय है सो उपमान भये, दावानल इन्द्र जल काहा शब्द करि कें व्यर्थ दिखाये, यातें पंचम प्रतीप है।

अथ रूपक लक्षण दोहा।

वरनत विषयी विषय को करि अभिन्न तद्रूप।
अधिक हीन सम उक्ति सों रूपक त्रिविधि अनूप॥

उपमान उपमेय कों अभिन्न तद्रूप करि के बरनन तें सुन्दर रूपक होय है सो अधिक न्यून सम उक्ति करि कें तीन भांति को है, अर्थात उपमान उपमेय मिले पै रूपक होय है सो यदि दोनून में भेद नहीं रहे तब तौ अभेद रूपक और एक उपमान उपमेय में मिल्यो रहै, एक उपमान न्यारो रहै सो तद्रूप इन दोनून के ये षट भेद हैं. अधिक अभेद १, न्यून अभेद २, सम अभेद ३, अधिक तद्रूप १, न्यून तद्रूप २, सम तद्रूप ३ ॥ १०८ ॥

समोक्ति अभिन्न रूपक कवित्त।

मौज दरियाव राव शत्रुशाल तनै जाको ज-

गत मैं सुजस सहज सीतभान है। विबुधसमाज सदा सेवत रहत जाहि जाचकनि देत जो मनोरथ को दान है॥ जाकि गुनसुमन सुवास ते मुदित मन साच मतिराम कवि करत बखान है। जाकी छाँह बसत विराजै ब्रजराज यह भावसिंह सोई कलपद्रुम दिवान हैं॥ १०६॥

यह दिवान भावसिंह सोई कल्पवृक्ष है, मौन जो दान ताको दर्याव औ समुद्र राव शत्रुसाल ताको पुत्र है, सुरतरु समुद्र को सुत है, भावसिंह को और कल्पवृक्ष को सुजस है सो सहजमे हो जगत में चन्द्रमा है अर्थात दोनून को जस बहुत है, भावसिंह को विबुध जो पंडितन के समूह सदा सेवते रहते हैं, कल्पवृक्ष को विबुध जो देवतान के समूह सदा सेवते रहते हैं दोनूहो जाचकन को मन वाञ्छित दान देते हैं। भावसिंह रूप कल्पवृक्ष के गुन हैं सोई भये सुमन फूल तिनको सुबास तें मन प्रसन्न रहे है। मतिराम कवि है सो साचो बखान करे है, भावसिंह को छाया में बसतो भयो ब्रज को राजा जो पातसाह है सो विशेष राजे हैं, कल्पवृक्ष की छाया में ब्रजराज कृष्णचन्द्र विशेष राजे है। अर्थात सत्यभामा के आगन में कल्पवृक्ष है ताके नीचे कृष्णचन्द्र बैठे हैं। इहां भावसिंह उपमेय, कल्पद्रुम उपमान में भेद नहीं यातें अभेद। सिंधु शत्रुसाल

बिबुध मनोरथ दानि गुन सुमन व्रजराजादि पदन करि कै समता है यातैं समोक्ति भिन्न रूपक है ॥ १०९ ॥

हीनोक्तिअभिन्नरूपक उदाहरण दोहा।

महादानि जाचकन कौं भाऊ देत तुरंग ।
पच्छनि बिगिर बिहंग हैं सुण्डन बिगिर मतंग ॥

महादानी भावसिंह जाचकन कौं तुरंग देत है सो बिना पाखन के पच्छी हैं, और बिना सुंडन के हाथी हैं। इहां तुरंग विहंग मतंगन मैं भेद नहीं, पच्छ सुंड हीन हैं यातैं हीनोक्ति अभिन्नरूपक है ॥ ११० ॥

अधिकोक्तिअभिन्नरूपक उदाहरण सवैया।

जग मैं अग कठोर महा मदनीर भरे भरना सर से हैं। झूलनि रंग घने मतिराम महीरुह फूल प्रभा निकसे हैं ॥ सुन्दर सिन्दुरमण्डित कुम्भनि गैरिकशृङ्ग उतंग लसे हैं। भाऊ दिवान उदार अपार सजीव पहार करी बकसे हैं ॥

संग्राम मैं अग महा कठोर है, मदजल गिरै है सो भरना समान है। मतिराम कहै है झूलनि मैं घने रंग है, सो वृक्षन के फूलनि की प्रभानि से लसे हैं, कुम्भनि मैं सुन्दर सिन्दूरमंडित हैं सो गेरून के सिखर ऊंचे लसे हैं। दीवान भावसिंह उदार ने बहुत हाथी [illegible] र पहार व[illegible] कसे [illegible] ने हैं। इहाँ हाथी पहारन मैं भेद न [illegible] [illegible]ता है यातैं अधिकोक्ति अभिन्नरूपक है।

समोक्ति तद्रूपक उदाहरण सवैया ।

छाँह करै छितिमण्डल कौं सब ऊपर यौं मतिराम भये हैं । पानिप कौं सरसावत है सगरे जग के मिटि ताप गये हैं ॥ भूमि-पुरन्दर भाऊ के हाथ पयोदनहीं बर काज ठये हैं । पन्थिन के पथ रोकिबे कौ घने वारिद बृन्द बृथा उनये हैं ॥ ११२ ॥

भूमण्डल कौं छाया करै हैं । मतिराम कहै है याही तैं सबके ऊपर भये हैं, पानिप कौं सरसावतै है सगरे जगत के ताप मिटि गये है, भूमि के इन्द्र भावसिंह के हाथ है सोई भये मेघ उनही सैं अच्छे काम हुये हैं पन्थीन के मार्ग रोकिबे कौं बहुत मेघन के समूह बृथा उमड़े हैं । इहाँ भूमिपुरन्दर वा पुरन्दरहाथ पयोद वा पयोद यह तौ तद्रूप छाह करिवो सब ऊपर पानिप सरसाइवो ताप मिटाइवो इत्यादि समता है याते समोक्ति तद्रूप रूपक है ॥

हीनोक्ति तद्रूपरूपक उदा० दोहा ।

विप्रनि के मन्दिरन तजि करत ताप सब ठौर ।
भावसिंह भूपाल को तेज तरनि यह और ॥

ब्राह्मणन के मकाननि कौं छोड़ि कै सब ठौर ताप करै है, भावसिंह भूप को प्रताप रवि और है, इहाँ एक तेज तरनि एक और तरनि यह तौ तद्रूप द्विजघरन पै ताप नहीं करै यह हीनता है याते हीनोक्तितद्रूपरूपक है ॥

अधिकोक्ति तद्रूपरूपक उदा० कवित्त ॥

दूरि भयो अधरम अन्धकार अति सब मुदित
निशारि द्विज-चक्रनि को गोत है। वैरिवधू वदन
कलानिधि मलीन भयो सकल सुखानो परपा-
निप को सोत है॥ कहै मतिराम राव शत्रुसाल-
नन्दन को प्रबल प्रताप पुंज आतप उदोत है।
भावसिंह भानु बलाबन्ध को दिवान तपै आठहूँ
पहर दुपहर दिन होत है॥ ११५॥

सब अधर्म रूप अन्धकार है सो अत्यन्त दूरि भयो, देखि कै द्विजरूप जो चकवाक है तिनको गन मुदित भयो अरि तियन को मुखरूप चन्द्रमा है सो मलीन भयो अरु रूप पानी को सोत है सो सब सूखि गयो। मतिराम कहै है राव शत्रुसाल के सुत को प्रबलप्रतापगन रूप आतप को उदोत रवि है बलाबंध को दिवान राव भावसिंह तपै है, सो आठौं पहर दुपहर दिन होय है। इहाँ प्रताप कौं आतप अथवा आतप उदोत रवि दूसरो आतप रवि यह तौ तद्रूप आठौं पहर उदित रहिबो अधिकता है यातैं अधिकोक्ति तद्रूपरूपक है॥ ११५॥

अथ परिणाम लक्षण दोहा।

विषयी विषय अभेद सौ जहँ करत कछु काज।
बरनत तहँ परिनाम हैं कवि कोविद सिरताज॥

उपमान उपमेय अभेद सौं जहाँ कछु काम करै तहा परिनाम बरनते हैं कवि पंडित सिरताज हैं ॥ ११६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

बाजत नगारे जहाँ गाजत गयन्द तहाँ सिंह सम कीनो वीर संगर विहार हैं । कहै मतिराम कवि लोगनि कौं रीझि करि दीने ते दुरद जे चुवत मदधार हैं ॥ शत्रुसालनन्द राव भावसिंह तेग त्याग तोसे और औनि तल आजु न उदार हैं । हाथिनि विदारिवे कौं हाथ हैं हथ्यार तेरे दारिद विदारिवे कौ हाथियै हथ्यार हैं ॥११७॥

जहाँ नगारे बाजते हैं हाथी गाजते हैं, हे वीर तहाँ संग्राम मैं सिंह समान विहार किये है । मतिराम कहै है कवि लोगनि कौं रीझि करिकै वे हाथी दिये जे मद की धारा चुवते हैं, हे शत्रुसाल के नन्द राव भावसिंह तेग और त्याग मैं आज तो समान उदार पृथ्वीतल मैं और नही है, हाथीन के चीरिबे कौं तेरे हाथ मैं हथ्यार हैं, दारिद दूरि करिबे कौं हाथीही हथ्यार हैं। इहाँ हाथी उपमान नैं ह थियार उपमेय होय कै दारिद विदारिवे की क्रिया करी यातैं परिणाम है ॥ ११७ ॥

अथ द्विविध उल्लेख लक्षण दोहा ।

कै बहुतै कै एक जहँ एकहि को उल्लेख ।
बहुत करत उल्लेख तहँ कहत सुकवि सविशेष ॥

जहाँ एकही कौं बहुत जने बहुत करिकै बर्नन करैं सो प्रथम भेद और जहाँ एकही कौं एक जनो बहुत करि कै बरनै सो दूसरो उल्लेख ॥ ११८ ॥

प्रथमोदाहरण दोहा।

कविजन कलपद्रुम कहैं ज्ञानी ज्ञानसमुद्र ।
दुरजन के गन कहत हैं भावसिंह रन-रुद्र ॥

कवि लोग कल्पवृक्ष कहते हैं ज्ञानी है सो ज्ञान को समुद्र कहते है, दुर्जन के समूह कहते है कि भावसिंह सग्राम में शिव है। इहाँ कवि ज्ञानी दुर्जन बहुतनि नें एक भावसिंह को बडाई करी यातैं उल्लेख है ॥ ११९ ॥

द्वितीयादाहरण कवित्त।

सत्ता को सपूत राव सगर को सिंह सोहै जैत-वार जगत करैगी किरवान को। कहै मतिराम अवलम्ब राजै धरम को महोदधि मरजाद मेरु परिवान को॥ कीरति की कौमुदी सु छाई छिति छोरनि लौ विमल कलानिधि है कुल चहुवान को। दानि-कलपद्रुम सुजानमनि भावसिंह भानु भूमितल को दिवान हिंदुवान को॥

शत्रुशाल को सपूत राव है सो सग्राम को सिंह सोहै है, जग को जीतिवेवारो है, कठिन तरवारि को है। मति राम कहै है धर्म को अधार राजै है, मर्यादा को समुद्र है,

प्रमाण को सुमेरु है, कीरति चाँदनी है सो भूमि के ओरन ताईं छाय रही है, चहुवान कुल को निर्मल चन्द्रमा है। दानीन में कल्पवृक्ष है, गुनवानन में मनि है, भावसिंह है सो भूतल को रवि है, हिन्दुस्तान को दिवान है। इहाँ भावसिंह एक कों बहुत भाँति करि बर्न्यौ यातें द्वितीय उल्लेख है॥ १२०॥

वनिताभूषण प्रादुर्भूतमनोभवाद्वितीयउल्लेख उदा॰ दोहा।

कामकलान भरी तिया रति मैं रति दरसाय।
छवि मैं गिरिजा गुन गिरा पालत रमा लखाय॥

अथ सुमरन भ्रम सदेह लक्षण दोहा।

एक वस्तु लखि आन को सुमरन भ्रम सन्देह।
बरनत भूषन तीन विधि जे कविजन मतिगेह॥

एक वस्तु कौं देखि कै और वस्तु को सुमरन भ्रम संदेह होय तहां ऐसो तीन प्रकार अलंकार बरनते हैं जे कवि लोग बुद्धि के सदन हैं, अर्थात स्मृति विद्यमान होय सो स्मृतिमान भ्रान्ति विद्यमान होय सो भ्रान्तिमान संदेह होय सो संदेहालङ्कार है॥ १२१॥

सुमरन उदा॰ दोहा।

सोय संग सुख जागि दुख लहि समुझ्यौ निरधार।
कौन पुन्य सुरलोक तें लेत अवनि अवतार॥

स्वप्न में पति संग सोय कै सुख पाय कै फेरि जागि कै

दुख पाय के निश्चय समुझ्यो, छीन पुन्य भए पै स्वर्ग से भूमि में जन्म लेते हैं,। इहां सयोग सुख, बियोग दुख से स्वर्गवास औ भूमिवास को सुमरन भयो, यातें सुमरन है॥

भ्रम उदा० दोहा।

उँजियारी मुख इदु की परी उरोजनि आनि।
कहा अँगोछति मुगुध तिय पुनिर चन्दन जानि॥

मुखचन्द की चादनी कुचनि पै आनि परो है । हे अजान तिय! चन्दन जानि के बारबार काँई पोंछे है? इहां उजियारी कों देखि के चन्दन को भ्रम भयो यातें भ्रमा लङ्कार है॥ १२४॥ पुन दोहा।

आभा तरिवन-लाल की परी कपोलनि आनि।
कहा छपावति चतुर तिय कान्त-दन्त छत जानि॥

तरौंना के लाल की प्रभा गालनि पै आनि परी है, हे चतुर तिय पति के दन्तन का घाव जानि के काँई दुरावै है? । इहां लाल की आभा देखि के दन्तछत को भ्रम भयो याते भ्रम है॥ १२४॥

सवैया।

मान कियो सपने मैं सुहागिन भौंहैं चढ़ी मतिराम रिसौंहैं। बातें बनाय मनाय लई मन-भावन कण्ठ लगाय हसौंहैं॥ येते अचानक जागि परी सुख ते अँगिरात उठी अलसौंहैं। लालन

कै लखि लोचन लाज तें होत न बाल के लोचन सौहैं ॥ १२५ ॥

सुहागनि ने सपना में मान कियो, मतिराम कहै है रिसौंहैं भौंहैं चढी मनभावन नें बात बनाय कै मना करि कै हँसिकै कठ सें लगा लीनी इतने में अचानक ही जागि कै सुख से अलसाई हुई अगराई लेती उठी, लज्या के नैन लाजते हुए देखि कै बाल के लोचन सन्मुख नही होते हैं। यहा स्वप्न में नायक कौं अपराध देखि जागे पै भी भ्रम भयो, यातें भ्रम है अथवा उत्तमा नायिका ने स्वप्न की मान कौं जागिबे की मान मान्यो यातें भ्रम ॥ १२५ ॥

सदेह उदा॰ दोहा।

परचि परै नहि अरुण रँग अमलअधरदलमाझ।
कैधों फूली दुपहरी कैधौं फूली साझ ॥१२६॥

लाल रग पहिचानि नहीं परै निर्मल अधर रूपी पत्र में, कै जानै दुपहरी फूली है, कै सन्ध्या फूली है, इहा दुपहरी सन्ध्या में सदेह रह्यो, यातें सदेहालङ्कार है ॥१२६॥

कवित्त।

बानी को बसन कैधौं बात के बिलास डोलै कैधौ मुखचन्द-चारु-चन्द्रिका प्रकास है। कवि मतिराम कैधौ काम को सुजस कै पराग पुञ्ज प्रफुलित सुमन सुबास है ॥ नाक नथुनी के गज॰

मोतिन की आभा कैधौं देहवन्त प्रगटित हिय को हुलास है। सीरे करिवे कौं पियनैन घनसार कैधौं बाल के वदन विलसत मृदुहास है॥

कै जानैं सरस्वती को वस्त्र पवन के जोर से डोलै है कैधौं मुखचन्द्रमा की सुन्दर चादनी को उजास है, मतिराम कहै है कैधौं कामदेव को सुजस है कै पुष्परज को पुंज है, तामें फूले फूलनि की सुवास है, नासिका को नथ के गजमोतीन की आभा है, कैधौं हिया को हर्ष देहवन्त प्रगट भयो है कै जानै पीतम के नैन सीरे करिवे कौं घनसार है, कै नायिका के मुख मैं कोमल हासी विशेष लसै है, इहा हासी है कि और वस्तु है, निश्चय नहीं भयो, यातैं संदेहालंकार है॥ १२७॥

वनिताभूषण गाढ तारुण्य संदेह उदा० दोहा।

वक्र दीठि दृग मदभरे कुच नितम्ब लखि पीन।
अलि मानत यह रति रमा उमा गिरा कि प्रवीन॥

अथ शुद्धापन्हुति लक्षण दोहा।

औरै को आरोप करि साँच छपावत धर्म।
शुद्धापन्हुति कहत हैं जे प्रवीन कविकर्म॥

और कौं ठहराय कै साँच धर्म कौं छपावे, तहा शुद्धापन्हुति कहते हैं। जे कवि काम मै प्रवीन हैं ते॥ १२८॥

उदाहरण कबित्त।

पारावार पीतम कों प्यारी ह्वै मिली है गंग
वरनत कोऊ कवि कोविद निहारि कै। सो तो
मतो मतिराम के न मनमानै निजमति सों क
हत यह वचन विचारि कै। जरत वरत वडवा-
नल सौं वारिनिधि बीचिनि के सोर सौं जनावत
पुकारि कै। ज्यावत विरचि ताहि प्यावत पियूष
निज कलानिधि मण्डल कमण्डल तें ढारि कै॥

समुद्ररूपी पीतम को गंगा है सो प्यारी होय के मिली है कोई पंडित देखि के बरनते है, सो मत तो मतिराम के मन में नहीं आवे अपनो बुद्धि सों विचारि करिके यह वचन कहत है वा वडवाग्नि सों जलतो दुखित होय के समुद्र है सो तरगनि के शब्द सों पुकारि के जनावे है। ताकों ब्रह्मा है सो जिवावे है और प्यावे है, अमृत अपने चन्द्रमडल रूप कमडल सें गेरि के। इहां सत्य गंगा कौं अमृत ठहरायो यातें शुद्धापन्हुति॥ १२९॥

अथ हेतपन्हुति लक्षण दोहा।

युक्ति सहित मतिराम जँह शुद्धापन्हुति होय।
हेतु अपन्हुति कहत हैं तहां सुकवि सब कोय॥

मतिराम कहै है यह शुद्धापन्हुति युक्ति समेत होय तहां हेतुअपन्हुति कहते हैं। सुकवि सब कोई॥ १३०॥

उदाहरण दोहा।

बालवदन-प्रतिबिम्ब बिधु उयो रह्यो तिहि संग।
उयो रहत अब रजनि दिन तपन तपावत अग॥

चन्द्रमा बाल के मुख को प्रतिबिम्ब हो सो ताही बिम्ब के साथ रह्यो, अब राति दिन रवि उग्यो रहे है सो अगनि कों तपावै है। इहा सत्य चन्द्रमा कों प्रतिबिम्ब युक्ति सों तपन ठहरायो, यातें हेत्वपन्हुति है॥ १३१॥

परयस्तापन्हुति लक्षण दोहा॥

धर्म और में राखिये धर्मी साचु छपाय।
परयस्तापन्हुति कहत ताहि बुधि सरमाय॥

साचो धर्मी को धर्म छपाय कै और में राखिये ताकों परयस्तापन्हुति कहते हैं बुद्धि बढाय कै॥ १३२॥

उदाहरण दोहा।

कोमल कमलन से कहैं तिन्है न नैक सयान।
होत पार लागत हिये नैन मैन के बान।१३३।

कमल से नरम कहते हैं, तिनकों कुछ सयानप नहीं है लगतेंही हिया में पार हो जाते हैं, सो नैन तो मैन के तीर हैं। इहा सत्य नैनन को हिया में पार होवो धर्म, कामबान में ठहरायो यातें परयस्तापन्हुति है॥ १३३॥

भ्रान्तापन्हुति लक्षण दोहा।

जहँा और शङ्का भये करत झूठ भ्रम दूरि।
भ्रान्तापन्हुति कहत हैं तहा सुकवि मतिभूरि॥

जहा और कैं शका भये पै भूठे भ्रम कों दूर करै तहा भ्रांतापन्हुति कहते हैं बडी मतिवारे सुन्दर कवि ॥

उदाहरण सवैया।

सेवत हैं विबुधै मतिराम सदा गुरु-बैन प्रमान कै मान्यौ। कोप किये सब भूतल के अरि भूभृत पच्छनि को गन भान्यौ ॥ पानिप पूरत बारिद हाथनि ताप हर्‌यौ जग मैं जस ठान्यौ। तैं समुझे पुरहूत के रूपहि मैं प्रभु भाऊ दिवान बखान्यौ ॥ १३५ ॥

कोई ने कोई सों भावसिंह के गुनबर्नन कर्‌यो, सुनने वाले नैं इन्द्र के गुन समुझ्यो। इन्द्रपच्छ अर्थ यों है, मतिराम कहै है सदा बिबुध देवता ही सेवते है, सदा गुरु बृहस्पति को बचन सत्य करिकै मान्यो है रोष करे पै सपूर्ण पृथ्वीतल के बैरी भूभृत पर्वत तिनको पाखन को समूह काटनो, बारिद मेघ रूप हाथन सों पानी गेरै है ताप दूर करै है, जगत में जस रोप्यो है या भांति अर्थ समुझि के सुननेवाले नै इन्द्र जान्यो, तब कहनेवालो कहै है तैंने इन्द्र के रूपन कों समुझे मैंने समर्थ भावसिंह दिवान बर्न्यो है, भावसिंह पच्छ मे अर्थ यों है मतिराम कहै है । सदा बिबुध पडित सेवते है, सदा गुरु जो मन्त्रविद्यादातादि को बचन सत्य करि कै मान्यो है कोप करे पै सपूर्ण पृथ्वीतल

के बैरी भूभृत जो राजा तिनके पच्छीन को समूह काटनों सकल्पदाता है सो छायन में सकम्प पानी कों पूरै है अर्थात दान बहुत करै है, ताप जो कष्ट है सो दूर करै है जगत में जय करै है इहां इन्द्र कौं समुझने वाले को भ्रम दूर कखो यातें भ्रान्तापन्हुति है ॥ १३५ ॥

छेकापन्हुति लच्छण दोहा।

जहाँ और की शंक तें साँच छपावत बात।
छेकापन्हुति कहत हैं तहाँ बुद्धि अवदात॥१३६॥

जहां और की शंका सें सांची बात कों दुरावै, तहां छेकापन्हुति कहते हैं, उज्वल मतिवाले ॥ १३६ ॥

उदाहरण दोहा।

ओठ खंडिबे कों अड्यो मुख सुवास रस-रत्त।
स्यामरूपनँदलालअलि नहि अलिअलि उनमत्त॥

अधर खंडित करिबे कों अडि रह्यो है, मुख की सुगन्ध क रस में लीन होय के स्यामरूप है तब और सखी नें सुनि कै कह्यो, हे अलि नन्दलाल है? नहिं सखि उनमत्त भ्रमर है। यहां सखी की शंका सें सांची बात दुराई यातें छेकापन्हुति है ॥ १३७ ॥

पुन सवैया।

पावस भीति वियोगिनी बालनि यौं समुझाय सखी सुख साजैं। जोति जवाहिर की मतिराम

नहीं सुर चाप छिनौछवि छाजैं ॥ दन्त लसैं बक पाँति नहीं धुनि दुन्दुभी की न घने घन गाजैं । रीझि कै भाऊ नरिन्द दिये कविराजनि के गजराज बिराजै ॥ १३८ ॥

वर्षा सों डर्पी हुई बिरहिनी नायिकान कौं ऐसे समुझाय की सखी हैं सो सुख भाजे हैं मतिराम कहे हैं । हाथीन कै लगी हुई जवाहिरन की जोति हैं, सुरचाप और छिनौछवि बीजुरी नहीं छाजे हैं, हाथीन के दन्त लसे हैं, बकुलान की पंति नहीं है ध्वनि दुन्दुभी की है घने मेघ नहीं गाजे हैं अर्थात कविराजन कौं भावसिंह के दिये घने हाथी है जिनमें कितने हो हाथीन पर नगारे बजते हैं, रीझि कै भावसिंह राजानें दिये ते कविराजन के गजराज बिराजे हैं । इहां सत्य पावस कौं हाथी ठहराये यातें छे कापन्हुति है ॥ १९८ ॥

छलापन्हुति लक्षण दोहा ।

जहँ छल आदिक पदनि सों साँच छपावत बात।
तहँ छलपन्हुति कहत है कबिजनमति अवदात॥

जहां छल व्याज कैतवादि पदनि सों सांची बात कों छपावै तहां छलापन्हुति कहते हैं उज्वल मति के कवि लोग जे हैं ते ॥ १९८ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सुन्दरवदनि राधे सोभा को सदन तेरो व-दन बनायो चारिवदन बनाय कै। ताकी रुचि लैन कौ उदित भयो रैनपति मूढमति राख्यो निज कर बगराय कै॥ मतिराम कहै निसिचर चोर जानि याहि दीनी है सजाइ कमलासन रिसाय कै। रातौं दिन फेरै अमरालय कै आस पास मुख मैं कलङ्क मिसि कारिख लगाय कै॥

हे सुन्दरवदनी राधे चतुर्मुख नैं छवि को घर सुधारि कै तेरो मुख बनायो ताकी कान्ति लेवा कौं निसानाथ उदित भयो, मूढमति नै अपने कर फैलाय राखे मतिराम कहै है, याकौं रात्रिचर चोर जानि कै कमलासन नें रोस करि कै सजा दीनी है, रात दिन देवालय कै ओर पास फेरै है मुख में कलक के मिस करिकै कालौंस लगाय कै। इहां मिस पद करि कै कलक कौं कारिख ठहरायो यातै छलापन्हुति ॥ १४० ॥

अथ उत्प्रेक्षा लक्षण दोहा ।

जहँ कीजे सभावना सो उत्प्रेक्षा जानि ।
वस्तु हेतु फल रूप ते ताको त्रिबिधि बखानि ॥

जहां सभावना करिये सो उत्प्रेक्षालकार जानो, वस्तु हेतु फल रूप सें ताकौं तीन प्रकार को बखानो अर्थात्

सभावना नाम तर्क और डौल बनायबे को है वस्तु में वस्तु को तर्क करै सो वस्तूत्प्रेचा अहेतु कौं हेतु ठहराय सभावना करै सो हेतूत्प्रेचा अफल कौं फल ठहराय सभावना करै सो फलोत्प्रेचा ॥ १४१ ॥

दोहा।

एकउक्तविषया कही अनुक्तविषया और ।
बहुरि भेद है वस्तु में जानहु कवि सिर मौर ॥

फेरि एक उक्तविषया कही है और अनुक्तविषया कही है ये दोय भेद वस्तूत्प्रेचा में है कविन के सिरमौर तुम समुझो अर्थात जाको तर्क करो होय जामें तर्क करो होय ये दोनौं होय सो उक्तविषया वस्तूत्प्रेचा, जाको तर्क करो सो तौ होय जामें तर्क करो सो न होय, यह अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेचा है ॥ १४२ ॥

दोहा।

एक सिद्धविषया कही असिद्धविषया और ।
भेद हेतु फल दुहुनि में है कहियत मति दौर ॥

एक सिद्धविषया कही है और असिद्धविषया कही है, हेतु फल दोनोन में ये है भेद मति की दौड से कहिये है, अर्थात् अहेतु कौं हेतु ठहरावे सो सिद्ध होय तो सिद्धविषया हेतूत्प्रेचा असिद्ध होय तो असिद्धविषया हेतूत्प्रेचा अफल कौं फल ठहरावै सो सिद्ध होय तो सिद्धविषया फलोत्प्रेचा, असिद्ध होय तो असिद्ध विषया फलोत्प्रेचा जाकी

सभावना करिये सो सभाव्यमान, जामैं सभावना करिये सो विषय, और आस्पद कहिये नाम्रार्थ यह है कह्यो है विषय जिसमैं सो उक्त विषया, नहीं कह्यो विषय जिसमैं सो अनुक्तविषया, सिद्ध है विषय जिसमैं सो सिद्धविषया, असिद्ध है विषय जिसमैं सो असिद्धविषया, इसी तरह उक्तास्पदा अनुक्तास्पदा सिद्धास्पदा असिद्धास्पदा जानिये।

उक्त विषयावस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण – कवित्त।

वासव की राजै रुचि ललित वसन्त खेल खि-लत दिवान बलावन्त सुलतान मैं। कहैं मतिराम कवि मृगमद पङ्क छवि छावत फुलेल औ गुलाब आपगान मैं॥ कुकुम गुलाल घनसार औ अबीर उडि छाय रहे सघन अवनि आसमान मैं। मेरे जानि रावभावसिंह को प्रताप जस रूप धरैं फैलि रह्यो दशहू दिसान मैं॥ १४४॥

इन्द्र को सो कान्ति सोहै है सुन्दर बसन्त को ख्याल खेलते दिवान बलावन्त का पातसाह मैं मतिराम कवि कहे हैं कस्तूरीका कीच को छवि छावे है फुलेल और गुलाब की नदीमृ मैं केसर गुलाल कपूर और अबीर उडि के बहुत छाय रहे हैं भूमि आकास मैं मेरी जानि मैं राव भावसिंह को प्रताप जस है ते रूप धरें हुये दशों दिशान मैं फैलि रहे हैं इहा कुकुम गुलाल और कपूर अबीर मैं

प्रताप जस को तर्क है और दोनों विद्यमान हैं यातें उक्त विषया वस्तूत्प्रेक्षा है ॥ १४४ ॥

अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा उदाहरण—कवित्त।

जगमग जोवन अनूप तेरो रूप चाहि रति ऐसी रम्भा सी रमा सी बिसराइये। देखिबे कौं प्रानप्यारी पास प्रानप्यारो खरो घूंघट उघारि नेंकु बदन दिखाइये ॥ तेरे अंग अग में मिठाई औ लुनाई भरी मतिराम कहत प्रगट यह पाइये। नायक की नैननि में नाइये सुधा सो सब सौतिन के लोचननि लौन सो लगाइये ॥ १४५ ॥

जगमगाते हुये तेरे जोबन रूप कों देखि के रति सो, रभा सो, लछ्मी सो भूलिये हे, प्रानप्यारी प्रानप्यारो है सो देखिबे कों नजीक अभो है घूंघट खोलि के नेंक मुख दिखाइये तेरे अग अग में मिठाइ और नमकोनी भरो है। मतिराम कहै है यह प्रगट पाइये है, नायक के नेननि में अमृत सो गेरिये हे, सब सौतिन के नेनमि में लवण सो ल गाइये है। यहां निकाई वस्तु में मिठाई खारापन को तर्क है और निकाई नहीं कही यातें अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा है। अथवा नायक के नैननि को सुख हो वामें सौतिन के नेननि को दुख हो वामें सुधा नाखा को लौन लगावा को तर्क है और सुख दुःख होवो नहीं है। यातें अनुक्तविषया वस्तूत्प्रेक्षा ॥ १४५ ॥

सिद्धविषया हेतूत्प्रेक्षा उदाहरण कवित्त ।

प्रवल विलन्द वर वारन के दन्तनि सों वै
रिन की वाँके वाँके दुरग विदारे हैं । कहै मति
राम दीने दीरघ दुरदबन्द मुदिर से मेदुर मु
दित मतवारे हैं ॥ तेग त्याग राजत जगतराव
भावसिंह मेरे जान तेरे गज याही ते पियारे हैं।
दुज्जन के दल कविलोगनि के दारिदनि नीकैं
करि गजन की फौजनि सौं मारे हैं ॥ १४६ ॥

बलवान ऊँचे सुन्दर हाथीन के दाँतनि सों रिपूनि के
टेढे टेढे गढ ढहाये हैं । मतिराम कहै है बडे हाथीन के
गन दिये, जे मेघ से सचिक्कन प्रसन्न मस्त हैं हे राव भाव
सिंह तेग त्याग जगत में राजै है, मेरी जानि में तेरा हाथी
इसी सें प्यारा है, वैरिनि की फौजनि कौं कविजननि के
दारिदन कौं अच्छे करि के हाथीन की फौजनि सौं मारे
हैं । इहाँ गज प्यारे होवा को हेतु दल दारिद मारिवो
नहीं, ताकौं हेतु कियो, और दलदारिद मारिवो सिद्ध है,
यातें सिद्धविषयाहेतूत्प्रेक्षा है ॥ १४६ ॥

अथ सिद्धविषया उदाहरण सवैया ।

मोचन लागी भुराई की वातनि सौतिनि
सोच भुरावन लागी । मजन कै नित न्हाय कै
अग अँगोछि कै वार भुरावन लागी ॥ मोरि मुखै

मुसकाय कै चारु चितैं मतिराम चुरावन लागी। ताही सकोच मनो मृगलोचनि लोचन लोल दुरावन लागी ॥ १४७ ॥

भोलापन की बातनि कौं छोडया लगी सौतिनि की तरफ का सोच कौं भूलने लगी, मधन्नि कै रोजीना न्हाय कै अगनि कौं अँगोछि कै केस सुखाने लगी है। मजन को अर्थ मसलिबो अथवा मजन न्हाय पुनिरुक्त भासै तौ नाय पाठ रहै तब यौं अर्थ करिये रोजीना अगनि कौं नवाय कै मजन स्नान करि कै बारनि कौं पोंछि कै सुखाने लगी है, अर्थात् पहिले स्नुचि कै नहीं न्हावै ही अब लाज से नय कै न्हाती है पहिलैं बार नहीं पोंछती अब पोंछती, जोब नागम सैं मुख मोरि कै मुसकाय कै मतिराम कहै है सुन्दर चित्त कौं चोरने लगी है मानी ताही सकोच सैं मृग नैनी है सो चचल नैननि कौं छिपाने लगी है । इहाँ नैन दुरावा को हेतु चित्त चोरिबो नहीं ताकौं हेतु ठहरायौ और चित्त चोरिबा असिद्ध है यातें असिद्धविषया हेतूत्प्रेक्षा है ॥ १४० ॥

अथ सिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा उदाहरण सवैया।

बारिनि धूपि अगारनि धूपि कै धूम अँध्यारी पसारी महा है। आननचन्द समान उग्यौ मृदु मञ्जु हँसी जनु जोन्ह-छटा है ॥ फैलि रही मति-

राम जहाँ तहाँ दीपनि दीपनि की परभा है।
लाल तिहारे मिलाप कौं वाल सु साज करी
दिनही मैं निसा है ॥ १४८ ॥

हारनि कौं प्रथया (बारनि कौं) धूपि के मण्डलनि कौं धूपि के, धुवाँ को अँधियारो बहुत फैलाई है, मुख है सो चन्द्रमा के समान उज्यो, कोमल और निर्मल हाँसी है सो मानो चाँदनो को छवि है मतिराम कहै है जहाँ तहाँ जगता दियान की प्रभा फैलि रही है। हे लाल तुम्हारे मिलाप कौं बाल ने सुन्दर साज दिनही में राति करी है। इहाँ दिन को राति करि वाको फल पति को मिलाप नहीं, ताकौं फल ठहरायो, और राति करिबो सिद्ध है यातैं सिद्धविषयाफलोत्प्रेक्षा है॥

असिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा उदाहरण दोहा।

मनौ भजी अरि* तियनि कौं पकरन को हठदाप।
भावसिंह को दिसनि मै फैलत प्रबल-प्रताप ॥

मानो भागी हुई रिपुन की स्त्रीनि को पकड़वा को मजबूत गर्व करि कै भावसिंह को प्रबल प्रताप दिसान मै फैले है। इहाँ प्रताप के फैलवा को फल रिपु स्त्रीन को पकरिबो नहीं ताकौं फल ठहरायो और पकरिबो असिद्ध है, यातैं असिद्धविषया फलोत्प्रेक्षा है॥ १४९ ॥

* हमलोगों को समझ में अबला स्त्रियों के पकड़ने के लिये महाराज के प्रबल प्रताप का फैलनाठीक नहीं जान पड़ता। रामकृष्ण वर्मा।

गुप्तोत्प्रेक्षा लक्षण दोहा।

उत्प्रेक्षा वाचक जहाँ शब्द कह्यो नहि होय।
गुप्तोत्प्रेक्षा कहत हैं तेहाँ सुकवि सब कोय ॥

जहाँ उत्प्रेक्षा को वाचक शब्द नहीं कह्यो होय तहाँ गुप्तोत्प्रेक्षा कहते हैं सब कोइ सुकवि । मनो, जनु, ध्रुव, मायनून इव इत्यादि वाचक हैं। १५० ॥

गुप्तोत्प्रेक्षा उदाहरण दोहा।

बाल रही इकटक निरखि ललित लालमुखइन्दु।
रीझ भार अँखियाँ थकीं झलकि श्रमजलबिन्दु ॥

नायिका है सो सुन्दर लाल के मुख चन्द कौं मन मिख देखि रहो सो रीझ के बोझ सें आँखि थकि गई ताही परिश्रम सें जल के बिन्दु झलके हैं। इहाँ आँसू सा त्विक में श्रम जलबिन्दु की तर्क है आँसू अनुक्त हैं । यातें अनुक्तविषयावस्तूत्प्रेक्षा । मानों नहीं है यातें गुप्तोत्प्रेक्षा है अथवा रीझ भार सें आँखें थकीं इसी सें इकटक रहो । इहाँ थकिबो इकटक को हेतु नहीं ताकों हेतु ठहरायो और थक्या को सिथिल होबो सिद्ध है यातें सिद्धास्पदा है तूत्प्रेक्षा है और वाचक नहीं कह्यो यातें गम्योत्प्रेक्षा है ॥

अथ रूपकातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

जहँ केवल उपमान तें प्रगट होत उपमेय।
रूपकातिशयउक्ति तहँ बरनत सुकवि अजेय ॥

जहाँ फक्त उपमान सें उपमेय प्रगट होय तहाँ रूप कातिशयोक्ति अजीत सुकवि बरनते हैं ॥ १५२ ॥

उदाहरण दोहा।

इन्द्रजाल कन्दर्प को कहै कहा मतिराम।
आगि लपट वर्षा करै ताप धरै घनस्याम॥

कामदेव के इन्द्रजाल कौं मतिराम कौंई कहै अग्नि को लव वर्षा करै है, घनश्याम ताप कौं धारण करै है। इहां आगिलपट उपमान में बिरहिनी नायिका उपमेय प्रगटो वर्षा में आंसू घनश्याम में लच्छ ताप में बिरह को दु ख जान्यौ यातें रूपकातिशयोक्ति है॥ १५३॥

पुन' उदाहरण दोहा।

चलो लाल या बाग में लखौ अपूरव केलि।
आलवाल घन समय को ग्रीषमऋतु की वेलि॥

हे लाल या बाग में चलो और अद्भुत क्रीड़ा देखो वर्षा काल को थावलो है ग्रीषमकाल की बेलि है। इहाँ घन समय के आलवाल उपमान में छिरयौ स्याम उपमेय प्रगटौ ग्रीष ऋतु की वेलि में बिरहनी नायिका उपमेय काढ़ी यातें रूपकातिशयोक्ति है॥ १५४॥

इहद्व्यग्यार्थचन्द्रिका। अथ अधीरा रूपकातिशयोक्ति उदाहरण सवैया।

जन्म लियो जब तें इहि ठौर निरन्तरही अति जोर जमायो। देखि हमेस रही इहि देशन काक प्रवेस गुलाब लखायो॥ सन्तत ही सहवासिन कै तिहि संगति तै सुखहो सरसायो। आज भई

विपरीत सखी लखि कोकिल को घर काक खु-
सायो ॥ १ ॥

दोहा ।

कटु बोलत तिय पीय सें लखि सखि कहत बनाय।
गलघर कोकिल काक को आन सखिन समुझाय
विपयी कोकिल काक वच विपयमधुरकटुउक्ति।
बोध भये तें ह्या सखी रूपकातिशय उक्ति ॥

वनिताभूषण ॥ भेद्रा कनिष्ठा रूपकातिशयोक्ति उ॰ दोहा ।

कनकलता जुग में कमल अमल प्रफुल्लित पाय।
अली रली इक सें करत इक सें दीठि दुराय ॥

सापन्हवातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

जहाँ अपन्हुति सहित सो बरनत मति अभिराम ।
सापन्हव अतिशय उकति तहाँ कहत मतिराम॥

जहा सुमति है सो अपन्हुति सहित रूपाकातिशयोक्ति
कों बरनै तहा मतिराम सापन्हवातिशयोक्ति कहते हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

झूठ इन्दु अरविन्द में कहत सुधा मृदुवास ।
तो मुख मंजुल अधर में तिनको प्रगट प्रकास॥

चन्द्रमा कमल में झूठेही सुधा और मृदुवास कहत
हैं, तेरे मुख में और सुन्दर अधर में तिन दोनून को जाहर
उजालो है । इहा सुधा सुगंध दोनू उपमाननि सें अग की

मधुरता सुगध उपमेय जाने यातैं रूपकातिशयोक्ति चन्द्र अरविन्द सैं बरनि कै मुख अधर मैं स्थापित है यह अप न्हुति यातैं सापन्हवातिशयोक्ति है ॥ १५६ ॥

भेदकातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

औरै यौं करिकै जहाँ बरनत सोई ब्वत ।
भेदकातिशयउक्ति तहँ कहत बुद्धि-अवदात ॥

जहा सोई बात कौं औरही है यौं करि कै बर्नैं तहा उज्वल मतिभेदकातिशयोक्ति कहत हैं ॥ १५७ ॥

उदाहरण दोहा।

औरै कछु चितवनि चलनि औरै मृदु मुसकानि।
औरै कछु सुख देति है सकै न बैन बखानि ॥

याकी नजर चाल कछु औरही है कोमल हाँसी और ही है कछु औरही सुख देती है बचन कहि नहि सकै अ र्थात लोकोत्तर है। इहा चितवनि आदि उनहीं कौं और बरनै यातैं भेदकातिशयोक्ति है ॥ १५८ ॥

अथ द्विविधि सम्बन्धातिशयोक्ति लक्षण दोहा।

जहँ अजोग है जोग मै जहँ अजोग मैं जोग ।
सम्बन्धातिशयोक्ति कहि भाषत सब कविलोग ॥

जहा अजोग वस्तु जोग मै है अर्थात अजोग कौं जोग करै जहा जोग वस्तु कौं अजोग मै करै, तहा सम्बन्धाति शयोक्ति कहि कै सब कवि लोग बर्नन करते हैं ॥ १५९ ॥

प्रथम उदाहरण कवित्त।

सुरजनवंश राव भावसिंह सूरज तू तोतें आज जगैं जग जप तप जाग हैं। झलकै ललाई मुख अमल कमल तेरे हिये हरिचरन कमल अनुराग हैं॥ सत्ता के सपूत तैं जगाई मतिराम कहै लहलही कीरति कलपबेलि बाग हैं। ऊँचे मन ऊँचे कर ऊँचे ऊँचे करी दैकै ऊँचे करे भूमि के भिखारिन के भाग हैं॥ १६०॥

सुरजन के बंश में हे राव भावसिंह तू सूरज है। तो सैं आज जगत में जप तप यज्ञ जगैं हैं अर्थात धर्म को रक्षक है। तेरे निर्मल मुख कमल में ललाई झलकै है। हिया मैं हरि के चरनकमल को प्रेम है मतिराम कहै है हे शत्रुशाल के सपूत तैंने लहलही कल्पबेलि के बाग सी कीरति लगाई है। ऊँचो मन ऊँचो हाथ सैं ऊँचा ऊँचा हाथी देय कै सब पृथ्वी के मँगननि के भाग ऊँचे किये। इहाँ भिखारिन के भाग उच्चता जोग नहीं तिनकों जोग किये यातैं सम्बन्धातिशयोक्ति है॥ १६०॥

पुन कवित्त।

सजल जलद जिमि झलकत मदजल छिति तल हलत चलत मन्दगति मैं। कहै मतिराम बल विक्रम बिहद्द सुनि गरजनि परे दिगवारन

विपति मैं ॥ सत्ता के सपूत भाऊ तेरे दिये ह लकनि बरनी उँचाई कविराजन की मति मैं। मधुकरकुल करटीनि के कपोलनि तैं उडि र पियत अमृत उडपति मैं ॥ १६१ ॥

जलसहित मेघ ज्यों मद का जल झलकता है। चलतैं मन्दगति सें भूतल हलै है। मतिराम कहै है हद रहित बल और पराक्रम कौं सुनि कैं और गरजनो कौं सुनि कैं दिग्गज विपत्ति मैं परै है, दिग्गज कै भय होय है शत्रुसाल के सपूत भावसिंह तेरे दिये हलकानि को उँचाई कवि राजन की बुद्धि मैं बरनी है, भ्रमरनि के समूह हाथीन के कपोलनि सें उडि उडि के चन्द्रमा को अमृत पीसै है। इहाँ करटो कपोलनि कौं उडपति के जोग किये यातैं सबधातिशयोक्ति है ॥ १६१ ॥

अथ द्वितीय सबधातिशयोक्ति उदाहरण कवित्त।

चरन धरै न भूमि विहरै तहाई जहाँ फूले फूले फूलन बिछायो परजंक है। भार के डरनि सुकुमारि चारु अगनि मैं करत न अंगराग कुकुम को पक है ॥ कहै मतिराम देखि वातायन बीच आयो आतप मलीन होत वदनमयक है। कैसैं वह बाल लाल बाहरि बिजन आवै बिजन-बयार लागि लचकत लक है ॥ १६२ ॥

भूमि में पग नहीं धरै है तहाही डोलै है जहां फूले फूले फूलनि सों पलग बिछायो है। बोझ के डर से सुकुमारी है सो अगनि में केसर के पक को अगराग नहीं करै है। मतिराम कहै है झरोखान के बीच में तावडो आयो देखि कै मुख चन्द्रमा मलीन होय है हे लाल वह बाल एकली बाहिर कैसें आवै बिजना को पवन लगने सें लचकति है। इहां लक पखा की पवन सहन जोग है ताको अजोग करो यातैं दूसरो सबंधातिशयोक्ति है॥

पुन कवित्त।

अगनि उतग जग जैतवार जोर जिन्है चिक्करत दिक्करि हलत कलकत हैं। कहै मतिराम सैन सोभा के ललाम अभिराम जरकस झूल झॉपे झलकत हैं॥ सत्ता को सपूत राव भाव सिंह रीझि देत कहू ऋतु छके मदजल छलकत हैं। मगन की कहा है मतगनि के मॉगिये को मनसबदारनि के मन ललकत हैं॥ १६३॥

ऊचे अगनि के, जगनि के जीतिवेवारे, जोरवारे जिनके चिक्कार तैं दिग्गज हैं सो हलते हैं, कलकते हैं सत्तुसाल को सपूत राव भावसिंह है सो रीझि कै देत है जो कहूं ऋतु में मस्त हुये मद के जल कौं पटकै है तिन क। मॉगिबे कौं मागवेवारेन को कहा चलो है,

के मन ललचावे है । इहा दिग्गज हाथीन की बराबरी नहीं पावें और मनसबदार जाचकन की बराबरी नहीं पावें, यह जोग कों भजोग कियो यातें संबधातिशयोक्ति है।

अक्रमातिशयोक्ति लक्षण दोहा ।

जहाँ हेतु अरु काज मिलि होत एकही अग ।
अक्रमातिशयउक्ति तहँ वरनत कवि रसरग ॥

जहा कारण और कारज मिलि के एकही अंग होय तहा अक्रमातिशयोक्ति रसरग कवि बरनते हैं । १६४ ॥

उदाहरण कवित्त ।

जूथपति पैठ्यो पानी पोषत प्रबलमद क लभ करेनुकनि लीनें सग सुख ते । याह गह्यो गाढे बैर पीछलि के याढे भयो बलहीन विकल करन दीह दुख ते ॥ कहै मतिराम सुमरतही स-मीप लखे ऐसो करतूति भई साहिब सुरुख ते । दोऊ बातें छूटी गजराज की बराबरही पाँव याह-मुख ते पुकार निजमुख ते ॥ १६५ ॥

जूथनाथ है सो पानी में धस्यो प्रबल मद सों पुष्ट भयो बच्चा हथनीन कों सुख में साथ लिये गाढे ग्राह नें पकर्यो पीछले बैर के बढ़ने सें विकल करवेवारे दुःख सें बलहीन भयो, मतिराम कहे है सुमरते ही नज़ीक देखे ऐसी क रतव्यता भई स्वामी की पुष्ट नजर सें गजराज की दोनू

बात बराबरि ही छूटो ग्राह के मुख सैं पग निज मुख सैं पुकार, यहां पुकार कारन है छूटिबो कारज है सो सग भये याते अक्रमातिशयोक्ति है ॥ १६५ ॥

चञ्चलातिशयोक्ति लक्षण - दोहा ।

बरनत हेतु प्रसक्ति ते उपजत है जहँ काज ।
चञ्चलातिशयउक्ति तहँ बरनत हैं कविराज ॥

कारन को प्रसङ्ग बरन तें जहाँ काज उपजै तहां कविराज हैं सो चञ्चलातिशयोक्ति बरनते है ॥ १६६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

वारि के विहार वरवारन के बोरिबे कौं वारि चर बिरची दूलाज जय काज की। कहै मतिराम बलवन्त जलजन्तु जानि दूर भई हिम्मति दुरद सिरताज की॥ असरन-सरन के चरन सरन तकी त्यौंही दीनबन्धु निज नाम की सुलाज की। धाये रति मान अति आतुर गुपाल मिली बीचि ब्रज-राज की गराज गजराज की ॥ १६७ ॥

जल के विहार में सुन्दर हाथी के डुबायबे कौं ग्राह नै जय काज को उपाय रच्यो मतिराम कहै है जल जीव कौं बलवान जानि कै हाथीन के सिरताज की जु रति दूरि भई असरनसरन के चरननि कौं सरन विचारे तैसेही दीनबन्धु नै अपने नाम की सुष्ट लाज कीनी गुपाल इतनें

अति जलदी दौड़े गजराज कौं अध बीचि में गजराज की अवाज मिली। इहाँ पुकार कारन के प्रसङ्ग से ही अर्थ को चलिबो कारज भयो यातें अक्रमातिशयोक्ति है ॥ १६७ ॥

दोहा।

सतरौहीं भौंहनि नहीं दुरत दुराये नेह ।
होत नाम नँदलाल के नीपमाल सी देह ॥१६८॥

करड़ो भौंहनि से छिपाये से नेह नहीं छपे, नन्दलाल के नाम से कदम्ब के फूलन को माला सी देह होत है अर्थात् रोम सहित होय हैं इहाँ नन्दलाल कारन के नाम से ही रोम हर्ष कारज भयो यातें अक्रमातिशयोक्ति है॥१६८

अत्यन्तातिशयोक्ति लक्षण—दोहा।

होत हेतु पीछे जहाँ होत प्रथमही काज ।
अत्यन्तातिशयोक्ति तहँ वरनत सब कविराज ॥

जहाँ कारन पाछे होय कारज पहिले होय तहाँ सब कविराज अत्यन्तातिशयोक्ति बर्नते हैं ॥ १६९ ॥

उदाहरण कवित्त।

जीते जोर जङ्ग अति अतुल उतङ्ग तन दूनी श्यामरङ्ग छवि छपटनि छाये तें। कहै मतिराम नभ-नदी के कुसुम सम उड़े उडगन सुण्ड अनिल उड़ाये तें ॥ मदजल-धार बरषत जिमि धाराधर धक्कनि सौं धुकैं धरनि धर धाये तें।

आवैं कविराज ऐसे पावैं गजराज राव भाव सता-
सुत सौं अगार गुन गाये तें ॥ १७० ॥

अति जबर सग्राम के जीते हुये अमित ऊँचे तन के श्यामरंग को दूनो छवि है भौंरानि के छाये से मतिराम कहै है नभ को नदी के सुमनन को समान तारा उडै हैं सुण्ड को पवन के उडाये से मद काजल की धार कों पटकै हैं धाराधर की तरह चक्कान सौं और दौडवासौं धरनी धर पर्वत और धरनी झुकै है अथवा शेषादिक झुकै है कवि राज आवें ते ऐसे हाथी पावैं शत्रुशाल के सुत राव भावसिंह के गुन गाये से पहिले इहाँ गुन गायबो कारन पीछे है गज पायबो कारज पहिले है यातें अत्यन्तातिशयोक्ति है ॥

अथ तुल्ययोगिता लक्षण — दोहा।

जहाँ अवर्ग्यन को धरम कै वर्ग्यन को एक ।
तुल्ययोगिता कहत हैं तहाँ सुबुधि विवेक॥१७१॥

उपमाननि को धर्म्म अथवा उपमेयनि को एक होय तहाँ तुल्ययोगिता कहते हैं सुमति है सो ज्ञान से ॥१७१॥

अवर्न्यनि को उदाहरण—कवित्त।

सूबनि कौं मेटि दिल्ली देश दलिवे कौं चमू
सुभट समूह निशि वाकी उमहति है । कहै म-
तिराम ताहि रोकिबे कौं संगर मैं काहू के न
हिम्मति हिये मैं उलहति है ॥ शत्रुशाल नन्द के

प्रताप की लपट सब गरबी गनीम बग्गीन कौं दहति है । पति पातसाह की इज्जति उमरावन की राखी रैया राव भावसिंह की रहति है॥१७१॥

सूबान कों बिगारि के दिल्ली का देस बिगाड़ वाकौं चौधान वागन की फौज सेवा राजा की उमगीहै मतिराम कहै है ताके रोकिबे कों सग्राम में कोई के हिया में साहस नहीं उठे है। सत्रुस ल के सुत के प्रताप की फल सब गर्बवारे बैरी समूहनि कौं जलावे है पातसाह की आवरु उमरावन की आवरु राजान के राजा भावसिंह की राखी रहै है। इहाँ पातसाह उमराव सग्राम में योग्य नहीं यातें अवर्न्य है तिनकी पति राखिबो एक धर्म है यातें प्रथम तुल्ययोगिता है अथवा पातसाह के पति उमरावन की इज्जति अवर्ण्य है भावसिंह वर्ण्य है पति इज्जति को राखिबो एक धर्म है यातें तुल्ययोगिता है ॥ १७२ ॥

वर्न्यन को उदाहरण - दोहा।

अभिनव जोवन जोति सौ जगमग होत बिलास।
तिय के तन पानिप बढ़ै पिय के नैननि प्यास॥

सब तरह नवीन जोबन की जोति सौं बिलास जगमग होते है तिय के शरीर से जोति बढ़े है पिय के नैननि में प्यास बढ़े है इहाँ तन पानिप नैन प्यास वर्न्य है तिनको बढिबो एक धर्म है यातें तुल्ययोगिता है। १७३ ।

वनिताभूषन, लक्षिता प्रथम तुल्ययोगिता उदा० दोहा।

नैन बैन विकलात हैं आली तेरे आज ।
क्यों मुकरत मुखलखि लगत शशिकञ्जन मनलाज॥

अथ द्वितीय तुल्ययोगिता लक्षण—दोहा।

जहँ हित मैं अरु अहित मैं वरनत वर्न्यहि तूल।
तुल्ययोगिता और तहँ कहत सुकवि मति मूल॥

जहाँ हितू मैं और अहितू मैं वर्न्य कों बराबरि बरनै तहाँ तुल्ययोगिता और कहत है मति के मूल सुकवि हैं ते॥ १७४॥

उदाहरण दोहा।

जे निशि दिन सेवन करैं अरु जे करै विरोध ।
तिन्हैं परम पद देत हरि कहो कोन यह बोध॥

जे राति दिन सेवा करै है और जे बैर करते है तिन कों हरि परम स्थान देते है कहो यह कौन ज्ञान है इहाँ सेवक शत्रु मैं हरि वर्न्य कों समान बरनै यातैं तुल्ययोगिता याको एक भेद और भी है॥ १७५॥

अथ दीपक लक्षण—दोहा।

वर्न्य अवर्न्यनि को जहाँ धरम होत है एक ।
बरनत हैं दीपक तहां कवि करि विमल विवेक॥

जहा वर्न्य अवर्न्यन को। धर्म एक होय तहाँ दीपक बरनते है कवि है सो निर्मल ज्ञान करिकै॥ १७६॥

उदाहरण—दोहा।

चञ्चल निशि उदवस रहैं करत प्रात वसि राज।
अरविन्दनि मैं इन्दिरा सुन्दर नैननि लाज॥१७७॥

दोनौं चञ्चल होय के राति मैं उजड़ी रहै हैं प्रात होते ही वसिकै राज करती हैं। कमलनि मैं लक्ष्मी नायिका के नैननि मैं लज्जा इहाँ इन्दिरा अवर्ण्य लाज वर्ण्य को उदवस रहबो वसिबो एक धर्म है यातैं दीपक है॥ १७७॥

अथ दीपकावृत्ति लक्षण - दोहा।

जहँ दीपक मैं होत है आवर्तन को जोग।
त्रिविधि कहत आवृत्तिजुत दीपक सब कवि लोग॥

जहाँ दीपक मैं आवर्तन को जोग होत है तहाँ सब कवि लोग तीन तरह आवृत्तिदीपक कहत हैं अर्थात् शब्द की अर्थ की शब्दार्थ की॥ १७८॥

शब्दावृत्ति उदाहरण—दोहा।

जागत हौ तुम जगत मैं भावसिंह की वान।
जागत गिरिवर कन्दरनि अरिवर तजि अभिमान॥

हे भावसिंह दीवान तुम जगत मैं जागते हौ तुम्हारे बैरी सुन्दर अभिमान छोड़िकै गिरिनि की सुन्दर कन्दरान मैं जागते हैं इहाँ जागत जागत शब्द दोय वार है तिनको अर्थ सचेत शोभित और निद्रा त्याग न्यारो न्यारो है यातैं शब्दावृत्ति है॥ १७९॥

अर्थावृत्ति उदाहरण – दोहा।

लखो लाल तुमकौं लखत यौं विलास अधिकात।
विहँसत ललित कपोल हैं मधुर नैन मुसकात॥

देखो लाल आपकौं देखतैं ऐसे आनन्द अधिकाते हैं सुन्दर कपोल विहसते हैं मधुर नैन मुसकाते हैं इहां विहसत मुसकात अर्थ की आवृत्ति है यातैं अर्थावृत्तिदीपक है॥

अथ शब्दार्थावृत्ति उदाहरण – कवित्त।

मन्दर बिलन्द मन्दगति के चलैया एक पल मैं दलैया पर दल बलखानि के। मदजल झरत झुकत जरकस झूल झालरिनि झलकत झुंड मुकुतानि के॥ ऐसे गज बकसे दिवान दुहू दीननि कौं मतिराम गुन बरनैं उदार यानि के। फौज के सिँगार हाथी और महीपालन के मौज के सिँगार भावसिंह महादानि के॥ १८१॥

मन्दराचल से ऊचे हैं मन्द चाल के चलनेवाले हैं एक पलक मैं बल को खानि शत्रुन के दलन के दलनेवाले हैं मद का जल झरे है जरी को झूल झुके है तिनको झालरिन मैं मोतिन के समूह झलकैं है ऐसे हाथी दीवान ने हिन्दू मुसलमानन कौं दीने मतिराम कहै है दानी हाथ के गुन गाये से और राजान के हाथी फौज के सिँगार हैं भावसिंह महादानी के हाथी मौज के सिँगार हैं यहां

सिंगार सिँगार शब्द अर्थ की आवृत्ति है यातें दीपकावृत्ति है ॥ १८१ ॥

कवित्त ।

सकल सहेलिन के पीछे पीछे डोलति है मन्द मन्द गौन आजु आपही करत है। सनमुख होत सुख होत मतिराम जब पौन लागे घूँघट के पट उघरत है ॥ जमुना के तट बंशीवट के निकट नन्दलाल पै सँकोचन से चाह्यो ना परत है। तन तो तिया को वर भाँवरे भरत मन साँवरे बदन पर भाँवरे भरत है ॥ १८२ ॥

सम्पूर्ण सहेलिनि के पाछे पाछे डोलै है मन्द मन्द गौन आज आपुही करती है श्याम के सन्मुख होती सुख होय है जब वायु लगने से घूँघट को वस्त्र उघरै है जमुना के तट पै बंशीवट के नजीक नन्दलाल पै सकोच से देख्यो नहीं परै है तिया को शरीर तो वर की भाँवरि भरै है मन है सो साँवरे मुख की भामरि भरै है इहां भाँवरे भरत भाँवरे भरत शब्द अर्थ की आवृत्ति है यातें दीपकावृत्ति है॥१८२॥

अथ प्रतिवस्तूपमा लक्षण—दोहा ।

पद समूह जुग धर्म्म जहँ भिन्न पदनि सो एक ।
परगट प्रतिवस्तूपमा तहँ कवि कहत अनेक ॥

जहां दोय पदसमूह नाम वाक्यन को एक धर्म होय

। न्यारे न्यारे पदनि सौं तहां प्रगटही प्रतिवस्तूपमा बहुत कवि कहते हैं ॥ १८३ ॥

उदाहरण कवित्त।

शङ्कर कौं ध्याय सरस्वती कौ रिझाय सीस शेषज्र की पाय मति अति सरसाय कै। कहै मतिराम शत्रुशालनन्द भावसिंह तव कोऊ सकै तेरे गुननि गनाय कै ॥ औरनि के औगुननि तचि कविजन राव होत है सुखित तेरी किर्ति सर न्हाय कै। खाय कै अँगार आँच औटि कै चकोरगन होत हैं मुदित चन्द चाँदनी कौं पाय कै ॥१८४॥

शिव कौं ध्याय कै सरस्वती कौं रिझाय कै शेषनागहू की सीख कौं पाय कै बुद्धि कौं अत्यन्त बढाय कै मतिराम कवि कहै है हे शत्रुशाल के सुत भावसिंह तव कोई तेरे गुनन कौं गनाय सकै अर्थात् शिव गिरा शेष की कृपा होय तब गुन गिनि सकै हे राव भावसिंह कवि लोग हैं सो और के औगुनन सौं तचि कै नाम दुखित होय कै तेरी कीर्त्ति मैं भलो प्रकार न्हाय कै सुखी होते हैं अथवा किर्त्ति सर पाठ होय तौ कीतिरूपी तलाव मे स्नान करिकै सुखी होते हैं अग रखाय कै ताकी आँच सैं सीझि कै चकोरगन हैं सो चन्द की चाँदनी कौं पाय कै प्रसन्न होते हैं यहा तीसरी तुक में उपमेय वाक्य है चौथी तुक में उपमान वाक्य है तिनको सुखित मुदित हो वो धर्म एक है, पद न्यारे न्यारे हैं यात प्रतिवस्तूपमा है ॥ १८४ ॥

दोहा।

पिसुन वचन सज्जन चितै सकै न फोरि न फारि।
कहा करै लगि तोय मैं तुपक तीर तरवारि ॥

मोचन को वचन सज्जन को चित्त कौन फोरि सकै न फारि सकै बन्दूक सर खड़्ग जल मैं लगि कै कोई करै दोहा को पूर्वार्द्ध मैं उपमेय वाक्य है तामैं फोरि फारि न सकै यह धर्म है और उत्तरार्द्ध मैं उपमान वाक्य है तामैं कहा करै यह धर्म है अर्थात् फोरि फार न सकै यह अर्थ एक है पद न्यारे न्यारे हैं यातैं प्रतिवस्तूपमा है। ।८५।

भूषण चन्द्रिका।

अर्थावृत्तिदीपक प्रस्तुत प्रस्तुत को अथवा अप्रस्तुत अप्रस्तुत को होय। प्रतिवस्तूपमा प्रस्तुत अपस्तुत को होय यह विशेष है आवृत्तिदीपक वैधर्म्य करि न होय प्रतिवस्तूपमा वैधर्म्य करिके भी होय ताके—

उदाहरण—दोहा।

बुधही जानत बुधन को परम परिश्रम ताहि ।
प्रबल प्रसव की पीर को वन्ध्या जानै नाँहि ॥१॥
गुणी वंश भवहू मनुज पुजै सुसगति पाय ।
तुम्बी विन जग मान नहि वीणा दण्ड लहाय॥

अथ दृष्टान्त लक्षण—दोहा।

पदसमूह जुग धर्म जहँ जिमि विम्बहि प्रतिबिम्ब।
सुकवि कहत दृष्टान्त है जे मन दर्पन विम्ब ॥

जहां दोय पदसमूहनि को धर्म्म बिम्ब प्रतिबिम्ब होय तहां मन दर्पन के बिम्ब सुकवि दृष्टान्त कहत हैं ॥१८६॥

उदाहरण—दोहा।

पगी प्रेम नन्दलाल के हमें न भावत जोग ।
मधुप राजपद पाय कै भीख न मागत लोग ॥

नन्दलाल के प्रेम में पगी हैं हमकों जोग नहीं भावै है मधुप ऊधो राजपद पाय के लोग भीख नहीं मागें इहाँ पुर्वार्द्ध दोहा को बिम्ब है उत्तरार्द्ध प्रतिबिम्ब है यातें दृष्टान्त है। १८७॥

सवैया।

भोज बली रतनेश भये मतिराम सदा जस चाहनही में । नाथ सता समरत्थ दुहूनि दले धरि तेज सों ताडनही में ॥ भाऊ नरिन्द कि धाक धुके अरि जाय गिरे गिरि गाडनही में । जीति महीपति हाडनिही महँ जोति दधीच के हाडनही में ॥ १८८ ॥

भोज और बली रत्नेश हैं सो मतिराम कहै है सदा जस के चढावही में भये गोपीनाथ और प्रतुसाल दोनों समर्थनि ने बैरी मारे तेज सों ताडना नहीं में राजा भाव सिंह की धाक सें धुके हुये रिपु गिरिन का खडान मेंही जाय गिरे जीति हाडा राजान मेंही है जोति है सो दधीच

का द्दाहनही में है इहां कीति महीपति द्दाहनिही मधि बिम्ब है कोति दधीच के द्दाहनिहो में यह प्रतिबिम्ब है याते दृष्टान्त है ॥ १८८ ॥

भूषनचन्द्रिका ।

यह ह्रु वैधर्म्य करिकै होय है ताको—

उदाहरण –दोहा ।

गर्व समुख मन करत तुव अरिगन सकल नसात।
जबलौं रवि को उदय नहि तबलौं तम ठहरात॥

अथ निदर्शना लक्षण –दोहा ।

सदृश वाक्य जुग अर्थ को जहँा एक आरोप ।
बरनत तहाँ निदर्शना कबिजन मति अति ओप।

समान होय वाक्यन का अर्थ को जहां एक आरोप होय तहां निदर्शना वर्णते है अति मति की ओप के कवि लोग है ते ॥ १८६ ॥

उदाहरण—सवैया ।

जो गुन वृन्द सतासुत में कलपद्रुम मै सो प्रसून समाजै । कीरति जो मतिराम दिवान में चन्द मै चाँदनी सौ छवि छाजै ॥ राव में तेज को पुञ्ज प्रचण्ड सो आतप सूरज मै रुचि साजैं। जो नृप भाऊ के हाथ कृपाम सो पारथ के कर बान बिराजै ॥ १९० ॥

जो अनुभाल के सुत में गुननि के समूह है सो कल्प द्रुम में फूलनि के समूह है मतिराम कहै है जो दिवान में कीर्ति है सो चन्द्रमा में चाँदनी छवि छाजे है राव में जो प्रचण्ड तेज को पुञ्ज है सो सूरज में घाम रुचि छाजे है जो राजा भावसिंह का हाथ में कृपाण है सो पारथ के हाथ में बान विराजे है इहाँ चारोंतुकनि के पूर्वार्द्ध में उपमेय वाक्य है उत्तरार्द्ध में उपमान वाक्य है तिन दोनून को गुन प्रसून को रति चाँदनी तेजघातप कृपानवान पदनि करि एकता है यातें निदर्शना है ॥ १८० ॥

द्वितीय निदर्शना लक्षण—दोहा।

जहँ वरनन पद अर्थ को वरनत हैं कविराज ।
निदरसना यह दूसरी वरनत विबुधसमाज ॥

जहां पद अर्थ को वर्नन कविराज वरनते हैं तहाँ दूसरी निदर्शना पण्डित के गन वरनते हैं अर्थात और को अर्थ और में कहै ॥ १८१ ॥

उदाहरण—दोहा।

जब कर गहत कमानसर देत परनि को भीति।
भावसिंग में पाइये तव अर्जुन की रीति ॥१८२॥

जब हाथ में कमान सर पकड़े है और वैरीन कों भय देत है तव भावसिंह में अर्जुन की रीति पावे है, इहाँ अर्जुन की वाम विद्या भावसिंह में ठहराई यातें द्वितीय निदर्शना है ॥ १८२ ॥

तृतीय निदर्शना लक्षण—दोहा।

करत असत सत अर्थ को एक क्रिया सौं बोध।
निदरसना यह औरऊ कहत सुकवि मतिसोध ॥

बुरा भला अर्थ को एक क्रिया सौं बोध करै यह और भी निदर्शना कहते हैं सुकवि मति के सोध हैं ते ॥ १८३ ॥

असत दोहा।

मधुप त्रिभंगी हम तजी प्रगट परम करि प्रीति।
प्रगटकरत सब जगत मैं कटु कुटिलनि की रीति॥

गोपीन की उक्ति, उक्ति उद्धव सें है मधुप त्रिभंगी ने हम कों तजी प्रगट हो परम प्रीति करिकै सब जगत में कड़वा कुटिलन की रीति प्रकट करत है इहाँ प्रीति करिकै छोड़ बो असत अर्थ है ताको कुटिलन की रीति कहिकै बोध कियो यातैं निदर्शना है ॥ १८४ ॥

सत दोहा।

हरिमुख लखि लोचनसखी सुख में करतबिनोद।
प्रगट करत कुवलयन को चन्द्रोदय तैं मोद १८५

हे सखी हरि का मुख कौं देखि के लोचन हैं सो सुख मैं विनोद करते है सें चन्द्रमा के उदय सें कुमोदिनीनि को हर्ष प्रगट करत हैं इहाँ लोचन सुख सत अर्थ को कुमोदिनी नि के मोद सें प्रगट कियो याते निदर्शना ॥ १८५ ॥

अथ व्यतिरेक लक्षण—दोहा ।

जहँा होत उपमान ते उपमेय मे विशेष ।
तहा कहत व्यतिरेक हैं कविजन मति उल्लेख ॥

जहाँ उपमान से उपमेय में विशेष होय तहाँ व्यतिरेक कहते हैं कवि लोग मति के अधिक है तें ॥ १८६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

वडे-वस-अवतस रावभावसिह तेरे घडे तेज तये गये देशपती दवि हैं । कहे मतिराम वडी किति उमडाई याते सकल वडाई आज तो मैं रही फवि हैं ॥ सुनिये पुराननि में जवूदीप वडो एक जंवू-तरु जामैं फल हाथिन की छवि है । ताहू ते वडो है तेरो कर काम तरु जासो वडे करिवर फल पावत सुकवि है ॥ १८७ ॥

हे वडे वस के सिरोमणि राव भावसिह तेरे वडे तेज सें तये हुये देशपति दवि गये है मतिराम कहे है वडी कीर्ति फैलाई जासौ आज सपूर्ण तोमें सोभे है पुरानन में एक जवू दीप वडो सुनिये है जामे एक जामूनि को वृक्ष है जामें हाथीन को समान फल है। तास भी तेरो कर कल्प वृक्ष वडो है जासौं वडे हाथो फल सुकवि पावे है,इहा जवू तरु उपमान से हाथ उपमेय वडो है याते व्यतरेक है १८०

वनिताभूषण दोहा ।

उपमान रु उपमेय में वै लक्षण व्यतिरेक ।
अधिकन्यून समभाव करि ताको त्रिविधिविवेक।

अथ स्वकीया मानिनी अधिक व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

लखि पियविनती रिसभरी चितवै चचल भाय ।
तब खंजन से दृगन में लाली अति छवि छाय ॥

अथ परकीया मानिनी न्यून व्यतिरेक उदाहरण दोहा।

सापराध लखि पियहि तिय जब दृग देत नवाय।
तब खञ्जन से चखन मैं चचलता न रहाय ॥३॥

अथ गनिका मानिनी सम व्यतिरेक उदाहरण दोहा ।

साग सलखि धनदानि कौं मौन गहै मन मारि।
तब शशि सो मुखबाल को लखि सोचै सखि हारि ॥

अथ सहोक्तिलक्षण दोहा ।

काज हेतु को छोड़ि जहँ औरनि के सह भाव ।
वरनत तहाँ सहोक्ति हैं कविजन बुद्धिप्रभाव ॥

जहां कारज कारन कौं छोडि के औरनि के साथ ही
होय तहा सहोक्ति बरनते हैं कवि लोग है सो बुद्धि के
प्रभाव सैं अर्थात कारज कारन को साथ होय तौ सहोक्ति
नहि । १९८ ॥

उदाहरण कवित्त ।

महावीर राव भावसिंह को प्रताप साथ जस

कैं पहूच्यौ श्रोर दसहू दिसानि कैं। दल कैं चढत फनमंडल फनीपति को फूटि फाट जात साथ सैल की सिलानि के॥ दुज्जन के गन कलपद्रुम कैं बागनि में करत बिहार साथ सुरप्रमदानि के। संपति कैं साथ कवि सौधनि बसत बन दारिद बसत साथ बैरी-बनितान के ॥ १९९ ॥

महा सूर राव भावसिंह को प्रताप है सो जस के साथ दसौं दिसान के श्रोर में पहुँच्यो फौज के चलें तें नागपति को फनमंडल है सो फूटि फाट जाय है पर्वत की सिलान के साथ दुर्जनन के समूह कल्पद्रुमन कें बागनें में विहार करते हैं देवागनानि के साथ, कवि है सो सपति के साथ महलनि में बसते हैं दारिद है सो रिपु स्त्रीन के साथ बन में बसे है इहाँ प्रताप जस के साथ पहुचने से फनसिलान के साथ फूटने सें दुर्जन सुर स्त्रीन के साथ बिहार सें सपति के साथ कबिन के बसनें सें दारिद रिपु स्त्रीन के साथ बसने सें राजा भावसिंह को मनोहर वर्नन है यातें सहोक्ति है। १९९ ॥

अथ विनोक्ति लक्षण दोहा।

जहँ प्रस्तुत कछु बात बिन कै नीको कै हीन ।
बरनत तहाँ विनोक्ति हैं कवि मतिराम प्रवीन ॥

जहा प्रासगिक कछु बात बिना हीन होय कै कछू बिना

हो न विना तहा विनोक्ति बरनते हैं कवि मतिराम कहै है प्रवीन हैं ते ॥ २०० ॥

उदाहरण दोहा ।

विषयनि ते निर्वेदवर ज्ञान योग व्रत नेम ।
विफल जानिये ये विना प्रभुपदपंकजप्रेम ॥२०१॥

विषैन सों निर्वेद सुदर ज्ञान योग व्रत नेम ये सब विफल जानिये प्रभु के चरणकमलन के प्रेम बिना इहा निर्वेदादि प्रस्तुत हैं ते हरिपदप्रेम विना हीन हैं याते विनोक्ति है ॥ २०१ ॥

द्वितीय विनोक्ति दोहा ।

देखत दीपति दीप की देत प्रान अरु देह ।
राजत एक पतंग में विना कपट को नेह ॥२०२॥

दीप की दीपति देखतें ही प्रान और देह देत है एक पतंग में बिना कपट को नेह राजै है। इहाँ पतंग प्रस्तुत कपटहीन शोभित है यातें दूजी विनोक्ति है। २०२ ॥

समासोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ प्रस्तुत में होत है अप्रस्तुत को ज्ञान ।
समासोक्ति तहँ कहत हैं कविजन परम सयान ॥

जहा प्रासंगिक में अप्रसंग को ज्ञान होय तहा समासोक्ति कहते हैं कवि लोग अति सयाने हैं ते ॥ २०३ ॥

उदाहरण कवित्त ।

चिन्ता में चितै कै सब सुधि विसरावत है

मंडल बिमल तेरे सुख द्विजराज को । सोयवे कौं साजत सरस परजंक तेरी स्यामअंग छबि इन्दीवर की समाज को ॥ कवि मतिराम काम बाननि सौं वेध्यो यौं जु दुःख भयो सकल समूह सुख साज को । कहा कहौं लाल तलावेली की तलफ पर्यो बाल अलबेली को वियोगी मन लाज को ॥ २०४ ॥

तेरे सुख चन्द्रमा के निर्मल मंडल कौं देखि कै चिन्ता मैं सब सुधि कौं बिसरावे है सो वाके वास्ते तेरी स्यामांग छबि समान नील कमलनि की समाज को परजंक साजतैं मतिराम कवि कहै है कामदेव ने बाननि सौं यौं वेध्यो जो सुख का साज को समूह सब दुःख रूप भयो है लाल मैं काँई कहौं अलवेली बाल को लाजवालो वियोगी मन तला वेलो की तड़फ मैं पड्यो है इहाँ कृष्ण का सुख श्यामांग शोभा की बड़ाई प्रासंगिक है तामैं बाल वियोग सैं दुखी है यह अप्रासंगिक त्यौं यातैं समासोक्ति है ॥२०४॥

बनिता भूषन, परकीया प्रोषितपतिका समासोक्ति

उदाहरण दोहा ।

उद्धव देखहु अलि यहै है कपटी वे वीर ।
तजि वर बिमला मालती सेवत कली करीर

अथ परिकर तथा परिकरांकुर लक्षण दोहा।

साभिप्राय विशेषननि सो परिकर मतिराम।
साभिप्राय विशेष्य तें परिकर-अंकुर नाम॥२०६॥

विशेषण पद अभिप्राय सहित हैं मतिराम कहै है सो परिकर है, विशेष्य पद अभिप्राय सहित सैं परिकरांकुर नाम है॥ २०६॥

परिकर उदाहरण कवित्त।

समर कै सिंह शत्रुशाल के सपूत सईजहि व कसैया सदसिंधुर मदंध के। मतिराम चारिहूं समुद्रनि की कूलनि लौं फैलत समूह तेरे सुजस सुगंध के॥ जगत बखानी चहुवानी सुलतानी और नहीं अवनी मैं अवनीप समकंध के। तो मैं दोऊ देखिये दिवान भावसिंह चहुवान कुल-भानु सुलतान बलावंध के॥ २०७॥

हे संग्राम के सिंह शत्रुशाल के सपूत सहनशी मैं मद के अंध सौ नवीन हाथीन के बकसैया मतिराम कहै है च्यारौं समुद्रनि के किनारान ताईं तेरे सुजस की सुगंध के समूह फैलैं है जगत में चहुवानो और सुलतानो बखानी है और पृथ्वी मैं राजा तेरे समान कंध के नहीं है हे दिवान भावसिंह तो मैं दोनू देखिये हैं, हे चहुवान कुल के भानु बलावंध के सुलतान यहां चहुवानी सुलतानी दोनू विशे

पच पद हैं जिनमैं चहुवानो चार भुजावानी सुलतानी वा
दसाही ये दो आशय है जिनसैं और राजा भावसिंह की
बराबरी के नहीं अर्थात चहुवान जो यज्ञकुंड मैं सौं चार
भुजा वान निकसे जाते उनके बंश के चहुवान बाजे और
ये बला बध पर्वत के बादसाह हैं याते परिकर ॥ २०७ ॥

पुन दोहा ।

क्यौ न फिरै सब जगत मै करत दिगबिजै मार।
जाके दृग-सामत हैं कुवलय जीतनहार ॥ २०८ ॥

काम है सो सब जगत में दिगबिजय करतौ क्यों नहि
फिरै जाके नैन सामत है सो कुवलयन कौं जीतिवेवारे हैं
इहा कुवलय विशेषण पद में पृथ्वीमडल को जीतिवो अ
भिप्राय निकस्यौ यातैं परिकर है ॥ २०८ ॥

बनिता भूषन गनिका प्रोषित पतिका परिकर

उदाहरण दोहा ।

पाती पीतम धनद की बाँचत प्रिया प्रवीन ।
लखि २ हिमकर वदन सैं सखिगन सीतल कीन ॥

परिकराकुर उदाहरण दोहा ।

देखें वानिक आजु की वारौं कोटि अनग ।
भलो चलो मिलि साँवरे अग-रग प्रट-रंग ॥ २०६ ॥

चलो नायिका देखि के प्रसन्न होयगी खडिता को
सखी को उक्ति । है सावरे आज को बानिक देखैसैं कोटि

अथ परिकर तथा परिकरांकुर लक्षण दोहा।

साभिप्राय विशेषननि सो परिकर मतिराम।
साभिप्राय विशेष्य तें परिकर-अंकुर नाम॥२०६॥

विशेषण पद अभिप्राय सहित हैं मतिराम कहै है सो परिकर है, विशेष्य पद अभिप्राय सहित सैं परिकरांकुर नाम है॥ २०६॥

परिकर उदाहरण कवित्त।

समर कौ सिंह शत्रुशाल को सपूत सहजहि व-कसैया सदसिंधुर मदंध के। मतिराम चारिहूं समुद्रनि की कूलनि लौं फैलत समूह तेरे सुजस सुगंध के॥ जगत बखानी चहुवानी सुलतानी और नहीं अवनी मैं अवनीप समकंध के। तोँ मैं दोऊ देखिये दिवान भावसिंह चहुवान कुल-भानु सुलतान बलावंध के॥ २०७॥

हे संग्राम के सिंह शत्रुशाल के सपूत सहजही मैं मद के अंध सो नवीन हाथीन के बकसैया मतिराम कहै है चारौं समुद्रनि के किनारान ताईं तेरे सुजस की सुगंध के समूह फैलै है जगत में चहुवानी और सुलतानी बखानो है और पृथ्वी मैं राजा तेरे समान कंध के नहीं है हे दिवान भावसिंह तो मैं दोनू देखिये हैं, हे चहुवान कुल के भानु बलावंध के सुलतान यहा चहुवानी सुलतानी दोनू विशे

पच पद हैं जिनमें चहुवानो चार भुजावानी मुलतानी बा दशाही ये दो आशय हैं जिनसैं और राजा भावसिंह की बराबरी के नहीं अर्थात चहुवान जो यज्ञकुंड में सों चार भुजा वान निकसे जाते उनके वंश के चहुवान बाजे और ये बलाबंध पर्वत के बादशाह हैं याते परिकर ॥ २०७ ॥

पुन दोहा ।

क्यौं न फिरे सब जगत मैं करत दिगविजै मार।
जाके दृग-सामंत हैं कुवलय जीतनहार ॥ २०८ ॥

काम है सो सब जगत मैं दिगविजय करतो क्यों नहि फिरे जाके नैन सामंत है सो कुवलयन कौं जीतिवेवारे हैं इहा कुवलय विशेषण पद में पृथ्वीमंडल को जीतिवो अभिप्राय निकस्यौ यातैं परिकर है ॥ २०८ ॥

वनिता भूषन गनिका प्रोषित पतिका परिकर उदाहरण दोहा ।

पाती पीतम धनद की बाँचत प्रिया प्रवीन ।
लखि २ हिमकर बदन से सखिगन सीतल कीन ॥

परिकरांकुर उदाहरण दोहा ।

देखे बानिक आजु को वारौं कोटि अनंग ।
भलो चलौ मिलि साँवरे अंग-रंग पट-रंग ॥ २०९ ॥

चलो नायिका देखि कें प्रसन्न होयगी खंडिता को सखी की उक्ति । हे साँवरे आज को बानिक देखसें कोटि

काम देव वारौं घंग के रग मैं पट को रग मिलि गयो भलो यहा घग रग पटरग विशेष पदन मैं श्राश्रय है पर स्त्री को नीलपट यातैं परिकराङ्कुर है ॥ २०८ ॥

वनिताभूषन मुग्धा खडिता परिकराङ्कुर उदाहरण दोहा।

प्रात आय निशिवास को आन वतायो धाम ।
भाल लाल लखि लाल को वात न मानी वाम॥

अथ श्लेष लक्षण दोहा।

श्लेष कहावत है जहाँ उपजत अर्थ अनेक ।
प्रकृत अप्रकृत मिलिविविधि प्रकृता प्रकृत विवेक

अनेक अर्थ पैदा होय जहा श्लेष कहावै है प्रकृत अप्रकृत मिलि अप्रकृत अप्रकृत को प्रकृता प्रकृत को तीन तरह को ज्ञान है ॥ २११ ॥

प्रकृत को उदाहरण दोहा।

ललित राग राजत हिये नायक जोति विशाल ।
वाल तिहारे कुचन विच लसत अमोलिक लाल॥

आलिंगन करतो नायिका सैं सखी की उक्ति है बाल तुम्हारे कुचन के बीच मैं अमोलक लाल लसे है कृष्ण और रत्न, कृष्ण कैसो है हिया मैं सुन्दर अनुराग राजै है स्वामी है विशाल जोति है रत्न कैसो है सुन्दर रग भीतर राजै है हार के बीच मैं लग्यो है बडी जोति है इहा दोय अर्थ हैं और कृष्णलाल दोनू प्रासंगिक हैं यातैं प्रथम श्लेष है ॥२१२॥

अथ अप्रकृतश्लेष उदाहरण दोहा ।

कहा भयो जग मैं विदित भये उदित छविलाल।
तो ओठनि की रुचिर रुचि पावत नहीं प्रवाल ॥

जगत में प्रगटही लाल छवि के उदय भये तो काई भयो तेरे अधरन की सुन्दर रुचि कौं मूगा और नवीन पत्र नहीं पाते है इहा प्रवाल के दोय अर्थ मूगा नवीन पान ये दोनू अप्रकृत हैं यातैं द्वितीय श्लेष है । २१३ ॥

प्रकृताप्रकृत को उदाहरण कवित्त ।

छविजुत छीरधि तरगनि बढावत हैं जगत पसारत चमेली की सुवास कौं। कहै मतिराम कुमुदिनि के परागनि सौ सरस करत चारु चांदनो प्रकास कौ ॥ सबही के प्रान रूप हिय मैं बसत अति व्यापक ह्वै फैलि रह्यौ गगनि अकास कौं। राव भावसिंह जस रावरो करत दिशि विदिशि विहार गहैं वात के विलास कौ ॥२१४॥

हे राव भावसिंह तुम्हारो जस दिशा विदिशान मैं विहार कौं गहे हुवे पवन के विलास कौं करत है पवन कैसो है छविसहित दूध के समुद्र की लहरिन कौं बढावे है जगत में चमेली की सुगन्ध कौं फैलावे है मतिराम कहै है कुमुदिन के केसरान कौं अधिक करै है सुन्दर चादनी के प्रकाश कौं विशेष करै है सबही के हृदय में प्रानरूप होय

कै बसै है अति व्यापक होय कै पृथ्वी आसमान मैं फैलि रह्यौ है जस कैसो ह छबि सहित दूध के समुद्र की तरग समान है जगत में चमेली की शोभा कौं फैलावै है कुमुदिन के पराग कौं चादनी के प्रकास कौं सरस करै है सबहो के उर मैं प्रान समान बसै है पृथ्वी आकाश मैं अति व्यापक होय कै छाय रह्यौ है यहा जस बर्न्यो है पवन अ बर्न्यो है यातैं तृतीय श्लेष है ॥ २१५ ॥

पुन छप्पय ।

बसत जासु हिय बासुदेव पानिप अति छाजत ।
तजत न बर मरजाद परम गभीर बिराजत ॥
रतन सुतन अवलोकि लोक पतिमान सलुब्भहि
मुकुतरुपधरि सुजसन्तपति श्रवननि शुभशुब्भहि ॥
महिमा अपार मतिराम कहि जगत जगत सब घेरि तिमि । भुव भावसिंह भूपाल मनि रोज मौज दरियाव इमि ॥ २१६ ॥

ससार मैं राजान की मणि भावसिंह है सो नित्यही मौज को समुद्र ऐसे है जाके हिया मैं भगवान बसते हैं समुद्र मैं भगवान सौते है पानिप जो तेज अति छाजै है। समुद्र मैं पानो बहुत है। सुन्दर रीति कौं नहो छोडै है समुद्र कार कौं नहीं छोडै है राजा परम गभीर विशय शोभित है समुद्र बहुत चौडो है राजा का रत्न रूप सुतन कौं देखि करि कै लोकन के पतिन के मन लुभाये है समुद्र

के सुत रत्न हैं सुजस है सो मुक्तारूप धरि कैं राजान के कानन में शुभ शोभा पावै है । समुद्र में मोती उपजै हैं मतिराम कहै है तैसेही सब जगत कौं घेरि करिकै अपार महिमा जगमगावै है । समुद्र ने भी सब जगत कौं घेरि राख्यो है महिमा अपार है । तामें मच्छ अपार हैं यहां राजा प्रासंगिक है समुद्र अप्रासंगिक है यातें तृतीय श्लेष है॥

अथ अप्रस्तुत प्रशंसा लक्षण – दोहा ।

अप्रस्तुतै प्रससिये प्रस्तुत लीने नाम ।
तहँ अप्रस्तुत प्रससा बरनत है मतिराम ॥२१७॥

जहां अप्रस्तुत की बड़ाई करिये प्रस्तुत को नाम लिये हुये तहां अप्रस्तुत प्रससा मतिराम कवि बरनै है ॥ २१७ ॥

उदाहरण – सवैया ।

आनन-चन्द निहारि निहारि नहीं तनु औ धन जीवन वारैं । चारु चितौनि चुभी मतिराम हिये मति कौ गहि ताहि निकारैं ॥ क्यों करि धौं मुरलीमनि कुण्डल मोर पखा वनमाल बिसारैं । ते धनि जे ब्रजराज लखैं गृह काज करैं अरु लाज सम्हारैं ॥ २१८ ॥

मुख चन्द्रमा कौं देखि देखि के तनु और धन जीवन कौं नहीं वारैं मतिराम कहै है हिया में सुन्दर चितवनि चुभी है तिसकौं निकासै मति कौं पकड़ि के जानें कैसे

करिकै बसी मनि कुण्डल मोरमुकुट बनमाला को भूलैं ते धन्य हैं जे कृष्ण कों देखि कै घर को काम करैं और लाज कों सम्हालैं । इहां अन्य जो अप्रस्तुतनकी बड़ाई करै है तामैं अपनों अर्थ निकसै है यातैं प्रस्तुत प्रशंसा है ॥११८॥

वनिता भूषण, अप्रस्तुतप्रशंसा लक्षण—दोहा।

जहँ प्रस्तुत के कारणै अप्रस्तुतहि प्रसंस ।
होय तहाँ भूषन यहै अप्रस्तुत-परप्रशंस ॥ १ ॥

छप्पय।

वर्णन अप्रस्तुतहि माहि जहँ प्रस्तुत निकसै ।
अस सम्बन्धहि माहि अलङ्कृति यह निति विकसै॥
सम स्वरूप के माहि जहा समरूप जु निकरै ।
सो सारूप्य निबन्ध माहि भिद पहिलो उघरै ॥
निकसै विशेष सामान्य मैं सो सामान्य निबन्धना।
सामान्य विशेषहि मैं कढै सुहै विशेष निबन्धना॥

दोहा।

कारज मैं कारन कढै हेतु निबन्धन सोय ।
कारज मैं कारण कढै कार्य्य निबन्धन होय ॥३॥

अथ प्रौढा खण्डिता सारूप्य निबन्धना उदाहरण—दोहा।

वक धरि धीरज कपट करि जो वनि रहै मराल।
उघरै अन्त गुलाब कवि अपनी बोलनि चाल ॥

अथ परकीया खण्डिता सामान्य निबन्धना उदाहरण

दोहा।

सीख न मानैं गुरुन की अहितहि हित मनमानि।
सो पछितावै तासु फल लखन भये हित हानि॥

अथ गनिकाखण्डिता विशेष निबन्धना उदाहरण—दोहा।

लालन सुरतरु धनदहू अनहितकारी होय ।
तिनहू को आदरन ह्वै यों मानत बुध लोय॥६॥

अथ भूषणचन्द्रिका, कारण निबन्धना—दोहा।

लीनौं राधा-मुख रचन विधि नै सार तमाम ।
तिहिँ मग होय अकाश यह शशि मैं दीखत श्याम॥

अथ कार्यनिबन्धना उदाहरण - दोहा।

तुव पदनख की द्युति कछुक गङ्ग धोवन जल साथ।
तिहिँ कन मिलि दधिमथन मैं चन्द्र भयो है नाथ॥

अथ प्रस्तुताङ्कुर लक्षण– दोहा।

प्रस्तुत करि प्रस्तुत जहा प्रगट होत मतिराम ।
प्रस्तुत अङ्कुर कहत हैं तहा बुद्धि के धाम॥२१९॥

मतिराम कहे है जहा प्रस्तुत करिके प्रस्तुत प्रगट होय तहा बुद्धि के घर प्रस्तुताङ्कुर कहते हैं॥ २१९॥

उदाहरण—दोहा।

सुवरन वरन सुवासजुत,सरस दलनि सुकुमार।
चम्पकली कों तजत अलि तेही होत गँवार ॥

इहां छल गुसाई निकसे है याते पर्यायोक्ति है ॥ २२३ ॥

द्वितीय पर्यायोक्ति लक्षण—दोहा ।

जहाँ कपट सों करत है रुचिर मनोरथ काज ।
बरनत पर्यायोक्ति तहँ दूजी सुकवि समाज ॥

जहां छल सों सुन्दरमन को काम करै तहां सुकवि स मूह दूसरी पर्यायोक्ति बरनत है ॥ २२४ ॥

उदाहरण सवैया ।

मनमोहन आय गये तितही जित खेलत बाल सखीगन मैं । तहँ आपुही मूंदे सलोनी के लोचन चोर-मिहीचनी खेलन मैं ॥ दुरिवे कौं गई सगरी सखिया मतिराम कहै इतने छन मैं । मुसकाय कै राधिके कण्ठ लगाय छिप्यो कहूँ जाय निकुंजन मैं ॥ २२५ ॥

मनमोहन तहाही आय गये जहां बाल सखीगन मैं खेलै हो तहां आपुही सलोनी के लोचन मूंदे चोर मि हीचनी खेलवा मैं सब सखी छिपवे कौं गई इतनी देर मैं हँसि के राधिका कौं कण्ठ से लगाय के कहीं निकुंजन मैं जाय छिप्यो । इहां नैन मूंदिवे के मिस सौं राधा को ले आवो इष्ट साध्यो याते पर्यायोक्त ॥ २२५ ॥

अथ व्याज स्तुति लक्षण दोहा ।

निन्दा में स्तुति पाइये स्तुति में निन्दा होय ।

सोना के रङ्ग की सुगन्ध सहित रस सहित पखुरीन की कोमल चम्पा की कली को तजत है हे भ्रमर तेही गँवार होत हैं । इहां चम्पकली स्वकीया नायिका भ्रमर और नायक चारो विद्यमान हैं । यों प्रस्तुत है यातें प्रस्तांकुर है ॥ २२० ॥

अथ पर्यायोक्त लक्षण—दोहा ।

गम्य अर्थ प्रगटै तहां और वचन रचनानि ।
बरनत पर्यायोक्ति तहँ कविजन ग्रन्थन जानि ॥

जहां गुप्त अर्थ पैदा होय अन्य वचननि की रचनान सौं तहां पर्यायोक्ति बरनते हैं । कवि लोग ग्रन्थनकों जानि करिकें ॥ २२१ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जाके लोचन करत हैं कुवलय कञ्ज प्रकास ।
सो भाऊ भूपालके करत हिये नित बास ॥२२२॥

जाके नैन कमल कुमोदिनीनि कौं फुलावैं हैं सो राजा भावसिंह का हिया में सदा बास करे हैं । इहां विष्णु को दक्षिण नैन रवि है बाम नैन शशि है । सो हरि राजा का मन में बसे है । यह गुप्तार्थ निकसो यातें पर्यायोक्ति है ॥

प्रगट दरप कन्दरप को तेरो अङ्ग अनूप ।
सु तौ लियो कन्दर्प जिति सुन्दर श्याम सरूप ॥

तेरो सुन्दर अंग है सो जाहिरही कामदेव को अभिमान है । सो तौ सुन्दर श्याम रूप कामदेव ने जीति लियो

व्याजस्तुति सो कहत हैं कविकोविद सब कोय ॥

निन्दा में बड़ाई पावै बड़ाई में निन्दा कहै सो व्याज स्तुति कहत है कवि कोविद सब कोई ॥

उदाहरण कवित्त।

देखतही सब के चुरावती है चित्तनि कौं फेरि कै न देती यो अनीति उमडाई है। कवि मतिराम काम तीरहू तें तीछन कटाछनि की कोरैं छेदि छाती मैं गडाई है ॥ खजरीट कज मीन मृगनि के नैननि की छीनि छीनि लेती छवि ऐसी तै लडाई है। तेरी अखियानि में बिलोकी यह बडी बात इते पर बडी बडी पावती बडाई है ॥ २७ ॥

सब के देखतैं चित्तनि कौं चुराती है। फेरि नहीं देती ऐसी कुनीति उमगाई है मतिराम कवि कहै है कामबान नि से भी पैनै कटाछनि की अनी छेदि के छाती मैं गड़ाई है खजन कमल मच्छी हरिन इनके दृगनिकी सोभा पोसि पासि लेती तैंने ऐसी लाडिली करी है तेरी आखिन मैं यह बडी बात देखी इतने पर ज्यादा ज्यादा बडाई पावती हैं इहा अखियानि को निन्दा के मिस सें बडाई है यातें व्याजस्तुति है। १२० ॥

द्वितीय उदाहरण।

याही कौं पठाई बडो काम करि आई बड़ी तेरिये बडाई लखे लोचन लजीले सों। सांचौं क्यो न कहै कछू मोकों किधौं आपुही कौं पाय बकसीस लाई बसन छबीले सों॥ मतिराम सु कवि सँदेसो अनुमानियत तेरे नखसिख अङ्ग हरख कटीले सो। तू तो है रसीली रसबातनि बनाय जानैं मेरे जानि आई रस राखि कै रसीले सों॥ २२८॥

याही काम कौं भेजी ही बडो काम करि आई तेरी ही बडी बडाई है लजीले नैननि सों देखै है साची क्यों नहीं कहै है थोरी मोकों भो कै आपुही कौं बकसीस पाय कै छबीले सों बस्त्र लाई है मतिराम सुकवि कहै है सँदेसो अनुमान करि ये है तेरे मुह से चोटो तक हर्षित कटीले अङ्ग से तू तौ रसीली है रस की बात बनाय जानै है मेरी जानि मैं रसीले सों रस राखि कै आई है इहां अन्यसंभोग दुःखिता नायका स्तुति मैं निन्दा करै है याते व्याजस्तुति है। २१८।

वनिताभूषन॥ व्याजस्तुति लक्षण।

इक की निन्दासतुतिमिस स्तुतिनिंदा जहँ जोय। पर की निन्दा सतुति सें परस्तुति निन्दा होय॥

पर की अस्तुति से जवै पर की अस्तुति साज।
व्याजस्तुति यों पांचविधि कहतसकल कविराज॥

वाही निन्दा से वाही की स्तुति दोहा।

अनखानी बोलतवचन अनुचितपतिहि निशारि।
तऊ लगत नीकी सखिन अरी अनोखी नारि॥

वृहद्व्यंगार्थ चन्द्रिका।

वाही की स्तुति में वाही की निन्दा।

मैं प्यारी हौं याहि तैं धारि नीलपट लाल।
प्रातहि आय दिखायछवि कीनी मोहि निहाल॥
कौन दुखारी कौं दुखित प्रात कुशोभ दिखाय।
अस्तुति मिसनिन्दा करत व्याजस्तुति इहिँ भाय॥

वृहद्व्यंगार्थचन्द्रिका सवैया।

स्वारथ मैं रत हैं सवही परमारथ साधत नाहिन कोऊ। हैं परमारथ में रत लोय गुलाव कहै विरले जस जोऊ॥ जो परमारथ स्वारथ हीन सु आलस लोभित कीरति कोऊ। हो तुम नीतिनिधान लला परमारथ स्वारथ साधत दोऊ॥ ३॥

दोहा।

निशिवसि परतिय पासपिय करतपरार्थ अथाह।
प्रातआत निजघर करत स्वार्थ नीति प्रतिनाह॥

अस्तुतिमिस निन्दाकरत व्याजस्तुति त्यों आहि।
अस्तुति मैं निन्दा श्रठै व्याजस्तुति कहि ताहि॥

और को निन्दा सौं और की स्तुति।

दशशिर कुमति कराल नै कस्यो राम अपकार।
तज्यो विभीषन ताहि सौं कीनौ काम उदार॥

और की स्तुति सें और को निन्दा दोहा।

धन्य विभीषन राम की आयो सरन सुजान।
धिक है जानै अनुजअस दियोनिकासि निदान॥

और की स्तुति से और की स्तुति।

धन्य धन्य है राधिका पाये पति भगवान।
धन्य राधिका मात जिहि जाई सुता सुजान॥

अथ व्याजनिन्दा लक्षण दोहा।

निन्दा सो जहँ और की निन्दा प्रगटित होय।
तहाँ व्याजनिन्दा कहत कवि कोविद सब कोय॥

जहां निन्दा सौं और की निन्दा प्रगट होय तहां व्याज निन्दा कहते हैं कवि पण्डित सब कोई याको एकही भेद है। २२८॥

उदाहरण दोहा।

प्रगट कुटिलता जो करी हम पर श्याम सरोस।
मधुप जोग विष उगलिये कछु न तिहारो दोस॥

गोपिन की उक्ति उद्धव सों जो श्याम ने रोस सहित हम पै कुटिलता जाहर करी है हे मधुप सो जोगरूप विष को उगलिवो है तुमारो कछू दोष नहीं है इहा कृष्ण की निन्दा सें उद्धव की निन्दा है याते ब्याज निन्दा है।

वनिताभूषण ॥ ब्याजनिन्दा लक्षण दोहा।

पर की निन्दा से जहाँ पर की निन्दा होय।
तहाँ ब्याजनिन्दा इकहि भेद कहत कवि लोय॥

अथ गनिकाकलहांतरिता ब्याजनिन्दा उदाहरण।

सुरतरु सम पिय तजि गयो करि बिनती उपचार।
भाल मोर तू निद्य है निद्य तोर लिपिकार ॥२॥

अथ आक्षेपलक्षण दोहा।

जहाँ कही निज वातकों समुझिकरत प्रतिषेध।
तहाँ कहत आक्षेप हैं कविजन मति उत्सेध॥

जहा कही हुई अपनी बात को समुझि के नटै तहा आक्षेप कहते हैं मति उत्सेध कवि लोग हैं ते ॥ १२१ ॥

उदाहरण सवैया।

दै मृदुपायन जावक को रँग नाह को चित्त रँगै रँग जातें। अजन दै करी नैननि में सुखमा बढि स्याम सरोज प्रभा तें॥ सोने के भूषण अग रचौ मतिराम सबै वस कीबे की घातें। यौंही

चलै न सिँगार सुभावहि मै सखि भूलि कही सब बातैं ॥ २३२॥

सखो उक्ति नायका प्रति कोमल पगन में जावक को रंग दे जा रँग से नाह को चित्त रँगे कज्जल लगायकै नैननि में श्याम कमल की आभा तें अधिक सुखमा करी सोना का गहना शरीर में पहरौ मतिराम कहे हैं रूपमैं बस कर वाकी बात सें है सखि ऐसेही सुभाव को सिंगार सेही चलो क्यों न मैंने सब बात भूलिकैं कही है इहां पहिले सिंगार न करिबो कह्यो ताकों समुझि कैं फेरयौ यातें आक्षेप है ॥ २३२ ॥

द्वितीयाक्षेप लक्षण दोहा।

जहँा न साँच निषेध है है निषेध आभास।
तहँ औरो आक्षेप को कविजन करत प्रकास॥

जहा साचो निषेध नहीं है नटवा को आभास है तहा दूसरा आक्षेप को कवि लोग वर्णन करते हैं।

उदाहरण दोहा।

हौ न कहत तुम जानिहौ लाल बाल की बात।
असुवा उडगन परत हैं हौं न कहत उतपात॥

मैं नहीं कहती हों आप जानि जावोगे हे लाल बाल को बात कीं आसू रूप तारा टूटे हैं सो उत्पात हुयो चाहै है इहा मैं नहीं कहती हौं यों नटै है और सब कहती है यह निषेध को आभास है यातें दूसरो आक्षेप है ॥२३४॥

अथ तृतीयाक्षेप लक्षण दोहा ॥

जहँ विधि प्रगट बखानिये कह्यौ निषेध प्रकास।
तहँ औरै आक्षेप कहि बरनत बुद्धि बिलास॥

जहां करो यह प्रगट कहिये न करो यह गुप्त कहे तहां और आक्षेप कहि के बुद्धि के बिलास सें बरनते हैं।

उदाहरण कवित्त ।

जा दिन ते चलिवे की चरचा चलाई तुम ता दिन ते वाके पियराई तन छाई है । कवि मतिराम छोड़े भूषन वसन पान सखिन सौं खेलनि हसनि बिसराई है ॥ आई ऋतु सुरभि सुहाई प्रीति वाके चित ऐसे मैं चलौ तौ लाल रावरी बड़ाई है। सोवति न रैन दिन रोवत रहति बाल बूझे तैं कहत सुधि मायके की आई है ॥ २३६ ॥

सखी उक्ति नायक प्रति तुमने जिस रोज से चलने का जिकर किया है तिस रोज से उसके शरीर में पियराई छाय गई है मतिराम कहे हैं भूषन वस्त्र पान छोड़े हैं अर्थात् शृङ्गार नहीं करती है सखीन सौं खेलिबो हासो करिबो भूलि गई है वसन्त ऋतु आई है वाके चित्त में प्रीति सुहाई है है लाल ऐसे समय में चलौ तो आप की बड़ाई है राति दिन सोती नहीं है रोती रहती है बाल है

सो बूझने से कहती है पोहर को यादि आई है इहा चलो यह प्रगट है, ऐसे समय में न चलो यह गुप्त है यातैं तीसरो आक्षेप है ॥ २१६ ॥

पुन दोहा।

कोपनि तैं किसलय जवै होहि कलिन तैं कौल।
तब चलाइये चलन की चर्चा नायक नौल ॥

जब कौंपलनि सें पत्र होंय कलीन से कमल होंय है नवीन नायक तबही चलवा की बात चलाइये अर्थात् च लिये। इहाँ चलिये यह प्रगट है, बसन्त में न चलिये यह गुप्त है यातैं तीसरो आक्षेप है ॥ २१७ ॥

अथ विरोधाभास लक्षण दोहा।

जहँ विरोध सो लगत है होत न साँच विरोध।
कहत विरोधाभास तहँ बुधजन बुद्धि विबोध ॥

जहा विरोध सो लगै सत्य मे विरोध नही होय तहा विरोधाभास कहते हैं पंडित लोग बुद्धि के बोध सें ॥२१८॥

उदाहरण सवैया।

दोऊ जुरे सहजादनि के दल जानत है सगरो जग साखी। मारू बजे रस वीर छके वर बीरनि कित्ति बडी अभिलाखी॥ नाथ तनैं करतूति करी जस जोति जगी मतिराम सुभाखी। श्रोनित बैरिन की बरसाय के राव सतारन मैं रज राखी ॥ २१९ ॥

दोनू सइजादान का कटक जुग्या सब जगत जाने है और साखो है मारू राग बजै है बोररस के छके सुन्दर जोहान नैं वही कोरि च चाही गोपीनाथ के सुत नैं करतूति करी तिस सैं जस की जोति जागी सो मतिराम नैं भाखो वैरीन को सोही फेसाय के राव अनुयास नैं सयाम मैं र जपूती राखो। इहा लोही बरसने सैं रन रेत नहीं रहै यह विरोध सो दीखे है यातैं विरोधाभास है ॥ २३८ ॥

वनिताभूषण। विप्रलब्धा उदाहरन दोहा।

सास ननद यातान कौं आई नीठि सुवाय।
अव आली घर गमन की सुधि आयें सुधि जाय॥

अथ विभावना लचण दोहा।

विना हेतु जहँ बरनिये प्रगट होत है काज।
प्रगटित तहाँ विभावना कहत सकल कविराज॥

जहा बिना कारन काज प्रगट हो तो बरनिये है तहा आहर विभावना सब कविराज कहत हैं ॥ २४० ॥

उदाहरण सवैया।

बातनि जाय लगाय लई रसही रस मैं मन हाथ के लीनौं। लाल तिहारे बुलावन को मति राम मैं बोल कह्यो परवीनौं॥ वेग चलो न विलम्ब करो लख्यो बाल नवेली को नेह नवीनौं। लाजभरी अखिया बिहँसी बलि बोल कहें बिन उत्तर दीनौं॥ २४१ ॥

सखी उक्ति नायक प्रति लाय के बातन में लगा लीनो रसहो रस में वाको मन हाथ में करि लियो है लाल आप के बुलावा को मैंने प्रवीन बचन कह्यो सो जलदी चलो देर मति करी नवेली बाल को भयो नेह देख्यो है लाज को भरी आखें इसी में वारी लाल बाल कह्या बिना उत्तर दियो। इहा बोल कारन बिना उत्तर काज भयो यातें प्रथम बिभावना है ॥ २४१ ॥

द्वितीय बिभावना लक्षण दोहा।

थोरे हेतुनि सौ जहाँ प्रगट होत है काज।
तहँ बिभावना औरऊ बरनत बुद्धि जिहाज ॥

थोड़ा कारन सौं जहां काज प्रगट होत है तहा और भी बिभावना बुद्धि के जिहाज बरनते हैं ॥ २४२ ॥

उदाहरण सवैया।

तेरो कह्यो सिगरो मैं कियो निसि द्यौस तप्यो तिहुं तापनि पाई। मेरो कह्यो अब तू करि जो सब दाह मिटै परिहै सियराई ॥ शंकर-पायनि मैं लगि रे मन थोरेही बातनि सिद्धि सुहाई। आक धतूरे के फूल चढाये तें रीझत हैं तिहुलोक के साई ॥ २४३ ॥

कवि की उक्ति या भक्त की मन सें—मैंने तेरो सब कह्यो कह्यो राति दिन तीनों तापन कों प्राप्त होय के तप्यो अब

तू मेरो कह्यो करि जो सौं सब जञ्जनि मिटैं ठडक पड़ैगी
मेरे मन शिव के पगन मैं लगि थोरो हो बातनि मैं सुहा
थमी सिद्धि है आक धतूरा के फूल चढावा सौं तीनौं लोक
को स्वामी रीझ है। इहां आक धतूरा के फूल थोरा का
रन सौं त्रिलोकनाथ को रीझबो पूरो काज भयो यातैं दू
सरी विभावना है ॥ १४१ ॥

तृतीय विभावना लक्षण दोहा।

जहाँ हेतु प्रतिवन्धहू बरनत प्रगटै काज ।
बरनत और विभावना तहँ कविराज समाज ॥

जहां कारन प्रतिबन्धक सें काज प्रगट्यो बरनैं तहा
और विभावना बरनते हैं कविराजनि के समाज हैं ते॥१४४

उदाहरण दोहा।

मानत लाज लगाम नहि नैक न गहत मरोर ।
होत तोहि लखि बाल के दृग तुरग मुहजोर ॥

लाजरूपी लगाम कौं नहीं माने है नैंक मरोडनहीं
पकडते हैं तोकौं देखि के नायिका के दृग तुरग हैं सो
मुहजोर होते है। इहा लाज कारन नैनन को चलवा को
रोकबेवारो है तो भी दौडबो काज भयो यातैं तीसरी वि
भावना है ॥ १४५ ॥

चतुर्थ विभावना लक्षण दोहा।

हेतु काज को जो नहीं ताते काज उदोत ।
यासौं और विभावना कहत सकल कविगोत ॥

जो कारज को कारण नहीं है तामें काज होय यासों और बिभावना सब कविन के मोत कहते हैं ॥ २४६ ॥

उदाहरण दोहा।

हँसत बाल के बदन में यों छबि कछू अतूल ।
फूली चम्पकबेलि तें झरत चमेली फूल ॥

हंसते नायिका के मुख में ऐसे कछु अतोल छबि है फूली हुई चंपा की बेलि सें चमेली के फूल झरे हैं। इहां चम्पक बेलि चमेली का फूलनि को कारन नहीं तासों कारज भयी याते चौथी बिभावना ॥ २४७ ॥

पुन कवित्त।

चन्दमुखी हँसी में चमेली की लता सी होति चम्पकलता सी अंग जोति कौं धरति है। कवि मतिराम तेरे अग की सुवास लहै कौन बेलि रूप यह जानी ना परति है ॥ नेसुक निहारि कै छबीली नैन कोरनि ते ऐसी अचिरज की कलानि आचरति है। ललित तमाल श्याम रसिक रसाल कोते कदम मुकुल के कुलनि सौं करति है ॥ २४८ ॥

चन्दमुखी है सो हंसते चमेली की बेलि सी होय है अग की जोति की चपक लता सी धारण करे है मतिराम कवि कहे है तेरे अग की सुवास पाये सें कौन बेलि में इस

रूप की नहीं जानी परे है सराक देखि कैं छबीली है सो ऐसो अचिरज को कलानि कों रचे है तेहो सुन्दर तमाल जो श्याम रसिक रसाल हैं तिनकों कदम्ब के फूलनि के समूह सौं करे है । इहा तमाल हष है सो कदम्ब के फूलनि को कारन नहीं तासौं काज भयो यातें चौथी विभावना ॥ २४८ ॥

पचम विभावना लक्षण दोहा ।

बरनत हेतु विरोध ते उपजत हैं जहँ काज ।
तहँ विभावना औरऊ बरनत कवि सिरताज ॥

बरनन करते जहा बिरोधी कारन सैं कारज उपजै है तहा भी और बिभावना सिरताज कवि बरनते हैं ॥२४९॥

उदाहरण सवैया ।

मोरपखा मतिराम किरीट मैं कण्ठ बनी बनमाल सुहाई । मोहन की मुसकानि मनोहर कुण्डल डोलनि मैं छबि छाई ॥ लोचन लोल बिसाल बिलोकनि को न बिलोकि भयो बस माई । वा मुख की मधुराई कहा कहौ मीठी लगै अँखियान लुनाई ॥ २५० ॥

मतिराम कहे है मुकुट मैं मोरन को पर है, कण्ठ मैं सुहावनी बनमाला बनी है, कृष्ण की हसनि है सो मन कौं हरवे वारी है कुण्डलनि की हलनि मैं छबि छाय रही

है, घवल बड़े नैननि की चितवनि कों देखि के है भाई बस को नहीं भयो या मुख की मिठाई कों कहा कहों आखिन की लुनाई मीठी लगै है। इहां लुनाई है सो मि ठाई को विरुद्ध कारन है तासों कारज भयो यातें पथम विभावना है ॥ २५० ॥

परकीया उत्कण्ठिता पंचम विभावना उदा० दोहा।

कुल नारिन भय ताप सहि आई सीतल धाम।
ह्यां पिय बिनहिं मकर अली जारत मोहिनिकाम॥

छठी विभावना लछन दोहा।

जहाँ काज ते हेतु कों बरनत प्रगट प्रकास।
तहँ विभावना औरऊ बरनत बुद्धि बिलास॥

जहां कारज सें कारन को जाहर प्रकास बरनें तहां और भी विभावना बुद्धि के बिलास सें बरनते हैं ॥ २५१ ॥

उदाहरण दोहा।

भयो सिन्धु ते बिधु सुकबि बरनत बिना बिचार।
उपज्यो तो मुख इन्दु ते प्रेमपयोधि अपार॥

समुद्र सें चन्द्रमा भयो यह सुकवि बिना बिचार बरनते है तेरे मुख चन्द्रमा सें प्रेमरूप समुद्र अपार पैदा हुयो है। इहां इन्दु कारज सें पयोधि कारन उपज्यो यातें छठो बि भावना ॥ २५२ ॥

वनिताभूषन। अथ गनिका उत्कठिता छठी विभावना
उदाहरन दोहा।

धनदायक आयो नहीं किहि कारन दुहि थान।
यौं भाषत चख झखुन मैं सरिता वही अमान॥

अथ विशेषोक्ति लक्षण दोहा।

जहँ परिपूरन हेतु ते प्रगट होत नहि काज ।
विशेषोक्ति तहँ कहत हैं सकल सुकवि सिरताज॥

जहा पूरन कारन से काज प्रगट नहीं होय तहा वि
शेषोक्ति कहते हैं सब सिरताज सुकवि॥ १५३॥

उदाहरण दोहा।

पियत रहत पिय नैन यह तेरी मृदुमुसुकानि ।
तऊ न होति मयकमुखि तनक प्यास की हानि॥

पी के नैन है सो यह तेरो कोमल हँसनि कों पीते र
हते है हे चन्द्रमुखी तो भी प्यास को कमी जरा नहीं
होती है। पीबो पूरन कारन है तो भी प्यास मिटिबो
कारज नहीं भयो यातैं विशेषोक्ति है॥ १५४॥

पुन दोहा।

प्यौ राख्यौ परदेश ते अति अद्भुत दरसाय ।
कनक-कलस पानिप-भरे सगुन उरोज दिखाय॥

पीतम कौं परदेश सें राखि लियो अति अचिरज दि
खाय के सोना के घट पानी से भरे हुए गुनसहित कुच

दिखाय कैं। इहाँ भरे घटन को दीखिबो चलिवा को स गुन रूप कारन है तऊ चलिबो कारन नहीं भयो यातैं विशेषोक्ति है ॥ १५५ ॥

इष्टदव्यग्यार्थं। मृदुमाना उदाहरन सवैया ॥

पीतम को पहिलो अपराध निहारि न तौ कटु बात कही। भौंह चढाय सनेह नसाय रिसाय कछू नहिँ गाँस गही ॥ सीख सहेलिन की न सुनी नहि शोक हुताशन देह दही । केवल लोयन कोयन मैं भरि वारि लली सरसाय रही॥

दोहा।

शोक हुताशन रूप कर विशेषोक्ति जुग जोय ।
विशेषोक्ति अति हेतु ह्वै तऊ काज नहि होय ॥

सवैया ।

सीलसनी सजनीन समीप गुलाब कछू दमनी दरसावै । ना गुरुलोग कुजोग कथै नहि रोग सँजोग शरीर लखावै ॥ नेह नहीं ननदीन निहारत क्यों मन मोहिनि दीठि दुरावै ॥ दास दसा समही अब सो कस सास बुलावत पास न आवै ॥ ३ ॥

दोहा।

मुग्धा विरहिनि क्रश सकुच सास पास नहिँजाय।
कवि गुलाब भूषन यहाँ विशेषोक्ति दरसाय ॥

अथ असंभव लक्षण दोहा।

जहाँ अर्थ के सिद्धि को सम्भव वचन न होय।
तहाँ असम्भव होत हैं वरनत है सब कोय ॥

जहाँ प्रयोजन की सिद्धि को सभव वचन नहीं होय तहाँ असभव होता है सब कोई बरनते हैं ॥ २५६ ॥

उदाहरण सवैया।

यौं दुख दै ब्रजवासिन कौं ब्रज कौं तजि कै मथुरा सुख पैहै । वै रसकेलि विलासिनि कौं वन कुजनि की बतिया बिसरैहैं ॥ जोग सिखावन कौं हम कौं बहुरौं तुम से उठि धावनि ऐहैं। ऊधो नही हम जानत ही मनमोहन कूबरी हाथ बिकैहैं ॥ २५७ ॥

ब्रजवासिन कौं ऐसे दु ख दे करिकै ब्रज कौं छोडि करिकै मथुरा मैं सुख पावैंगे औ रस की क्रीडान के आनन्द को वन का कुजन की बातें भूलेंगे जोग सिखाने के वास्ते फेरि आप से वसीठ उठि आवैंगे । हे ऊधो हम सब नहीं जानैं ही मोहन कूबरी के हाथ बिकैंगे। इहाँ ब्रज कौं तजि

मथुरा मैं सुख पावो रस को बात भूलिबो ऊधो को आयो सभव नही हो सो भयो यातैं असभव नही है ॥ २५७ ॥

वनिताभूषन । मध्याबासकसज्जा असभव उदा० दोहा ।

के जानैं हो यह दिवस मेरो ह्वैहै आज ।
साँवन तीज उछाह दिन तजि वर सौति समाज॥

अथ असगति लक्षण दोहा ।

होत हेतु जहँ और थल काज और थल होय ।
तहाँ असगति कहत हैं कवि रस बुद्धि समोय ॥

जहां कारन और ठौर होय कारज और ठौर होय तहाँ असगति कहते हैं कवि है सो रस मैं बुद्धि कौ भेय कै॥

उदाहरण सवैया ।

दारुन तेज दिलीस के वीरनि काहू न वस के वाने वजाये । छोडि हथ्यारनि हाथनि जोरि तहाँ सबही मिलि मूड मुडाये ॥ हाडा हठी रह्यौ ऐड किये मतिराम दिगन्तन मैं जस छाये । भोज के मूछनि लाज रही मुख औरनि लाज के भार नवाये ॥ २५८ ॥

दिल्लीपति के भयकार तेज सैं कोई सूरनि नैं बध के विरद नही वजाये शस्त्रन कौं गेरि कै हाथ जोरि कै तहाँ सब नैं मिलि कै मूड मुडा लिये हठीलो हाडा है सो 'अकड किये रह्यौ मतिराम कहै है दिशा के अवसाननि मैं

जस छाये, राना भोज के मूछनि में लाज रही औरनि नें मुख लाज के बोझ सें नीचे करि लिये। इहाँ लाज कारन भोज की मूछनि में बोझ कारज औरनि के मुख पै यातैं असंगति है ॥ २५९ ॥

पुन दोहा।

राधा के दृग खेल मैं मूदे नन्दकुमार।
कारनि लगी दृगकोर सो भई छेदि उर पार ॥

कृष्ण नें चोरमिहीचनी खेल में राधा के नैन मूदे तब दृगनि की अनी हाथनि के लगी सो छदि कै उर में पार भई। इहाँ दृगकोर लगिबो कारन हाथन मै छेदिबो कारज उर में भयो यातैं असंगति है ॥ १६० ॥

द्वितीय असंगति लक्षण दोहा।

और ठौर करनीय जो करत औरही ठौर।
वरनत सब कविराज हैं यही असंगति और ॥

जो और ठौर करिबे जोग्य है सो औरही ठौर करै सब कविराज वरनतें हैं यह भी और असंगति है ॥२६१॥

उदाहरण दोहा।

पिय नैननि कें राग को भूषन सजे वनाय।
लखें तिहारी छवि सुतौ सौति दृगनि अधिकाय॥

पिय के नैननि के अनुराग कौं भूषन बनाय के पहिरे सो तो तुम्हारो छवि देखि कै सौतिन की आखिन में अ

धिकायो दूहा पियनैननि मे करिबे योग्य राग सौति दृ गनि में कियो याते असगति राग प्रेम ओर लाल रग सौ तिन कै रोस भयो ॥ २६२ ॥

सवैया ।

घोर नही घनकी चहुँओरन दौर न दामि नि सोर कलाप्यो । बादर नाहि न दादुर बोलत वीर वलाक न चातक जाप्यो ॥ कारन आन गु लाब कछू नहिँ दीसत वारि बयार न व्याप्यो । का गुन आज प्रभात वडे अलि फागुन राग म- लार अलाप्यो ॥ १ ॥

दोहा ।

फागुन गाव मलार को जानि असगति दौर ।
हितिय और यल काम कों करै औरही ठौर ॥

तृतीय असगति लक्षण दोहा ।

करन लगै जो काज कछु तातै करै विरुद्ध ।
यही असगति कहत हैं कवि मतिराम विवुद्ध ॥

जो कछु काम करिबे लगै तो तासौं उलटो करै यह भी असगति कहते हैं मतिराम कवि कहै है विवुध है तें ॥

उदाहरण दोहा ।

उदित भयो है जलद तू जग को जीवनदानि ।
मेरो जीवन लेत है कौन वैर मन आनि ॥२६४॥

हे मेघ तू जगत को जीवनदानी उदित भयो है और कौने बैर मन मैं लाय करिकै मेरो जीवन ले है अर्थात् विरहिनी कौं दुखद है जीवन जल और जीवो इहां जीवन देबा को उदित होय जीवन लेवो उलटो कियो यातैं असगति है ॥ २६४ ॥

अथ विषम लक्षण दोहा।

जहाँ न हैं अनुरूप है तिनकी घटना होय।
विषम तहाँ वरनन करत कवि कोविद सब कोय॥

जहां दोय समान रूप नहीं है तिनको रचना होय तहां विषम वरनन करते है कवि पंडित सब कोइ ॥२६५॥

उदाहरण सवैया।

ऊधो जू सूधो विचार है धौं जु कछू समुझैं हमहू व्रजवासी। मानिहैं जो अनुरूप कहौ मतिराम भली यह बात प्रकासी॥ जोग कहाँ मुनि-लोगन जोग कहाँ अबला मति है चपला सी। स्याम कहाँ अभिराम सरूप कुरूप कहाँ वह कूवरी दासी॥ २६६॥

हे ऊधो जू देखो कछू सूधो विचार है जो हम व्रजवासी भी समुझैं जो हम माफिक कहो तो मानैगी मतिराम कहै है यह भली बात प्रकाशो मुनिलोगनि के लायक जोग कहां और चपला सी बुद्धि की स्त्री कहां सुंदर

कृष्ण कहा वह कूवरी दासी कुरूप कहा इहा जोग में औ बनिताम मै कृष्ण में और कूवरी में अनमिलती को सग है यातें विषम है ॥ २६६ ॥

मानहु आयो है राज कहू चढि बैठ्यो है ऐसे पलास की खोढें। गुंज गरे सिर मोरपखा मतिराम हो गाय चरावत चोढें ॥ मोतिन को मेरो तोरयो हरा गहि हाथनि सौं रही चूनरी ओढें। ऐसही डोलत छैल भये तुम्हे लाज न आवत कामरी ओढें ॥ २६७ ॥

मानहु कछु राज आ गयो है ऐसे ढोलका पोखरा में चढि बैठ्यो है गला में चिरमठी है सिर पै मोरनि की पर है मतिराम कहै है चहो चाखो तरफ गाय चरावे है मेरो मोतीन को हार तोरि लियो हाथनि सौं पकडि रही है चूनरी ओढे हुए ऐसेहो छैल भये डोलते हो तुमकौं कामरी ओढे लाज नहीं आवे इहा गुजा मोती कामरी चूनरी आदि कृष्ण राधा में अनमिलती को सग है यातें विषम है ॥

द्वितीय विषम लक्षण।

जहाँ बरनिये हेतु ते उपजत काज विरूप।
और विषम तहँ कहत हैं कवि मतिराम अनूप॥

जहा कारन से विरूप कारज उपजतो बरनिये तहा और विषम कहते हैं मतिराम कहै हैं सुदर कवि से है ते।

उदाहरण कवित्त ।

वारने सकल एक रोरी ही की आड पर हाहा न पहरि आभरन और अङ्ग मैं। कवि मतिराम जैसे तीछन कटाच्छ तेरे ऐसे कहा सर हैं अनङ्ग के न खग मे ॥ सहज सरूप सुघराई रीझ्यो मेरो मन डोलत है तेरी अद्भुत को तरग मैं। सेतसारी ही सौं सब सौतै रगो श्याम रग सेतसारीही सौं श्याम रँगे लाल रग मैं ॥

एक रोली की आड पे ही सब वार फेर हैं हाहा खाऊ हूं और गहना अग मैं मति पहरे मतिराम कवि कहे है जैसे पैने तेरे कटाच्छ है ऐसे काहे कामदेव के तरकस मैं तीर हैं सहज सरूप की सुदरता मैं मेरो मन रीझ्यो हुयो तेरी अचरज की तरग मैं डोले है सुपेद साडी सैं ही सब सौति श्याम रग मै रँगो सुपेद सारीही सो श्याम कों लाल रग मैं रँगे अर्थात सौति दुख सैं मलीन भई श्याम प्रेमासक्त भये इहा सारी कारन से तरग है कारज कालो लाल रग है याते विषम है ॥ १६८ ॥

तृतीय विषम लच्छण दोहा ।

इष्ट अर्थ उद्यमहि ते जहँ अनिष्ट ह्वै जाय।
और विषम बरनत तहा जे कवि कोविदराय ॥

अच्छे प्रयोजन के उपाय से जहा अनिष्ट हो जाय तहा और विषम बरनते हैं जे कवि पडितन के राजा हैं ते ॥

उदाहरण दोहा।

विरहआँच डरि मन सखी घन सुंदर तन जाय।
दुगुन दाह बाढे तहाँ आपुहि जाय सिराय॥

सखी है सो विरह की आग से मन में डरिके सुंदर तन में कपूर लगावे तहा दूनो दाह बढै आपुही सोरी हो जाय इहा ताप मिटावा का उद्यम से दूनो ताप भई याते तीसरो विषम है॥ २०१॥

अथ सम लक्षण दोहा।

जहाँ दुहू अनुरूप को कविजन करत बखान।
तहा समुझि सम कहत हैं जे सुरग रस खान॥

जहा दोनों समान रूप को कवि लोग बखान करें तहा विचारि के सम कहते है जे रसखान में सुरग हैं ते॥

उदाहरन सवैया।

मोहन को मुखचन्द अली निज नैन चकोरन को दरसावै। लोचन भौंर गुपाल के आपने आनन वारिज बीच बसावै॥ तोतै लहै मतिराम महा छवि प्रानपियारे तैं तू छवि पावै। तो सजनी सब के मन भावै जु सोन से अगनि लाल मिलावै॥ २०२॥

हे अली मोहन कौं मुख चन्द्रमा है सो अपना नैन च

कोरनि कीं दिखावे गोपाल के कोचन भौरान की अपने मुख कमल के बीच मैं वसावे अर्थात मोहन कीं मुख तू देखे तेरो मुख मोहन कीं दिखावे मतिराम कहे है प्यारो तो से महा छवि पावे प्रानप्यारा सें तू छबि पावे है सखी तौ सब के मन मैं भावे जो सोना सा अगनि कीं लाल सीं मिलावे इहां सोना लाल और राधाकृष्ण मैं जथायोग्य को सग है यातें सम है ॥ २०३ ॥

द्वितीय सम लक्षण ।

जहाँ हेतु ते काज को वरनत उचित सरूप ।
वरनत तहँ सम औरउ जे कवि कोविद भूप ॥

जहा कारन से कारज को उचित सरूप वरने तहा और भो सम वरनते हैं जे कवि पडितन के राजा हैं ते ॥

उदाहरन दोहा ।

करत लाल मनुहारि पै तू न लखत इहि ओर ।
ऐसो उर जु कठोर तो उचितहि उरज कठोर ॥

लाल मनुहारि करते हैं तो भी तू इस तरफ कौं नहीं देखे है ऐसो हृदो जो कठिन है इहां तौ कुच न्यायही क ठिन है इहा कठोर उर कारन तें कुच कठोर कारज उ चित वरने याते सम है ॥ २०५ ॥

तृतीय सम लक्षण ।

ताकी सिद्धि अनिष्ट विन उद्यम जाके अर्थ ।
तासौं सम औरो कहत जे कविराज समर्थ २०६

जिसके वास्ते उद्यम तिसकी सिद्धि निर्विघ्न होय तिस सो और सम कहते हैं जे समर्थ कविराज हैं ते ।

उदाहरण सवैया ।

कोऊ नहीं बरजै मतिराम रहौ तितही जितही मन भायो । काहे कौ सौंहैं हजार करौ तुम तौ कबहूँ अपराध न ठायो ॥ सोवन दीजे न दीजे हमै दुख यौंही कहा रसवाद बढायो । मान रह्यौ ई नहीं मनमोहन मानिनी होय सो मानै मनायो ॥ २७७ ॥

नायिका को उक्ति नायक प्रति मतिराम कहे है तुम को कोई नहीं मने करे जहां मन राजी है तहांही रहौ क्यौं हजार सौगन्द खावो हो तुमने तो कहे भी अपराध नहीं कियो सोवा दीजे हमको दुख नहीं दीजिये यौं ही रस को बिकार कांइ बढायो है हे मनमोहन मानती है हो नहीं मानिनी होय सो मनाये सेंमाने इहां मनावा को उद्यम कियो सो सिद्ध भयो याते तीसरो सम है ॥ २७७ ॥

अथ विचित्र लक्षण दोहा ।

जहाँ करत उद्यम कछू फल चाहत विपरीति । बरनत तहाँ विचित्र कहि जे कवित्त रस प्रीति॥

जहां कछू उपाय करतें उलटो फल चाहै तहां विचित्रालंकार कहिके बरनते हैं जे काव्य रस में प्रीति राखै ॥

उदाहरण कवित्त ।

औरनि को तेज सीरे करिवे के हेत आँच करै तेज तेरो दिशि विदिशि अपार मै । परमुख अधिक अँधेरो करिवे को फैली जस की उजेरो तेरो जग के पसार मैं ॥ राव भावसिंह शत्रुशाल के सपूत यह अद्भुत वात मतिराम के विचार मैं । आय कै मरत अरि चाहत अमर भयो महा वीर तेरो खग्गधार गंगधार मैं ॥ २७८ ॥

औरन के प्रताप सीरे करिवे के हेत तेरा प्रताप है सो आंच करै है अपार आठौं दिशान मैं शत्रुन के मुख मैं ज्यादा अंधियारो कर वाकौं तेरी जस को चाँदनी फैली है जगत को फैलाव मे हे शत्रुशाल के सपूत राव भाव सिंह मतिराम के विचार मैं यह अद्भुत वात है रिपु हैं सो अमर भये चाहते हुये आकरिके मरते हैं हे महा सूर तेरी खड्ग धार रूप गंगा की धारा मैं इहा सीरे करिवे कौं आंच करिवो अधेरो कौं उजारो अमर हो वाको मरिबो उलटो उद्यम है यातैं विचित्र है ॥ २७८ ॥

गनिका आगतपतिका ।

अगन अंग उमंग भरी सगरी सखि संग रही अनुरागी । वैठि गुलाव सु बागन माझ वरागन पूछि पखारि सभागी ॥ ही हरखाय कली वरखाय

विरी वरणाय पिया रस पागी। क्यो गुनरूप उ-
जागरि नागरि भूषन धारि उतारन लागो ॥१॥

दोहा।

छोरत भूषन आपने भूषन लैन नवीन।
इच्छा फल विपरीत को जतन विचित्र प्रवीन॥

अथ अधिक लक्षण दोहा।

जहाँ बडे आधार तैं वरनत वधि आधेय।
कहतसुकविजनअधिकतहँ जिनकीबुद्धि अजेय॥

जहा बडा आधार सें आधेय को बढा के वरनै तहा
सुकवि लोग अधिक कहतें हैं जिनको मति अजीत हैं ते।

उदाहरण दोहा।

जिनकै अतुल विलोकिये पानिप पारावार।
उमडिचलतनिज दृगनिभरि तोमुखरूप अपार॥

जिनके पानिप के समुद्र असोम देखिये हैं दृग तेरे सुख
के अपार रूप मैं भरिकै उपटि चलते हैं इहा दृग समुद्र
आधार स रूप आधेय अधिक है यातै प्रथम अधिक है॥

द्वितीय अधिक लक्षण दोहा।

जहाँ बडे आयेध तैं वरनत वढि आधार।
तहा अधिक औरो कहत कविजन बुद्धि अपार॥

जहा बडा आधेय सैं आधार को बढाकै वरनै तहा और
अधिक कहते हैं अपार मति के कवि लोग ॥ २८१ ॥

कवित ।

कव की हो देखति चरित्र निज आखिन सौं राधिका रसीलो श्याम रसिक रसाल के । मति राम बरनै दुहूंनि के मुदित अति मन भये मीन से अमृत मय ताल के॥ इक टक देखै लियें व्रत से निमेखनि के नेम किये मानौं पूरे प्रेम प्रति पाल के । लाल मुख इन्दु नैन बाल के चकोर वा मुख अरविन्द चञ्चरीक नैन लाल के ॥२८८॥

सें कबकी अपनी आखिन सौं चरित्र देखौं हौं रसीली राधिका के और रसिक रसाल श्याम के मतिराम कहै है दोनून के अति प्रसन्न मन भये अमृत भरे तलाव के मीन समान इक टक देखै हैं निमेखनि को व्रत सो लिये हुयें मानौ नेम किये हैं पूरे प्रेम के प्रतिपाल के लाल को मुख चन्द्रमा है बाल के नैन चकोर हैं बाल को मुख कमल है लाल के नैन भ्रमर है इहां लाल मुख ने बाल के नैननि को उपकार कियो और बाल मुख ने लाल का नैननि को उपकार कियो यातैं परस्पर है ॥ १८८ ॥

अथ विशेष लक्षण दोहा ।

जहाँ अधेय बखानिये बिन प्रसिद्ध आधार ।
कवि जन तहा विशेष कहि बरनत बुद्धि उदार ॥

जहां प्रसिद्ध आधार बिना आधेय को वर्नन करियो तहां बुद्धिउदार कवि लोग हैं ते विशेष कहि के बरनते हैं॥

उदाहरण दोहा ।

चली लाल वाकी दसा लखी कही नहि जाय ।
हिय रैहै सुधि रावरी हियरो गयो हिराय॥२८०॥

हे लाल चली वाकी दशा देखी कही नहीं जाय है हिया में आप की यादि है हियो गुमि गयो है इहा सुधि आधेय हिया आधार बिना है यातें विशेष है । २८० ॥

अथ द्वितीय विशेष लक्षण—दोहा ।

जहँ अनेक थल में कछू बात बखानत एक ।
तहँ विशेष औरौ कहत कविजन बुद्धिविवेक ॥

जहा कछू एक बात कों अनेक ठौर बर्नें तहा और विशेष कहते हैं बुद्धि के विवेक सें कवि लोग । २८१ ॥

उदाहरण—सवैया ।

मन्दर विन्ध्य सुमेर कलिन्द गिरिन्दन कौं हिम सैलहि साजै । देवनदी सम तीनिहु लोक पवित्र करै सब जीवसमाजै ॥ छाय रही मतिराम कहै छिति छोरनि छीरधि की छबि छाजै । पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिन भाऊ दिवान की कीरति राजै ॥ २८२ ॥

मन्दराचल विन्ध्याचल सुमेरु कलिन्दाचल गिरिन्दन कौं हिमाचल कौं सजै है, गगा की समान तीनौं लोकनि के सब जीवन का समाज कौं पवित्र करै है मतिराम कहै

है पृथ्वी के ओरनि ताई छाय रही है और समुद्र की भी छवि छाजै है चारों दिशान में दिवान भावसिंह की कीरति राजै है। इहां कीरति को मन्दरादि अनेक ठौर वर्णन है यातैं दूसरो विशेष है ॥ २८२ ॥

तृतीय विशेष लक्षण – दोहा।

करत कछू आरम्भ ते जहँ असक्य कछु और ।
तहँ विशेष औरौ कहत कवि कोविद सिरमौर॥

जहां प्रारम्भ में कछु और असक्य करै तहां और विशेष कहते हैं कवि पण्डितन के सिरमौर ॥ २८१ ॥

उदाहरण – कवित्त।

छीरधि की छवि छिति-छोर चार्यौ ओरनि मे फैलि रह्यो जस कुल ललित ललाम को। व खत विलन्द मुख सुन्दर सरदचन्द देखि करि गरद गुमान होत काम को ॥ बाढै पुन्य ओघ अघमरषण आखरनि मतिराम करत जगत जप नाम को । सत्ता के सपूत राजऋषि भावसिंह कीन्हो आपुने चरित्रनि प्रगट रूप राम को ॥

छीरधि कीसी छबि चारोंओरनि में पृथ्वी के अन्त ताइ जस को समूह फैलि रह्यो है सुन्दर सें सुन्दर को समय बड़ा है सुन्दर मुख सरद का चन्द्रमा को देखि कै कामदेव को गुमान दूरि होय है पुन्य को समूह बढ़ै है अघ दूरि

करनेवाले अचरनि सैं मतिराम कहै है लगत है सो नाम को जप करै है ग्रबुराम के सपूत राजऋषि भावसिंह नैं आपने चरित्रनि सौं राम को रूप प्रगट कियो इहां भावसिंह का चरित्र का आरम्भ सैं राम रूप असक्य भयो यातै तीसरो विशेष है ॥ २८४ ॥

अथ व्याघात लक्षण - सोरठा ।

जो जैसो करतार, सो विरुद्धकारी जहाँ ।
वरनत सुमति उदार, तहाँ कहत व्याघात हैं ॥

जो जिस तरह को करतार है सो जहां विरुद्धकारी बरनैं तहां सुमति उदार व्याघात कहते हैं । २८५ ।

उदाहरण – कवित्त ।

मोहन-लला कौं मनमोहनी विलोकि बाल कसि करि राखति है उमगे उमाह कौं । सखिनि की दीठि कौं बचाय कै निहारत है आनँद प्रवाह बीच पावति न थाह कौं ॥ कवि मतिराम और सबही के देखतही ऐसी भांति देखति छिपावति उछाह कौं। वेही नैन रूखे से लगत और लोगनि कौं वेई नैन लागत सनेहभरे नाह कौं ॥ २८६ ॥

मनमोहनी बाल है सो मोहनलला कौं देखि के उमगे हुये उमाह कौं रोकि के राखै है सखीन की नजरि कौं

बचाय के देखे है आनन्द के प्रवाह के बीच में थाह कों नहीं पावे है मतिराम कवि कहै है और सखनि के देखते ही ऐसो तरह देखती है उछाह कों छिपाती है और लो गनि कों वेही नैन रूखे से लगे हैं पति कों वेई नैन सनेह के भरे लागे हैं । इहा सनेहभरे नैननि है रूखापन विरुद्ध कार भयो यातें व्याघात है । १८६ ॥

द्वितीय व्याघात लक्षण—दोहा ।

जहां क्रिया की सुकरता वरनत काज विरोध ।
तहा कहत व्याघात हैं औरौ बुद्धि विबोध॥२८७॥

जहा क्रिया की सुन्दरता सैं विरोध काज वरनें तहा और व्याघात कहती हैं बुद्धि के बोध सैं ॥ १८७ ॥

उदाहरण—दोहा ।

जु पै सखी ब्रज गाव में घर घर चलत चवाव ।
तौ हरिमुख लखि देति किन नैन चकोरनि चाव॥

हे सखी जो पै ब्रज गाँव में घर घर में निन्दा चलै है तौ हरि के मुख कों देखि करिके नैनरूपी चकोरनि कों हर्ष क्यों नहि दे इहा निन्दा है सो मुख देखि याको विरुद्ध क्रिया है ताही सों देखिबो काज भयो यातें दूसरो व्या घात है ॥ १८८ ॥

अथ हेतुमाला लक्षण—दोहा ।

पूरब पूरब हेतु जहँ उत्तर उत्तर काज ।
तहाँ हेतुमाला कहत कवि कोविद सिरताज ॥

जहां पूर्व पूर्व कारन होय उत्तर उत्तर काज होय तहां हेतुमाला कहते हैं। कवि पण्डितन के सिर को ताज है ॥ १०० ॥ उदाहरण - छप्पय।

मन प्रगटित हरि प्रीति प्रीति तिहिँ तेज प्रकासिय। प्रवल तेज तिहिँ जगत जीव रच्छा उल्लासिय ॥ तिहिँ रच्छा-वढि धर्म धर्म तिहिँ सञ्चित सम्पति। तिहिँ सम्पति किय दान दान तिहिँ सुजस विमल अति ॥ मतिराम सुजस दिन प्रति बढत सुनत दुवन उर फट्टियउ। भुव भावसिंह शत्रुशालसुत इहि विधि चरित प्रगट्टियउ ॥

मन में हरि की प्रीति प्रगटे तिस प्रीति सैं तेज प्रकाशे तिस प्रवल तेज सैं जगत में जीवन की रच्छा प्रगटे तिस रच्छा सैं धर्म्म बढ़े तिस धर्म्म से सम्पत्ति इकट्ठी होय तिस सम्पत्ति से दान होय दान करने सैं सुजस अति निर्म्मल होय मतिराम कहे है दिन प्रति सुजस बढ़तैं सो सुनतैंही दुर्जनन को उर फाट्यो जगत में शत्रुशाल के सुत भावसिंह नें इस विधि सैं चरित्र प्रगट कियो इहां। हरि प्रीति कारन है। तेज कारज है फेरि तेज कारन है जीवरच्छा कारज है फेरि जीवरच्छा कारन है धर्म्म कारज है फेरि धर्म्म कारन है सम्पत्ति कारज है फेरि सम्पत्ति कारन दान कारज, फेरि दान कारन जस कारज, फेरि जस सुनिबो कारन रिपु उर फटिबो काज है यातैं हेतुमाला है ॥ १०० ॥

द्वितीय हेतुमाला लक्षण—दोहा ।

उत्तर उत्तर हेतु जहँ पूरब पूरब काज ।
दूजी हेतुमाला कहत कविजन बुद्धि जहाज ॥

जहां उत्तर उत्तर कारन होय पूर्व पूर्व काज होय यह भी हेतुमाला कहते हैं कवि लोग बुद्धि के जहाज है ते।

उदाहरण - छप्पय ।

दु'ख मूल गनि पाप पाप कहँ कुमति प्रकासै ।
मोह कुमति विस्तरै क्रोध मोहै उल्लासै ॥
लोभ क्रोध कहँ रचै लोभ कहँ काम करत पुनि।
सग जनित जग काम कहत मतिराम वेदधुनि॥
इहिँविधिविवेककरसगतजिसुमरतमनशकरचरन।
ससार सकल सताप तजि लहत परमआनन्दघन॥

दु ख को मूल पाप गनौ पाप कों वुद्धि प्रकासै है । मोह है सो कुमति कों करे है क्रोध है सो मोह कों करै है लोभ है सो क्रोध कों रचे है लोभ को फरि कामदेव करे है जगत में काम है सो सग से पैदा होय है मतिराम कहै है वेद की बानी इस प्रकार ज्ञान को सग छोड़ि कै मन है सो शकर को चरनन कों सुमिरे ससार के सपूर्ण तापनि कों तजि कै परम आनन्दघन कों प्राप्त होत है । इहां दु ख काज है, पाप कारन फेरि मोह कारन कुमति कारन है इत्यादि जानिए । ३०२ ।

एकावली लक्षण दोहा।

एक अर्थ लै छोडिये और अर्थ लै ताहि।
अर्थ पाँति इमि कहत हैं एकावली सराहि ॥

एक अर्थ कों ले के छोडिये और अर्थ कों ले के तिस कों छोडिये या प्रकार अर्थ की पंक्ति होय तिसकों सराहि के एकावली कहते हैं। ३०३ ॥

उदाहरण छप्पय।

सुरजनसुत नृप भोज भूमि सुर-जन रच्छाकर। भोज तनय नृप रतन भोज सम दानि विदित बर॥ रतनपुत्र नृप नाथ रतन जिमि ललित जोतिमय। नाथ नन्द तिमि शत्रुशाल नरनाथ महोदय॥ जग शत्रुशालनन्दन नवल शत्रुन उर सालत रहिय। नृप भावसिंह मतिराम कहि सुजस अमल प्रतिदिन लहिय॥ ३०४॥

सुरजन को सुत राजा भोज, सो भूमि मे सुर मनुष्यन को रक्षक भयो, भोज को सुत राजा रत्न भयो सो भोज समान सुन्दर दानी विख्यात भयो, रत्न को पुत्र राजा गोपीनाथ भयो, रत्न ज्यों सुन्दर जोति सहित भयो तैसेही गोपीनाथ को सुत राजा शत्रुशाल महा उदय को भयो जगत में शत्रुशाल को नवल पुत्र शत्रुन के उर मे सालतो रहै राजा भावसिंह को मतिराम कहै है निर्मल जस प्रति

दिन पावे। इहाँ सुरजन कौं छोडिकै भोज कौं लियो भोज कौं छोडिकै रत्न कौं लियो रत्न-कौं छोडि कै गोपीनाथ कौं लियो गोपीनाथ कौं छोडिकै शत्रुशाल कौं लियो शत्रुशाल कौं छोडि कै भावसिंह कौं लियो याते एकावली है ॥ २०४ ॥

अथ माला दीपक लक्षण दोहा।

जहँ दीपक एकावली होत दुहुनि को जोग।
मालादीपक नाम तहँ वरनत सब कवि लोग॥

जहाँ दीपक एकावली इन दोनून को जोग होय तहाँ सब कवि लोग माला दीपक नाम वरनते है ॥ २०५ ॥

उदाहरण कवित्त।

महावीर शत्रुशाल नन्द राव भावसिंह हाथ में तिहारे खग्ग जीति को जमान है। परम पुरुष परमेश्वर कृपा ते आज तिहारोई रूप रज लाज को निधान है॥ अरिन के मुण्डन सौं रावरो रिझायो हर कीन्हो मतिराम वकसीस को वखान है। तुम पातो सुजस सुजस गायो कवि लोग पायो कविलोगनि गयन्दनि को दान है॥

महावीर शत्रुशाल के सुत हे राव भावसिंह आप के हाथ में खडग है सो जीति को जमान है आज परम पुरुष परमेश्वर की कृपा सें आपको ही रूप रजपूतो को लाज को

रचक है रिपुनि के मस्तकनि सौं पापको रिझायो महादेव है तातै मतिराम कहै है सुजस को वर्नन कियो है सो तुमनै सुजस पायो सुजस कवि लोगनि ने गायो । कवि लोगनि ने हाथीनि का दान पायो। इहां शिव कौं छोडि के राजा कौं लियो, राजा कौं छोडि के कविन कौं लियो, कविन कौं छोडि के गयन्दन क दान कौं लियो, यह तौ एकावली राजा वर्न्य कवि लाग पवर्न्यन का पायो, पायो एक धर्म है, यह दीपक यातैं मालादीपक है ॥ १०६ ॥

दोहा ।

कनक वेलि मैं कोकनद तामैं श्यामसरोज ।
तिनमैं मृदुमुसकानि है तामैं मुदित मनोज ॥

सोना की बेलि मैं लाल कमल है तामैं नील कमल है तिन मैं कोमल हँसनि है तामैं प्रसन्न कामदेव है। इहाँ कनकबेलि कौं छोडिकै कोकनद लियो ताकौं छोडि कै श्याम सरोज लिये तिनकौं छोडि के हंसनि लीनी ताकौं छोडिकै मनोज लियो यह यह तौ एकावली और कनक वेलि पवर्न्य नायिका वर्न्य कोकनद पवर्न्य मुख वर्न्य श्यामसरोज पवर्न्य नेत्र वर्न्य है तिनको मुदित रहिबो एक धर्म है यातैं मालादीपक है ॥ १०७ ॥

अथ सार तथा यथा सख्य लक्षण दोहा ।

उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत सज्ञान ।
यथा सख्य क्रम सो कहैं क्रमही बहुरि वखान ॥

उत्तर उत्तर सरस होय तिसकों ज्ञानवान सार कहते हैं क्रम सों कहि के फेरि क्रमही सों बखान करै सो यथा संख्य है ॥ ३०८ ॥

सार उदाहरण सवैया ।

सैलनि को जग ऊँचे कहैं तिनमैं कनका चल को श्रुति गावै । तापर ऊँचो पुरन्दर मन्दिर जो छवि वृन्दनि सों नभ छावै ॥ तापर यों म तिराम वखानत ऊँचो मनोरथ दानि कहावै । दान मै भाऊ की हाथ उचाई कों सोऊ नहीं कल्पद्रुम पावै ॥ ३०९ ॥

जगत है सो गिरिन को ऊँचे बतावैं हैं तिनमे सुमेरु को बेद ऊंचे गावै हैं तिसपै इन्द्र को महल ऊंचो है जो छवि का समूहन सों आकाश कों छावै है ताके ऊपर ऐसे मतिराम कहै है मनोरथ को दानो ऊंचो कहावै है दान दान में भावसिंह के हाथ की ऊंचाइ कों सो कल्पवृक्ष भी नही पावै है । इहां एक से एक ऊंचो है यातें सार है ॥

कवित ।

मधुर मृदुल बैन भाखि चित चोरत है मो रत है नैन दीठि धारि दिल धोज को । भायन ऊँभाय अँगराय रग राखत है आँगुरी हलाय त रजाय कहै चोज को ॥ आन मिलि देखि फिरि

देखि कै कटाच्छन तैं हँसै हरषाय रीति राखत न रोज की । तन मन नैन वैन सरस सरस मनौ पाई आज वाल नैं मुसाहिवी मनोज की ॥

दोहा ।

तन मनादि मैं सरसता अलकार यौं सार ।
सरस सरस वरनैंथवा निरस निरस सो सार ॥

यथा अन्य उदाहरण कवित ।

महावीर शत्रुसाल नन्द राव भावसिंह तेरी धाक अरिपुर जात भय भीय से । कहै मतिराम तेरे तेज पुज लिये गुन मारुत औ मारतण्ड म ण्डल विलोय से ॥ उड़त नवत टूटि फूटि मिटि फाटि जात विकल सुखात वैरी दुखनि समोय से । तूल से तिनूका से तरोवर से तोयद से तारा से तिमिर से तमीपति से तोय से ॥ ३१० ॥

महा सूर शत्रुशाल के सुत नन्द हे राव भावसिंह तेरी धाक सैं वैरीन के पुर डर मैं भीजे से जाते हैं मतिराम कहै हैं तेरे प्रताप के समूह के गुन लिये हुयें पवन और रविमण्डल मथे से जाते है उड़ते हैं नवते हैं टूटते हैं फू टते हैं मिटते हैं फाटि जाते है विकल सूकते हैं वैरी हैं ते दुखनि मैं मिलाये सें रूइ से तृण से तरु से मेघ से तारा से तम से चन्द्र से जल से इहाँ उड़त आदि आठ क्रिया जिस

क्रम से है तिसही क्रम से तूल आदि आठ वस्तु को बर्नन है यातें यथा सख्य है ॥ ३१० ॥

कवित्त ।

एरे वाम नैन मेरे एरी भुज वाम आज तेरे फरकन ते जो वालम विहारि हो । करिहौं गुलाव उपकार गुनमानिनी के देखन विभेटन मे आगे विसतारि हौ ॥ दैहै धन जेती पिय लाय परदेसन तें लैहौं हरषाय तव ऐसी रीति धारि हौ । मूदि नैन दाहिने को दांई भुज दूर राखि तोही ते निहारि हौं मे तोही ते सम्हारि हौं ॥

दोहा ।

क्रम से कहे पदार्थ को क्रम सें कथन जु होय । यथा सख्य तासौं कहत कवि गुलाव वुध लोय ॥

अथ द्विविधि पर्याय लक्षण दोहा ।

कै अनेक है एक मे कै अनेक मै एक ।
रहत जहाँ पर्याय सो है पर्याय विवेक ॥

कै तौ एक मैं अनेक है अथवा अनेक मैं एक रहै जहां क्रम सौं सो पर्याय को विवेक है ॥ ३११ ॥

उदाहरण एक मैं अनेक को सवैया ।

मृदु वोलत कुण्डल डोलत कानन कानन कुंजनि ते निकस्यौ । वनमाल वनी मतिराम

हिये पियरो पट त्यौं कटि मैं बिलस्यो ॥ जब तै सिरमोर पखानि धरें चितचोरि चितै दृत घोर हँस्यौ । जब तैं टुरि भाजि कै लाज गई अब लालच नैननि घानि बस्यौ ॥ ३१२ ॥

नायिका को उक्ति कोमल बोल तो कानन में कुछ इसतो बन कुञ्जन में कह्यो मतिराम कहे है हिया में बन का फूलन को माला बनी है तेसेंही पीलो बस्त्र कमरि मैं बिराजे है जब से मस्तक पे मोर की पाख धरे हुये चित्त को चोर है सो मेरी चोर झांकि के मुसकायो तबसे छिपि के लाज भाजि गई अब आंखिन में लालच आय बस्यौ है इहां एक कृष्ण में क्रम सें अनेक बात हैं याते पर्याय है ॥

अनेक में एक को उदाहरण दोहा ।

सखी तिहारे दृगनि को सुधा मधुर मुसकानि ।
बसी रहत निसिद्यौसहू अब उनकी अखियानि ॥

हे सखी तुम्हारी आखिनि की अमृत सें मीठी हांसी है सो अब कृष्ण की आखिन में राति दिन बसी रहे है इहां एक हासी राधा की आंखिन सें और कृष्ण की आखिन में रही यातें पर्याय है ॥ ३१३ ॥

अथ परिवृति लक्षण दोहा ।

घाटि बाटि है बात को जहां पलटिबो होय ।
तहां कहत परिवृत्ति है कवि कोबिद सब कोय ॥

घाटि अथवा बाधि होय जहां दोय बात को बदलिबो होय तहा परिवृत्ति कहते है कवि पडित सब कोई ॥३१४॥

उदाहरण दोहा ।

मो मन मेरी बुद्धि लै करि हर कौं अनुकूल ।
लै त्रिलोक को साहिबी दै धतूर कैं फूल ॥३१५॥

हे मेरे मन मेरो मति ले के शिव कौं राजी करे धतूरा के फूल दे करिके तीन लोक की मालकी लै इहा धतूरा को फूल देके त्रिलोक की साहिबी लीनी यातैं परिवृत्ति है। ३१५ ।

पुन कवित्त ।

जोर दल जोरि साहिजादो साहिजहां जग जुरि मुरि गयो रही राव मैं सरम सी । कहै मतिराम देवमन्दिर बचाये जाके वर वसुधा मैं वेद श्रुति विधि यौं वसी ॥ जैसो रजपूत भयो भोज को सपूत हाडा ऐसो और दूसरो भयो न जग मैं जसी । गायनि कौ बकसी कसाइनि की आयु सब गायनि की आयु सो कसाइनि कौं बकसी ॥ ३१५ ॥

जबर फौज जोडि कै साहिजादो और साहिजहां जग मैं जुडि कै मुडि गये लाज राव मैं रही, मतिराम कहै है देवतानि के मन्दिर बचाये जिसके जोर सैं पृथ्वी मैं वेद और

श्रुति को रीति ऐसे बसी, जैसो भोज को सपूत रजपूत भयो ऐसो और दूसरो जगत में जयो नहीं भयो गजन को उमर कसाइन को दीनो सब गजन को उमरि कसाइन कों दीनो इहां उमरि को बदले है याते परिवृत्ति है ॥३१६॥

अथ नवोढा सवैया ।

लीन नितंबन ने गुरुता कटि की कटि ने तिनकी कृशताई । रोमन वैनन की ऋजुता लइ वैनन रोमन की कुटिलाई ॥ पायन नैनन मंद गती गहि नैनन पायन की चपलाई । यौं गुन आगरि नागरि अंगन आपस मैं हठि लूटि मचाई ॥ ३१७ ॥

दोहा ।

तिय अंगन पलटो कह्यो यो परिवृत्तिहि होय ।
परिवृत्ति सु पलटो करै अधिक न्यून को कोय ॥

अथ परिसंख्या लक्षण दोहा ।

और ठौर ते मेटि कछु बात एकही ठौर ।
बरनत परिसंख्या कहत कविकोविद सिरमौर ॥

कछु बात और ठौर सें मेटि कै एकही ठौर बरनैं तहां परिसंख्या कहतै है सिरमौर कवि पंडित । ३१८ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सोवत ही मोह-गुन सुजस को लोभ सब-

रनि कौं छोभ जहां करत ययारिये । कहै मति राम एक मान विना मानिनी सयानविना चित्र नि के रूप निरधारिये ॥ तुरंग चपल चन्द्रमडल विकल वेला कुंद है विफल जहां नीचगति वारिये । दानहीन कलभ कटलिदल कपजुत राव भावसिंह जू के राज मैं निहारिये ॥३१८॥

तमोगुन मोवतैही है, मोभ सुजस कोही है जहां हव नि को पवनही भय करे है मतिराम कहै है मानि विना एक मानिनोही है चतुराई विना तसबीरनि के रूप निश्चय हैं, चपल घोडाही हैं मर्याद रहित चन्द्रमण्डलही है बिना फल कुंदही है जहां नीची चाल को जलही है दानरहित हाथी का बचाही है कम्प सहित कदली के पत्रही हैं ऐसे राव भावसिंह जी का राज मैं देखिये है । इहां तमोगुन छोभ चोभादि कौं और ठौर सैं बरजि कै सोवत आदि मैं ठहराये यातैं परिसंख्या है ॥ ३१८ ॥

वनिता भूषन परकीया आगमिष्यत्पतिका परिसंख्या

उदाहरण दोहा ।

सुनत परोसनि को पिया ऐहै आजहि साँझ ।
रही वचनही श्यामता क्षणता कटि ही माँझ ॥

मुग्धा कलहांतरिता सवैया ।

आच न चट कला विचराचत साच न चोरनि

के चरसा में। जोग न लोग लुगाइन के सग भोग न रोगन के धरसा में ॥ हर्ष महारह संत समा गम हर्ष न सौतिन के परसा में। होत न ग्रीषम में बरषा सखि होत सदा बरसा बरसा में ॥

दोहा।

सखि प्रतिबिंब बखान तें है ललितालकार ।
परिसख्य तु चवधे प्रश्न मुग्धा मौन प्रकार ॥

अथ विकल्प लक्षण दोहा।

सम-बलजुत द्वै बात को बरनत जहाँ विरोध।
कविकोविद सबकहत हैं तहँविकल्प श्रुतिसोध॥

समान बल सहित दोय बात को जहां विरोध बरने श्रुति के शोध कवि पंडित तहां विकल्प कहते हैं।

उदाहरण कवित्त।

विपिनि-सरन के चरन तको रावही के चढौ गिरि पर के तुरग परवर में। रावौ परिवार कौं को आपनीये हठ राजसपति दै मिलौ के नगारे दै समर में ॥ कहे मतिराम रिपुरानी निज-नाहनि सौं बोलें यों डरानी भावसिंह जू के डर में। बैर तौ बढायो कह्यौ काहू कौ न मान्यौ अब दातनि तिनूका कै क्रपान गहौ कर में ॥

बन कों तकौ कै राव के चरनहि को सरन तकों पर्वत पै चढौ कै वर्त करिके तुरग पै चढौ कुटव कों राखो कै अपनेहि हठ कों राखौ राज और संपति दे कै मिलो कै नगारा बजा कै सग्राम में मिलो मतिराम कहै है रिपुन की स्त्री अपने पतिन सों ऐसे बोलें है भावसिंह जी के डर में डरपी हुई वैर तो बढा लीनों कोई कों कह्यो नहीं मान्यो अब दातनि में तृन पकडो के हाथ में तरवारि पकडों। इहां विपिनि कै चरन सरन इत्यादि दोय दोय बात समबल है तिन में विरोध यह है एक होय तो दूसरी नहीं होय यातें विकल्प है ॥ १२० ॥

वनिताभूषण गनिका योगमिथ्यत्पतिका विकल्प
उदाहरण दोहा।

अवधि दिवस गनि गावती बोली हिय हर्षानि।
आज राति दुख भानिहै जमराज कि धनदानि॥

अथ समुच्चय लक्षण दोहा।

बहुत भये इकबारगी तिनको गुफ जु होय।
ताहि समुच्चय कहत है कवि कोविद सब कोय॥

एक बात बहुत हुये तिनको गुफ होय तिसकों समुच्चय कहते है कवि पण्डित सब कोई । १२१ ॥

गुफस्तु गुफने वाहो रलकारे च कीर्त्यते।
गुफोनिबंधः इत्यलङ्कारचन्द्रिकायाम्

उदाहरण सवैया।

पाइ इकन्त के बाल सो बालम जो रति रूप कला दरसावै। नाही कढ़ै मुख नारि कैं नाहं जहीं हिय सौ हियरों परसावै॥ काम बढ़ै मतिराम तहीं अति लाल विलासनि कौं सरसावै। जोवै त्रसै मन मोवै अनद मैं रोवै हँसै रस कौं बरसावै॥ ३२२॥

बाल मनै सो बाल एकात मै पाइ जो रूपकला मैं रति को दोखै है नारि के मुख मै नाही कढ़ै है नाह जहा हियो सों हियो भिड़ावे मतिराम कहै है तहा ही काम बढ़ै है लाल के विलासनि कों अत्यन्त सरसावै है देखै है डरपै है आनद मैं मनको भेवे है रोवै है हंसै है रस कौं बरसावै है इहा देखिबो डरपिबो रोइबो हसिबो इत्यादि एक बार हुये याते समुच्चय है॥ १२२॥

बनिताभूषण मुग्धा आगतपतिका प्रथम समुच्चय उदाहरण दोहा।

पिय आये लखि नवल तिय हरखी हसी जँभाय।
काँपी अनुरागी बहरि बैठी सिमटि लजाय॥

द्वितीय समुच्चय लक्षण दोहा।

बहसि करत बहु हेतु जँह एक काज की सिद्धि।
इहौ समुच्चय कहत हैं जिनकी है मति सिद्धि॥

जहां बहुत कारन छोड़ करिके एक कारन की सिद्धि करें यह भी समुच्चय कहते हैं जिनकी बुद्धि सिद्धि है।

उदाहरण कवित्त।

कुंदन से आँग माँग मोतिन सवारी सारी सोहत किनारीवारी केसरि के रंग की। कहै मतिराम मनि मंजुल तरौना छोटी नथुनी विराजै गजमुक्तनि के संग की॥ कुसुम के हार हियो हरति कुसंभी आँगी सकै को वरनि आभा उरज उतंग की। जोवन जरव महा रूप कै गरव गति मदन कै मद मद मोकल मतंग की॥

सोना से अंग हैं मांग मोतीन सें सुधारी है किनारी दार साड़ी ओढ़े है केसर रंग को रंगो मतिराम कहै है निर्मल मणिन को तरौना है छोटी नथ विराजै है गजमोतीन की जड़ी हुई फूलन के हार हैं कुसूमल कंचुकी मन कौं चोरै है उरज ऊँचान की प्रभा को वरनि सकै है जोबन के घोट सें महारूप के गरब सें गति है सो काम का मद कौं और मतंग का मद कौं दूर करै है। इहां नायिका के बहुत कारननैं मतंग को मददूर कियो यातैं समुच्चय है।

वनिताभूषण मध्यागतपतिका द्वितीय समुच्चय।

उदाहरण दोहा।

पिय आये परदेश तैं भेटत परिजन-भीर।
तनु चप श्रवनन चाह नै बढ़ि तियकरी अधीर॥

अथ कारक दीपक लक्षण दोहा ।

एकहि मै क्रम सौं भये तिनको गुफ जु होय ।
सो कारक दीपक कह्यौ कविन ग्रन्थ मत जोय ॥

एक मै क्रम सौं हुया तिनको जो गुफ होय सो कारक दीपक कह्यौ है कविन नें ग्रथनि को मत देखि के ॥११५॥

उदाहरण दोहा ।

फिरि२ आवति जाति भजि राति मधुर मुसकाति
बाललाल को ललितमुख लखिललचाति लजाति॥

फेरि फेरि आती है भजि जाती है राति मधुर मुसकाती है बाल है सो लाल को सुन्दर मुख देखि के ललचाती है लजाती है इहां आवो जावो मुसकावो इत्यादि क्रम सें गुफ है याते कारकदीपक है ॥ ११६ ॥

अथ समाधि लक्षण दोहा ।

और हेतु के मिलन ते सुकर होत जहँ काज ।
बरनत तहाँ समाधि है सकलसुकवि सिरताज ॥

अन्य कारन के मिलने सें जहा काज ठीक होय तहा समाधि बरनती हैं सपूर्ण सुकबिन के सिरताज ॥ १२० ॥

उदाहरण सवैया ।

आयो बसन्त रसाल प्रफुल्लित कोकिल-बोलनि औन सुहाई । भौंरनि को मतिराम किये गुन काम प्रसून कमान चढाई ॥ रावरो रूप

लग्यौ मन में तन मे तिय के झलकी तरुनाई।
धीर धरौ अकुलात कहा अब तौ बलि वात सबै
बनि आई ॥ ३२८ ॥

बसन्त आयो है आम फूले हैं कोकिल की बोली का
मन कों सुहाई है मतिराम कहै है अलिन की चित्तो किये
हुये कामदेव नें फूलन को धनुष चढायो है आपको रूप
मन मे लग्यो है तिया के तन में जवानी झलकी है धीरज
राखो काहे अकुलाते हो अब तो वारी जाऊँ सब बात बनि
गई है। इहा बसन्तादि अन्य कारन सों मिलाप कारज
सिद्ध भयो यातें समाधि है ॥ ३२८ ॥

अथ प्रत्यनीक लक्षण दोहा।

प्रबल शत्रु के पक्ष पर जहँ विक्रम उल्लास ।
प्रत्यनीक तासो कहत कविजन बुद्धिविलास ॥

जबर बैरी के पक्षी पै जहा पराक्रम को दर्प होय तासों
प्रत्यनीक कहते हैं कबि लोग मति के आनद सें । ३२८ ॥

उदाहरण दोहा।

तो मुख-छवि सौं हारि जग भयो कलक समेत।
सरद-इंदु अरविंदमुखि अरविंदनि दुख देत ॥

तेरे मुख की शोभा सौ हारि के जगत में कलक सहित
भयो, शरद ऋतु को चन्द्रमा है सो हे अरविन्दमुखी कम
लनि कों दुख देता है इहा चन्द्रमा ने मुख के पक्षी कम
लनि कौं दुख दियो यातें प्रत्यनीक है ॥ ३३० ॥

अथ काव्यार्थापत्ति लक्षण दोहा ।

जोपै जोतो यह कहा इहिंविधि जहा बखान ।
कहत काव्य पद सहित तहँ अर्थापत्ति सुजान ॥

जो पै जो है तो यह कहा है जहाँ इस तरह को बर्नन होय तहा सुजान काव्य पद सहित अर्थापत्ति कहते है ॥

उदाहरण कवित्त ।

बिंब से अरुन अति अमल अधर पर मन्द बिलसत चारु चाँदनी सुवास है। कासौं जाय बरनि बनक नाकबेसरि की ललित बिलोकनि पै बिबिधि बिलास है ॥ कबि मतिराम पाय सहज सुबास श्वास भौरनि कीभीर न तजत आस पास है। कहा दरपन कैसे पावत बदनजोति चन्द जाको चेरो अरबिंद जाको दास है ॥३३२॥

बिंदूरी के लाल और अत्यन्त निर्मल ओठ पै मंदी सुन्दर चांदनी और सुवास विशेष लसै है अर्थात् हास्य और लाल सुगन्ध की आसा पायके भौंरान की भीड़ है सो आस पास कों नहीं छोडे है। नाक और नथ की बनावटि किस पै बरनी जाय है सुंदर चितवनि पै अनेक तरह के आनंद हैं काच कहा है मुख की छबि कों कैसे पहुंचे जाको चाकर चन्द्रमा है कमल जिसको दास है। इहा चन्द कमल दास है तौ दर्पन कहा है यह कहनि है याते काव्यार्थापत्ति है ॥ ३३२ ॥

अथ अर्थान्तरन्यास लक्षण दोहा ।

कहि विशेष सामान्य पुनि कै सामान्य विशेष।
सो अर्थान्तर न्यास हैं वरनत मति उल्लेष ३३२

विशेष कहे फेरि सामान्य कहे अथवा सामान्य कहि के विशेष कहे सो अर्थान्तरन्यास है मति अधिक बरनते हैं ॥ ३३२ ॥

उदाहरण सवैया ।

रावरे नेह को लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसराये। डारि दियो गुरुलोगनि को डर गांव चवाय में नांव धराये ॥ हेत कियो हम जो तो कहा तुम तो मतिराम सबै वहराये । कोउ कितेक उपाय करो कहूं होत हैं आपने पीव पराये ॥ ३३४ ॥

आप के हित कों लाज छोडी और घर के सब काम भूले गुरु लोगनि को डर गेरि दियो गांव की निन्दा में नाव धराये हम ने हित कियो सो तो कहा है मतिराम कहे है तुमनें तो सब टालि दिये कोई कितनाही उपाय करो कहू पराये पति अपने होते हैं अर्थात नहीं होते इहा तुम विशेष कहि के पराये पीव अपने नही होंय यह सामान्य कह्यो यातें अर्थान्तरन्यास है ॥ ३३४ ॥

पुन दोहा ।

गुन औगुन को तनकहु प्रभु नाही करत विचार।
केतकि कुसुम न आदरत हर सिर धरत कपार॥

प्रभु है सो गुन औगुन को जरा भी विचार नही करते है केतकी का फूलनि को आदर नहीं करते हैं महादेव सिर पै मुड धरते है इहा प्रभु यह सामान्य कह्यो फेरि हर यह विशेष कह्यो यातैं अर्थान्तरन्यास है बहु व्यापक सामान्य अल्पव्यापक विशेष है ॥ ३१५ ॥

विकस्वर लक्षण दोहा।

कहि विशेष सामान्य पुनि कहिये बहुरि विशेष।
कहत विकस्वर नामतहँ जे कवि अति मतिलेष॥

विशेष कहि कै फेरि सामान्य कहि के फेरि विशेष कहिये तहा विकस्वर नाम कहते है जे कवि अति बुद्धि के लिखे हैं ॥ ३१६ ॥

उदाहरण दोहा।

मधुप मोह मोहन तज्यो यह स्यामन की रीति।
करी आपने काज लौं तुम्हे भाति सौं प्रीति ३३७

गोपीन की उक्ति उद्धव सें। हे मधुप मोहनै मोह तज्यो यह कालान की रीति है, करी अपने काज तक तुमकौं अपने रग सौं प्रीति है इहाँ मोहननै मोह तज्यो यह विशेष स्यामन की रीति यह सामान्य तुमकौं भाति सैं प्रीति यह विशेष कह्यो यातै विकस्वर है ॥ ३१७ ॥

अथ प्रौढोक्ति लक्षण दोहा।

जो अहेतु उत्कर्ष को ताहि बखानत हेत।
प्रौढोकति तासौ कहत जे कवि सुमति सचेत॥

जो बड़ाई को अकारन है तिसकों कारन करै तासों प्रौढोक्ति कहते हैं जे कबि सुमति सचेत हैं ते ॥ ११८॥

उदाहरण दोहा।

गगनीर विधुरुचि झलक मृदुमुसकानि उदोति।
कनकभौन के दीप लौं जगमगाति तनजोति ॥

गंगा के जल मैं चन्द्रमा की कांति की झलक को कोमल हँसनि को उदोतो है सोना के घर के दीपक सी तन की जोति जगमगावै है। इहां गंगानीर कनकभवन अहेतु को उत्कर्ष के हेतु किये यातें प्रौढोक्ति है ॥ ११८॥

अथ संभावन लक्षण दोहा।

जो यौं होय तु होय यौं जहँ संभावन होय ।
संभावन तासौं कहत बिमलज्ञान मतिधोय ॥

जो यौं होय तौ होय जहां ऐसी संभावना होय तासों संभावना कहते हैं निर्मल ज्ञान सें बुद्धि कों धोय के ॥११९॥

उदाहरण कबित्त।

चलत सुभाय पाय पैजनिन की झनक उर उपजन लागे केलि के कलोल हैं। फूलनि के हार हियरे सों हिरकनि लागी छलकन रस नैन तामरस लोल हैं ॥ भौन के सरोज के परस मतिराम लाल कंटकित होन लागे कोमल कपोल हैं। तौ बनै बनाव मिले जोबन में कहूं नीके लोचन के लोचन के बासर अमोल हैं ॥

सहज सुभाय में चलतें पग की पैजनीनि की अवाज सें केलि के,कलोल हिया में उपजनै लगे हैं पुष्पन,के,हार हिया सों हिरकवा लग्या हैं चचल नैन कमल छलकने लगे हैं मतिराम कहै है हे लाल कानन के कमल के मिलने सें कोमल गात रोमाचित होने लगेहैं तौ बनाव बनै जो कहू वन में अच्छी तरह मिले लोचन की जवानी के दिन अमोल हैं इहाँ जोवन से मिलै तौ बनो बनै यह है यातें सभावन है ॥ ९४१ ॥

अथ मिथ्याध्यवसिति लक्षण दोहा ।

एक झुठाई सिद्धि कौ झूठो वरनत और ।
तहँ मिथ्याध्यवसाय कौं कहत सुमति मतिदौर ॥

एक झूठ की सिद्धि कौं और झूठ वर्नै तहा मिथ्याध्यवसित कौं सुमति हैं ते मति को दौड सें कहते हैं ॥

उदाहरण दोहा ।

खल-वचननि की मधुरता चाखि साप निज श्रोन।
रोम रोम पुलकित भये कहत मोद गहि मौन ॥

दुष्टन के वैननि की मिठाई कौं सर्प अनेक काननि सौं चाखि कै बाल पुलकित भये मौन पकरी है सो अनद कौं कहै है इहाँ खल बचननि में मधुरता झूठो वर्नन है सांप के कान नहीं गूगो कहै नही यह झूठ है याते मिथ्याध्यवसित है ॥ ९४६ ॥

अथ ललित लक्षण दोहा ।

वर्न्य वाक्य के अर्थ को जहँ केवल प्रतिबिंब ।
प्रस्तुत मे वरनत ललित निर्मल मतिविधु बिंब॥

वर्न्य वाक्य के अर्थ को जहा केवल प्रतिबिंब होय प्रसंग मैं ललित वरनते हैं निर्मल मति रूप चन्द्रमा के बिंब है ते।

उदाहरण दोहा ।

मेरी सीख सिखै न सखि मोसौं उठै रिसाय ।
सोयो चाहति नींद भरि सेज अँगार बिछाय ॥

हे सखी मेरी सीख नही सीखे है मोसौं रोस करि उठै है, नीद भरि सोयो चाहै है अंगारान को सेज बिछाय कै इहा कलहारिता सूं सखी ने कही तू मेरा कह्या से नही मनो तासौं दुख पावै है यह बिंब है यह प्रति बिंब है यातैं ललित है । १४५ ॥

रहस्यव्यंग्यार्थचन्द्रिका सवैया ।

बात सुनै नहि तू जन की मन की करतूति न मै मन लावै । लाभ अलाभ नहीं समुझै उर भी सुरझी न गुलाब लखावै ॥ काज अकाज समान गनै अपकीरति कीरति सी भल भावै । तू कसि है घर आवत संपति हाथन द्वार किवार लगावै ॥ १ ॥

दोहा।

धनदायक सैं नहि मनी गयैं करत उपचार ।
कलहान्तरिता पुरतिया है ललितालङ्कार ॥ २ ॥

अथ प्रहर्षन लक्षण – दोहा।

जहँ उत्कण्ठित अर्थ की विन उपायही सिद्धि ।
तहाँ प्रहर्षन कहत हैं जे कविजन मति सिद्धि ॥

जहा वाञ्छित अर्थ की विना उद्यमही सिद्धि होय तहा प्रहर्षन कहते है जे कवि लोग मति सिद्धि है ते॥१४६॥

उदाहरण – दोहा।

स्याम वसन मैं स्यामनिशि दुरी न तिय की देह।
पहुँचाई चहुओर घिरि भौंर भौंर पिय गेह ॥

काला कपरान मैं कारो राति मैं तिया की देह छिपी नहीं चारों तरफ सिमटि कै भौंरान की भौडि नै पिया के घर पहुचाई इहा बिना उपायही पिया के घर पहुचिवो सिद्धि भयो यातैं प्रहर्षन है। १४७॥

दोहा।

मनभावन के व्याह की सुनी सलौंनी वात ।
आँगी मैं न उरोज अरु आनँद उर न समात ॥

सलौनी नैं पीतम के विवाह को बात सुनी कचुकी मे कुच नहीं माते हैं और हृदय मे आनन्द नही माता है। इहाँ पीहर मैं कष्ण सैं मिलिवो विना उपाय सिद्धि भयो यातैं प्रहर्षन है ॥ १४८॥

व्यंग्यार्थचन्द्रिका—सवैया ।

जा सँग नेह निरन्तर ही अति हास बिलासन मोद बढायो । खेलत खेल गुलाब करै नित ही चित चाहि कियो मनभायो ॥ सास रिसात रही तबहू कबहू सपनेहु न कोप जनायो । सो ननदी ससुरारि सिधारत कारन कौन बधू सुख पायो ॥ १ ॥

दोहा ।

अब ह्वै है पिय तें मिलन तिय हर्षी इहिं भाय ।
प्रहर्षन सु बिन जतन ही बाञ्छितार्थ हो जाय ॥

द्वितीय प्रहर्षन लक्षण दोहा ।

जहँ मन इच्छित अर्थ ते अधिक सिद्धि मतिराम ।
तहाँ प्रहर्षन औरऊ बरनत मति अभिराम ॥

मतिराम कहै है जहाँ मन वाछित प्रयोजन से ज्यादा काम होय तहाँ और भी प्रहर्षन बरनते हैं सुन्दर मति जे हैं ते । २४९ ॥

उदाहरण दोहा ।

चाहत सत पावत सहस गज पावत हय चाहि ।
भावसिंह यों दानि है जगत सराहत जाहि ॥

सौ चाहै हजार पावै घोडा चाहै हाथी पावै भावसिंह ऐसा दानी है जाकों जगत सराहै है । इहां मन वाछित सौ रुपया घोडा से हजार रुपैया हाथी पाये यातें दूसरो प्रहर्षन है ॥ २५० ॥

पुनः कवित्त ।

चित्र मै विलोकतही लाल को वदन बाल जीते जिहिँ कोटि चन्द सरद पुनीन के । मुसकानि अमल कपोलनि के रुचि छन्द चमकै तरोननि के रुचिर चुनीन के ॥ पीतम निहारो बाँह गहत अचानकही जामै मतिराम मन सकल मुनीन के । गाढे गही लाज मै न कठ ह्वै फिरत बैन मूल छ्वै फिरत नैन वारि वरुनीन के॥

बाल है सो तसवीर मे कृष्ण को मुख देखै हौ, कैसो है बाल जिसनै सरद की पून्यौं के कोटि चन्द्रमा जीते हैं अति निर्मल है कपोलनि के रुचि के समूहनि मै तरौंनान को चुनीन के सुन्दर रुचि के छन्द चमकैं हैं ऐसी नायिका ने अचानचक पीतम कौं बाह पकडतो देख्यो कैसो है पीतम मतिराम कहै है जामैं सब मुनीश्वरन के मन लाज के मनै गाढै पकडी वचन कठ मे आय फिर जाते हैं। नैनन को जल बाफनोन को मूल छूके फिरै है। इहाँ चित्र देखतैं कृष्ण की प्राप्ति भई याते दूसरो प्रहर्षन है ॥ २५१ ॥

तृतीय प्रहर्षन लक्षण दोहा ।

जहाँ अर्थ की सिद्धि को जतनहि ते फल होय ।
इहौ प्रहर्षन कहत है कवि कोविद सब कोय ॥

जहा प्रयोजन की सिद्धि को फल जतन से होय यह भी प्रहर्षन कहते हैं कवि पडित सब कोइ ॥ २५२ ॥

उदाहरण दोहा।

हरि की सुधि कौं राधिका चली अली के भौन।
हँसत बीचही मिलि गये बरनि सकै कवि कौन॥

कृष्ण की खबरि कौं राधिका है सो सखी के घर चली बीच में हँसते हुए मिलि गये सो सुख कौन बरनि सकै है इहां कृष्ण मिलाप का जतन सौं अचाचक्की मिले यातें तीसरो प्रहर्षन है ॥ ३५३ ॥

अथ बिषाद लक्षण दोहा।

मन इच्छित के अर्थ को प्रापति जहाँ बिरुद्ध।
तहँा बिषादहि कहत हैं जे कबिजन मति सुद्ध॥

जहां मन बांछित प्रयोजन की प्राप्ति में उलटो होय तहां बिषादही कहते हैं जे कबिलोग मति शुद्ध हैं ते।३५४।

उदाहरण सवैया।

आवत मैं हरि कौं सपने लखि नैसुक बाट सकोचन छोडी। आगे ह्वै आडे भये मतिराम चली सुचितै चप लालच ओडी॥ ओठनि को रस लैन कौं मोहन मेरी गही कर कंपत ठोडी॥ और भटू न भई कछु बात गई इतनेही मैं नींद निगोडी॥ ३५५॥

हरि कौं सुपने मैं आवते देखि के सकोचनि मैं थोडी राह छोडो मतिराम कहै है अगाडी होय के आडे हो

गये सुचित्त कों चलाय के नैननि में लालच कों ओटि कै अधरनि को रस लेवा कों मोहन नें कापता हाथ सों ठोडी पकडी। है बहन और कछू बात नहीं हुई इतनेही मैं नि गोडी नींद जाती रही। इहां चुम्बनादि वाञ्छित सें उलटो वियोग भयो याते विषाद है॥ ३५५॥

अथ उल्लास लक्षण दोहा।

औरें के गुन दोष ते औरे को गुन दोष।
वरनत यों उल्लास है जे पंडित मतिकोष॥

और के गुन दोष से और कों गुण दोष होय यों उल्लास बरनते है जे पंडित बुद्धि के भंडार हैं ते। अर्थात् गुन से गुन दोष से दोष गुन से दोष दोष से गुन यों चारि भेद जानिये॥ ३५६॥

गुन ते गुन उदाहरण सवैया।

गुच्छनि के अवतंस लसै सिखिपच्छनि अच्छ किरीट बनायो। पल्लव लाल समेत छरी कर पल्लव से मतिराम सुहायो॥ गुंजनि के उर मंजुल हार निकुंजनि ते कढि बाहिर आयो। आज को रूप लखे ब्रजराज को आजही आँखिन को फल पायो॥ ३५७॥

फूलन के गुच्छा ऊपर लसें हैं ऐसो मोरनि की पाँखन को सुन्दर मुकुट बनायो है लाल पानन समेत कामडी हाथ

मे है नवीन पान से हाथनि में शोभित है चिरमठौन व हृदय में सुन्दर हार है निकुजनि मे से निकसि के बाहरि आयो है कृष्ण को आज को रूप देखने से आजही नैननि को फल पायो है। इहा कृष्ण के गुन सें नैननि कों गुन भयो याते उल्लास है ॥ ३५० ॥

दोष ते दोष उदाहरण दोहा।

सचिन के वस जो नृपति सो न लहत सुखसाज।
मनहि बाँधि दृग देत हैं मनहु मार कों राज॥

दिवाननि के बस जो राजा है सो सुख के समान नही पावै। नैन हैं सो मन कों कैद करिकै कामदेव कों राज देते हैं। इहा नैन दोष ते मनोन कों दोष है यातें दूसरो उल्लास है ॥ ३५८ ॥

गुन ते दोष को उदाहरण दोहा।

दुख न मानि जो तजि चल्यो जानि अँगार गँवार।
छितिपालनि की माल में तैंही लाल सिंगार॥

गवार है सो अगार जानि के छोडि चल्यौ तौ दुख मति माने है लाल भूपालन की माला में तूही सिंगार है। इहा लाल के गुन तें गवार कों दोष है याते तीसरो उल्लास है ३५८ ॥

दोष ते गुन को उदाहरण दोहा।

दधि छुडाय मोहन लियो सखी सघन वन ठौर।
वडो लाभ मन में गुन्यौं जोन कियो कछु औरं॥

हे सखी सदा नयन को ठौर मे मोहन ने दृष्टी छीन लियो मैंने मन मैं बडो लाभ जान्यौ जो कछु और नही कियो। इहा कृष्ण के दोष सें आप को गुन भयो यातें चतुर्थ उल्लास है ॥ ३६० ॥

अथ अवज्ञा लक्षण दोहा।

औरै के गुन दोष ते औरै के गुन दोष ।
जहँ न अवज्ञा तहँ कहत कविजन बुद्धि अदोष॥

जहा और के गुन दोष सें और कौं गुन दोष नही होय तहा अवज्ञा कहते हैं ते। ३६१ ॥

उदाहरण सवैया।

रावरे नेह कौं लाज तजी अरु गेह के काज सबै बिसराये। डारि दियो गुरुलोगनि को डर गाव चवाय मे नाव धराये ॥ हेत कियो हम जो तो कहा तुम तौ मतिराम सबै बहराये ॥ कोऊ कितेक उपाय करौ कहूं होत है आपने पीव पराये ॥ ३६२ ॥

अर्थ अर्थान्तर न्यास मे लिख्यौ है इहा नायिका के गुन दोष नायक कौं नहीं लगे यातें अवज्ञा है ॥ ३६२ ॥

दोहा।

मेरे दृग वारिद वृथा बरषत वारि प्रवाह ।
उठत न अङ्कुर नेह को तो उर ऊसर माह ॥

मेरे नेन मेघ नाहक जल समूह गेरते है तेरा हिया रूपकाल में रमै प्रेम को कुरो नहीं निकसै इहा नायिका के गुन दोष नायक कों नहीं लगी यातें अवज्ञा है ॥ ३६१ ॥

दोहा।

कहा भयो जो तजत है मलिन मधुप दुख मानि।
सुवरन वरन सुवासजुत चम्पक लहै न हानि ॥

काई हुयो जो त्यागै है मलीन भौंरो दुख मानि कै सोना के रग सुगन्ध सहित चम्पो है हानि नही पावै इहा चम्पक के गुन दोष भौंर कों नहीं लगी यातैं अवज्ञा है ॥

इष्टवनिताभूषन आकृति गुप्ता उदाहरन—सवैया।

प्रात लला नवला घर आय हँसि हरषाय लुभाय महाही । देखि तिन्हे सिर नाय रही मुसकाय रिसाय कही कछु नाही ॥ ताहि रिझावन कों मनमोहन चाल अनेक करी चित चाही । पै रस रोस प्रकाश कयो नहि जानि न जाय कहा यह आही ॥ १ ॥

दोहा।

पिय विनती अपराध लखि रीझी खिजीन सोय।
अवज्ञा सुगुन दोष करि जहँ गुण दोष न होय॥

अथ अनुज्ञा लक्षण—दोहा।

करत दोष की चाह जहँ ताही मैं गुन देखि ।
तहा अनुज्ञा कहत है कविजन ग्रन्थनि लेखि ॥

जहा दोष की चाह करै तिसी मैं गुन देखि के तहा अनुज्ञा कहते है कवि लोग ग्रन्थन को लेखि कै ॥३६५॥

उदाहरण सवैया।

मोर पखानि किरीट बन्यो मुकुतानि के कुण्डल श्रौन विलासी । चारु चितौनि चुभी मतिराम सु क्यौं बिसरै मुसकानि सुधा सी ॥ काज कहा सजनी कुलकानि सो लोग हँसैं सिगरे ब्रजवासी॥ मैं तौ भई मनमोहन को मुख चन्द लखे बिन मोल की दासी ॥ ३६६ ॥

मयूर के परन् को मुकुट बन्यो है मोतिन के कुण्डल कानन मै बिलास करते है मतिराम कहै है सुन्दर बिलोकनि गडि गई सो कैसे भूलै हँसनि अमृत सी। हे सखी कुल की मर्यादि सैं काहू काम है सब ब्रजबासी मनुष्य हँसते है मैं तौ मोहन को मुखचन्द्रमा देखिकै बिना मोल की चेरो हो गई इहा दासी होबो दोष है ताको गुन मानि के चाह भई यातैं अनुज्ञा है ॥ ३६६ ॥

पुन सवैया।

क्यौ इन आँखिन सौं निरसङ्क ह्वै मोहन को

तन पानिप पीजे। नैक निहारें कलङ्क लगे इहिं गाव बसैं कहौ कैसे कै कीजे ॥ होत रहै मन यौ मतिराम कहूं बन जाय बड़ो तप कीजे। ह्वै बनमाल हिये लगिये अरु ह्वै मुरली अधरारस लीजे ॥ ३६७ ॥

कैधे इन नैनन सौं निडर होय कै मोहन का शरीर की पानी पीजे नेक देखे सैं कलङ्क लगे है या गाम में बसि के किस तरह जीवैं मतिराम कहै है मन ऐसे होतो रहै है कहौ कानन में जाय कै बड़ो तपस्या कोजिये तिससे बनमाला होय हिया सौं लागिये और बंसी होय ओठनि को रस लीजिये इहां बनमाल मुरली हाइबो दोष है ताको गुन मानिके चाह्यो यातैं अनुज्ञा है ॥ १६० ॥

हृष्टदृष्यगार्यचन्द्रिका – सवैया।

टाजन दे टुर जीवन कौं अरु लाजन दे स-जनी कुलवारे। साजन दे मन को नवनेम निवा-जन दे मनमोहन प्यारे ॥ गाजन दे ननदीन गुलाब विराजन दे उर मैं गुन भारे। भाजन दे गुरु लोगन को डर बाजन दे अब नेह नगारे ॥

अथ लेस लक्षण – दोहा।

जहां दोष गुन होत है जहां होत गुन दोष ।
तहां लेस यह नाम कहि बरनत कवि मति कोष॥

जहां दोष है सो गुन होय और जहां गुन है सो दोष होय तहां लेस या नाम कह करिकै बुद्धि के भंडार कवि बरनते हैं ॥ ३६७ ॥

दोष ते गुन को उदाहरण दोहा।

कत सजनी है अनमनी अँसुवा भरति ससंक ।
बड़े भाग नँदलाल सों झूठहु लगत कलंक ॥

हे सखी क्यों उदास होय कै डर आसू भरती है कृष्ण सों झूठे ही कलंक लगे है तो बड़े भाग हैं । इहां कलंक दोष को गुन मान्यो याते लेस है ॥ ३६८ ॥

गुन ते दोष को उदाहरण दोहा।

प्रतिबिम्बित तो बिम्ब मैं भूतल भयो कलंक ।
निज निर्मलता दोष यह मन मैं मानि मयंक ॥

तो बिम्ब मैं प्रतिबिम्बित होंगे से कलंक भयो मयंक मैं यह दोष अपनो निर्मलता मानी । इहां निर्मलता गुन सैं कलंक दोष भयो याते लेस है ॥ ३६९ ॥

अथ मुद्रा लक्षण दोहा।

प्रकृत अर्थ पर पदनि सों गुढ़ प्रकासत अर्थ ।
मुद्रा तासौं कहत हैं कवि मतिराम समर्थ ॥

प्रस्तुत अर्थ के पदनि सों और अर्थ गुढ़ निकसै तासों मुद्रा कहते हैं मतिराम कहै है समर्थ कवि हैं ते ॥३७०॥

उदाहरण दोहा।

देह दीप दीपति दिपै वदन चन्द की जोति ।
दामिनिदुति मुसकानिरुद् सुखकोखानिउदोति॥

देहरूपी दिया की प्रभा दिपै है मुखचन्द्रमा की जोति है बीजरी की कान्ति है मृदुमुसकानि है सो सुख को खानि सोभित है। इहा दीप चन्द दामिनी निकसे याते मुद्रा है ॥ १७१ ॥

अथ रत्नावली लक्षण दोहा।

प्रस्तुत अर्थनि को जहाँ क्रम तें थापन होय।
तहाँ कहत रत्नावली कवि रस बुद्धि समोय॥

जहा प्रासगिक अर्थनि को क्रम से आरोप होय तहा रत्नावली कहते है कवि हैं सो रस मे बुद्धि कों समोय के।

उदाहरण कवित्त।

जीतय जे रावत ऐरावत सों जग मग पुण्डरीक के गनत पुण्डरीक छद हैं। वामन वामन सदु कुमुद कुमुद गनै अजन के जैतवार अजन से कद हैं॥ पुष्पदन्तहू के दन्त तोरय ज्यौं पुहुप सार छीन लेत सार्वभौमहू के सदा मद हैं। प्रबल प्रतीक सुप्रतीक के जितैया रैया राव भावसिंह तेरे दान के दुरद हैं॥ ३७३॥

जो रावत ऐरावत सों जग जीतें पुण्डरीक के अगनि कों कमल के पत्र गनते हैं वामन कों वामन गनते हैं। अजन को जीतनेवाले हैं अञ्जन से कद के हैं पुष्पदन्त के दातनि कों तोरें जैसें फूलनि को मार सदा सार्वभौम को

मद कों भी छोनि लेत है प्रबल प्रतीक है सुप्रतीक के जो तनैवारे है, हे राजान के राजा भावसिंह तेरे दान के दुरद हैं ते। इहा ऐरावतादि दिग्गज क्रम तें कहे यातें रत्नावली है। १७३॥

अथ तदगुन लक्षण दोहा।

जहाँ आपनो रंग तजि लेत और को रंग।
तदगुन तहँ वर्नन करत जे कवि बुद्धि उतंग॥

जहां आपनो रंग छोड़ि कै और को रंग लेत तहां तदगुन वर्नन करते हैं जे ऊंची मति के कवि हैं ते॥१७४॥

उदाहरण सवैया।

हीरनि मोतिन के अवतंसनि सोने के भूषन की छवि छावै। हार चमेली के फूलन के तिन मैं रुचि चंपक की सरसावै॥ अंग के संग तें के-सरि रंग की अम्बर सेत मैं जोति जगावै। बाल छबीली छपाये छपै नहिं लाल कहौ अब क्यों-करि आवै॥ १७५॥

हीरा मोतीन का गहनानि मैं सोना का गहनान की छवि छावे है चमेली का फूलनि का हार है तिनमैं चंपा की कान्ति सरसावै है। तन के संयोग सें स्वेत वस्त्र मैं केसरि का रंग की जोति जगावे है। छवि की भरी नायिका है सो दुरायें तें दुरै नहीं है लाल कहो अब कैसें आवै

इहा गहना हार वसनि ने आपनों रंग छोडि संग रग लियो याते तदगुन है ॥ १७५ ॥

वनितभूषन । मध्यम नायक उदाहरन दोहा ।

पिय अनबोली लखि तुरत ठठकि रहे ब्रजनाथ।
पुनि हँसती लखि जाय ढिग भये हरितभरिवाथ॥

अथ पूर्वरूप लक्षण दोहा ।

जहँा और को रग तजि बहुरि आपनों लेत ।
बरनत पूरव रूप तहँ कवि मतिराम सचेत ॥

जहा और को रग छोडि के फेरि आपनों रग ले ले तहाँ पूर्व रूप बरनते हैं मतिराम कहे है सचेत कवि है ते।

उदाहरण दोहा ।

मुकुत हार हरि के हिये मरकत मनिमय होत।
पुनि पावत रुचि राधिका मुख मुसकानिउदोत॥

मोतीन को हार हरि के उर में पन्नामय होता है फेरि रुचि कों पावै है । राधिका के मुख को हाँसी के उदोत सें इहा मोती ने पन्ना को रग लेय फेरि आपनों लियो याते पूर्व रूप है ॥ १७७ ॥

द्वितीय पूर्व रूप लक्षण दोहा।

प्रगटित पूरव दशहि को जहँ अनुवर्तन होत ।
दूजो पूरव कहि तहाँ बरनत पडित गोत ॥

जहा पूरव तुल्य को अनुवरता प्रगटित होय तहाँ दूसरो पूर्व रूप पडितन के समूह बरनते हैं ॥ १७८ ॥

उदाहरण दोहा।

वदन चन्द को चाँदनी देह दीप की जोति ।
राति बिते हू लाल वहि भौन राति सी होति ॥

मुख चन्द्रमा की चाँदनी है देह रूपो दिया की जोति है। हे लाल राति बीते पै भी उस घर में राति सी होती है। इहा दिन होने पै भी रातिही रही यातें दूसरो पूर्व रूप है ॥ १७८ ॥

अथ अतदगुन लक्षण दोहा।

जहाँ सग मे और को रग कछू नहि लेत ।
तहाँ अतद्गुन कहत हैं कविजन बुद्धिनिकेत ॥

जहा सगति में को और कछू रग नहीं ले तहां अतदगुन कहते हैं कवि लोग बुद्धि के घर ॥ १८० ॥

उदाहरण दोहा।

लाल,बाल अनुराग सो रँगत रोज सब अग ।
तऊ न छोडत रावरो रूप साँवरो रग ॥ ३८१ ॥

हे लाल नायिका है सो प्रेम सौं रोजोना सब अग रँगे है तौ भी आप को रूप है सो स्याम रग कों नहीं छोड़े है अर्थात अनुराग को रग नही लगे है। इहा स्याम नै सगति को गुन नहीं लियो यातें अतद्गुन है ॥ १८१ ॥

अथ अनगुन लक्षण दोहा।

सम रुचि संगति और के बढत आपनों रग ।
अनगुन तासों कहत हैं जे कवि बुद्धिउतग ॥

समान कांति और की संगति सें आपनों रंग बढ़ै तिह सौं अनगुन कहते हैं जे कवि ऊंची मति के हैं ते ॥१८३॥

उदाहरण दोहा।

विरी अधर अंजन नयन मेंहदी पग अरु पानि।
तन कंचन के आभरन लसत सरस छवि खानि॥

ओठनि में बीडी नैननि मे कज्जल पग और हाथन मैं मेंहदी शरीर मैं सोना का गहना अधिक शोभा की खानि लसते हैं इहां बिरी अंजन मेंहदी आभरन मैं समान रंग अधरादि संगति सें अपनों रंग अधिक भयो याते अनुगुन है।

अथ मीलित लक्षण दोहा।

एक रूप ह्वै जाति मिलि जहाँ होत नहिं भेद।
बरनत मीलित है तहाँ जिनकी बानी वेद ॥-

जहां मिलि के एक रूप हो जाय भेद नहीं होय तहां जिनकी बानी वेद हैं ते मीलित बरनते हैं॥ १८४ ॥

उदाहरण कवित्त।

अंगनि मैं चन्दन घनसार अंगराग सेत सारी छीर-फैन की सी आभा उफनाति है। राजत रुचिर रुचि मोतिन के आभरनि कुसुमकलित केस सोभा सरसाति है॥ कवि मतिराम प्रान प्यारे को मिलन जाति करिकै मनोरथनि मृदु-मुसकाति है। होति ना लखाई निसि चन्द की

उज्यारी मुख-चन्द की उज्यार तन छाहीं, छपि जाति है ॥ ३८५ ॥

अगनि मैं सेत चन्दन कपूर अगराग देत सारी की सी उफनै है मोतीन का गहनानि की सुन्दर कान्ति राजै है फूलनयुत बारन की साभा सरसाती है मतिराम कवि कहै है प्रानप्यारे सैं मिलने कौं जाती है मनोरथन कौ करिके कोमल हँसती है राति मे चन्द्रमा की चाँदनी मैं जानी नहीं पड़े है मुख चन्द्रमा को चाँदनी सैं तन छाया भी छिपि जाती है। इहा चाँदनी मैं नायिका मिलि गई यातैं मीलित है। ३८५ ॥

सवैया।

देखि देखि सजनी सयानी सबै कचन के रग सम अगन मैं भूषन बनावै ना। नायनिहू लाय लाय मलि मलि भूलि जाय जावक लगायो ,ना लगायो पार पावै ना ॥ सुकवि गुलाब त्यो प्रदीप कौ बताये बिन बैठे जिहिं भौन जनी दीपक ,ज-गावै ना। कुन्दन कमालन के मालन मै हीर लाल लालन लगाये बिन लाल पहिरावै ना ॥

दोहा

रग स अग प्रकास को गर्व जनावत जोय।
रूपगर्बिता पुरतिया मानु लेन तैं होय ॥ २ ॥

पायन नायक मिलि गयो यातें मीलित भाय ।
मीलित मोलित मैं जहाँ भेद न जान्यो जाय ॥

अथ सामान्य लक्षण दोहा ।

भिन्न रूप हू मैं जहाँ पैये कछु न विशेप ।
तहाँ कहत सामान्य है पंडित लोग अशेष ॥

जहा न्यारा रूप मे भी कछू अधिक नहीं पावै तहां सामान्य कहते हैं संपूर्ण पंडित लोग ॥ ३८६ ॥

उदाहरण कवित्त ।

सारी जरतारी की झलक झलकति तैसी केसरि को अंगराग कीन्हीं सब तन मे । तीछन तरनि की किरिनि तें दुगुन जोति जागति ज वाहिर जटित आभरन मे ॥ कवि मतिराम आभा अगनि अँगारनि की धूम कैसी धारा छवि छा जति कचन मे । ग्रीषम दुपहरी मैं हरि कौं मि-लन चली जानी जाति नारि ना दवारिजुत वन मे ॥ ३८७ ॥

जरी को साड़ी को झलक झलके है तैसोही केसरि को अंगराग शरीर मे कियो है पैनी सूरज की किरिन सौं दूनो जोति जगे है रत्ननि के जड़े गहनानि में मतिराम कवि कहै है अगनि को आभा अंगारान की धौ है धुवा

को सो धार की छवि बालन में छाजै है निदाघ की दो पहरी मे कथा सैं मिलने कौं जातो है नारि जानी नहीं जाय है दावानल भिन्न रूप है तो भी जानि नहीं परी याते सामान्य है ॥ १८७ ॥

अथ उन्मीलित विशेष लक्षण दोहा ।

जहँ मीलित सामान्य मे पैयत भेद विशेष ।
उन्मीलित सविशेष कवि बरनत मति उल्लेष ॥

जहा मीलित और सामान्य मैं कोई अन्तर पावै तहा उन्मीलित और विशेष बडी बुद्धि के कवि बरनते हैं ॥१८८॥

उन्मीलित उदाहरण दोहा ।

सरद चाँदनी मे प्रगट होत न तिय के अग ।
सुनत मजु मजीर धुनि सखो न छोडति सग ॥

सरद की चाँदनी मे तिया के अग जाहर नहीं होते सुन्दर मजीरनि को अवाज सुनतो हुई सखो साथ नहीं छोडै है। इहा चाँदनो मे मिली नायिका मजीर धुनि सैं जानी यातैं उन्मीलित है ॥ १८९ ॥

विशेषक उदाहरन दोहा ।

आई फूलनि लैन कौं चली बाग मे लाल ।
मृदु बोलनि सो जानिये मृदुबेलिनि मैं बाल ॥

फूल लेने कौं आई है हे लाल बाग मे चलो कोमल बातन सौं जानिये है कोमल लतानि मे नायिका यहा बेलि बाल मे बोलबा सौं भेद जान्यो यातैं विशेषक है ॥

अथ गूढोत्तर लक्षण दोहा।

अभिप्राय सों सहित जो उत्तर कोऊ देय।
तिहिं गूढोत्तर कहत है सुकवि सरस्वति सेय॥

जो कोऊ अभिप्राय करि सहित उत्तर दे तिसकों गूढोत्तर कहते हैं सुकवि हैं ते सारदा कों सेइ के। १८१।

उदाहरन दोहा।

ग्वालिन देहुँ बताइ हों मोहि कछू तुम देहु।
बसीवट की छांह मैं लाल जाय लखि लेहु॥

मैं गोपी बता द्यों तुम कछू मोकों द्यो तो है लाल बसीवट की छाया में जाय के देखि ल्यो इहाँ बसीवट नीचे मिलाप आशय है यातें गूढोत्तर है॥ १८२॥

सवैया।

अब होय घरी दिन आय रह्यौ पथ जात गुलाब सु ठीक नहीं। नजदीक न ग्राम उजारि महा मग लूटत लोग अगे दिनही॥ ढूँढ़िहिं ठाँ वहुधाम सरै सब काम तमाम मिलै वरवस्तु सही। तुम जाहु न जाहु करौ जु रुचै सु दयाधरि मैं हित वात कही॥ १॥

दोहा।

परदेशी सें उक्ति ते स्वय दूतिका चार
उत्तर दीने भाव ते गूढोत्तर लकार॥ २॥

अथ चित्र लक्षण दोहा।

जहँ बूझत कछु बात कौ उत्तर सोई बात ।
चित्र कहत मतिरामकवि सकल सुमतिअवदात॥

जहाँ कछू बात कौ पूछै सोई बात उत्तर होय मतिराम कवि कहै है तिसकौं सब उज्वल सुमति चित्र कहते हैं॥

उदाहरण दोहा।

सरदचद की चाँदनी को कहिये प्रतिकूल ? ।
सरदचद की चाँदनी कोक हिये प्रतिकूल ३९४

सरद के चन्द्रमा को चाँदनी कहिये किसकौं दुखद है, उत्तर सरद का चद्रमा की चादनी चक्रवाकका मनकौं दुखद है इहाँ प्रश्नउत्तर उनही अक्षरों में है यातै चित्र है॥

द्वितीय चित्र लक्षण दोहा।

बहुती बातनि को जहा उत्तर दीजे एक ।
चित्र बखानत हैं तहाँ कविजन बुद्धिविवेक॥३९५॥

जहाँ बहुत बातनि को एक उत्तर दीजिये तहाँ चित्र कहते है कवि लोग बुद्धि के ज्ञान सें॥ ३९५॥

उदाहरण दोहा।

को हरिवाहन जलधिसुत को है ज्ञानजहाज ।
तहाँ चतुर उत्तर दियो एक वचन द्विजराज॥

हरि को वाहन कौन है ? समुद्र को पुत्र कौन है ? ज्ञान की जहाज कौन है ? तहा चतुर ने जवाब एक बात मैं

द्विजराज है अर्थात गरुड चन्द्रमा ब्राह्मण है इहां तीन प्रश्न दियो कि को श्लेष करि एक शब्द में उत्तर है ॥ ३८६ ।

अथ सूक्ष्म लक्षण दोहा ।

जानि पराये-चित्त की ईहा जो आकूत ।
होय जहाँ सूचम तहाँ कहत सुकविपुरहूत॥३८७॥

जहँा पराये के मन की बात जानि के जो आशय व हित चेष्टा होय तहां सूक्ष्मकहते हैं अच्छे कविन के इन्द्र।

उदाहरण सवैया ।

लाल सखीनि मैं बाल लखी मतिराम भयो उर आनद भीनो । हाथ दूहूनि सौं चपक गुच्छनि को जुग छाती लगाय कै लीनो ॥ चन्द मुखी मुसकाय मनोहर हाथ उरोजनि अन्तर दीनो । आँखिनि मूंदि रही मिसि कै मुख ढाँपि निचोल को अचल कीनों ॥ ३८८ ॥

कृष्ण ने सखी में नायिका कौं देखी मतिराम कहै है हृदो आनन्द मैं भेयो भयो, दोनू हाथनि सौं चपा का फूलनि को जोडो छाती सो लगा लियो चन्दमुखी है सो हसिकै सुन्दर हाथ कुचनि के भीतर कियो मिस करिकै आंखिन कौं मूंदि रही मुख की आड में निचोल को वस्त्र कियो। इहाँ चपक फूल को जोडो छाती कै लगायो तामैं कुचन सौं छाती का स्पर्श की इच्छा जताई तब नायिका

नै छाती के हाथ लगाइ जताई तुम मेरा हृदय मे बसी हौ, आँपि मूदि के जताई कमल मुदे पै मिलौंगो अर्थात राति मैं मुख ढापि के जताई चद्रमा अस्त होयगो तब मिलौंगो यह आशय है याते सूक्ष्म है ॥ ३९८ ॥

सवैया ।

वेष बनाय सखीगन मैं तिय वैठि रही मन आनँद भीनौ । आय तहाँ इक आन सखी कल कज खिल्यौ कर मैं गहि लीनौ ॥ हेत जनाय कछू मुसकाय गुलाब कहै पग के ढिग कीनौं । कौन विचार विचारि वधू कलिका करिकै सजनी कर दीनौ ॥ १ ॥

दोहा ।

पतिप्रणाम जलजात के पद सपरस तें जानि ।
तिय कलिका करिदीनसो साँझमिलन पहिचानि॥
क्रियाचातुरी तैं यहाँ क्रिया विदग्धा चार ।
पर आशय लखि जहँ क्रियाकरै सुसुच्छम विचार॥

अथ पिहित लक्षण दोहा ।

जानि पराई वृत्ति जहँ क्रिया सहित आकूत ।
तहाँ पिहित वर्नन करत जे कवि सुमति सपूत॥

जहा पैला की रीति यौं जानि के आशय सहित

क्रिया होय तहा पिहित बर्नन करते हैं जे सुमति सपूत कवि हे ते ॥ ३९८ ॥

उदाहरण सवैया।

और तिया सँग कुञ्जविहारी रह्यो निसि मै वसि कै रसभीनो। प्रात समै मतिराम बखानत राधिका-मंदिर आवन कीनो ॥ बोली न बोल कछू लखिकै घनसुंदर को पट नील नवीनो। अवर केसरि रंग रँग्यो मुसकाय कै मोहन कै कर दीनो ॥ ४०० ॥

कृष्ण है सो और स्त्री के साथ रस मैं भीजि के राति मे बसि कै रह्यो, मतिराम कहै है प्रभात भये राधा के घर आवन कियो कछू बोल नही बोली मेघ से सुंदर को वस्त्र नीलो नयो देखि के केसरि का रंग को रँग्यो वस्त्र हसि कै कृष्ण का हाथ में दियो । इहा अन्य नायिका को पट पलटि यह जतायो यातैं पिहित है ॥ ४०० ॥

सवैया।

नीति विनै गुनआगर नागर नाह उमाह भयो रँगभीनो। नेहनह्यो चितचाह गह्यो ढिग आय कह्यो हित बैन प्रवीनो। सो सुनि हो हरषी मुसकी न गुमाय अनादर आदर कीनो।

क्यो मन अर्पन कारक पीकर दर्पवती तिय द॰ र्पन दीनो ॥ १ ॥

दोहा।

सुरतचिन्ह दरसाव हित तियपिय मुकुरदिखाव।
पिहित जानि परबात को आशयसहित जनाव॥

अथ व्याजोक्ति लक्षण।

और हेतु बचननि जहाँ आकृति गोपन होय।
व्याज उक्ति तहँ कहतकवि ग्रन्थ समुद्र विलोय॥

अन्य कारन के बचननि सों जहा स्वरूप को छिपा यबो होय तहा कवि है सो ग्रन्थ रूप समुद्र कों मथि कै व्याजोक्ति कहते हैं ॥ ४०१ ॥

उदाहरण सवैया।

लैन गई हुती बागहिँ फूल अँध्यारी लखे डर बाढ्यौ तहाँई। रोम उठे तन कंप छुट्यौ मति-राम भई श्रम की सरसाई॥ बेलिनि सौं उरझी अँगिया छतियाँ अति कंटनि की छतिछाई। देह मैं नैकु सम्हार रह्यौ नहीं ह्या लगि भागि मरू करि आई॥ ४०२॥

बाग मे फूल लेवा गईही अँधियारी देखि कै बडो भय बढ्यो रोम खड़े हुये कप हुयो मतिराम कहे है पसेव

बढे बेमरोन सों भागी उरझो, छातों छे सो परयत काटान का घाव सों छाई, शरीर मैं नेक डौर नहीं रह्यो इहा ताई मुसकलि सैं भागि कै घाई हौं इहा मय को बहानों कहि कै रति के चिन्ह छिपायो यातैं व्याजोक्ति है ॥ ४०२ ॥

व्या० च० सवैया ।

फागुन मास वडो उतपात रहै निसिवासर नींद न आवैं। आपस माँझ सबै नर नारि निरंतर चौगुन फाग रचावै ॥ जो कुल नारि कहूं सरमाय दुरै तवहूं गुरुनारि वतावै । या व्रज मैं यह रीत बुरी घर मै धसि लोग लुगाइन लावैं॥

दोहा ।

सुरत करत एकांत मैं लखी सखी नै आनि ।
ताहि दुरावत आन कहि यौ व्याजोक्ति वखान॥

अथ गूढोक्ति लचण दोहा ।

कहिवे जो कछु और सो कहै और सो बोलि ।
गूढ उक्ति तासो कहत जिनकी वुद्धि अमोलि ॥

जो कछू और सौं कहनो है सो और सौं बतलाय कहै तिसमों गूढोक्ति कहते है जिनकी मति अमोलो हैं ते ॥

उदाहरन दोहा ।

यौ न प्यार विसराइये लई मोहि तैं मोल ।
मुख निरखत नँदलाल को कहै सखी सौं बोल॥

ऐसे प्यार नहि बिसराइये तैने मोकौं मोलि लीनौं, कृष्ण को मुख देखती हुई सखी सौं वचन कहै है इहां कृष्ण सौं कहवा की बात सखी सो कही याते गूढोक्ति है।

सवैया।

धौरन साजि समाज गुलाव वडे परभात लगी कछु वार न। लाल गये सँग साथिन लै वर वासन भूषन धारि हथ्यारन॥ देखि रही करि पाहन सो उर गे जुग जाम जरौं ज्वर झारन। भूलत नाहिँ परोसनि री हम-पीतम को परदेस पधारन॥ १॥

दोहा।

रहत सौतिवस पिय सदा सासू कहत कुवैन।
अब ननदी ह्व घर गई विष सी लागत रैन॥२॥
कहै आन मिस आन से विदग्धा सु विख्यात।
गूढोक्ति सु मिस आन के कहै आन से बात॥३॥

अथ विवृतोक्ति लक्षण।

जहाँ श्लेष सो गुप्त सो सुकवि प्रकासत अर्थ।
विव्रतोक्ति तहँ कहत हैं जे कवि सुमति समर्थ॥

जहां श्लेष सौं जो गुप्त अर्थ सुकवि है सो प्रकासे तहां विवृतोक्ति कहते हैं जे कवि सुमति समर्थ हैं ते॥ ४०५॥

उदाहरण कवित्त।

आई है निपट साँझ गैया गई घर माझ हातैं दौरि आई कहै मेरो काम कीजिये। हौ तो हौं अकेली और दूसरो न देखियत बन की अँध्यारी सौ अधिक भय भीजिये ॥ कवि मतिराम मन मोहन सो पुनिपुनि राधिका कहति बात साँची कै पतीजिये। कब की हौं हेरति न हेरैं हरि पावत हौं बछरा हिरान्यो सो हिराय नैक दीजिये ॥ ४०६ ॥

बहुत साझ होय आई है गाय घरमें गई हैं यहां सैं दौरि कै आई हौं मेरो काम करिये मैं तो अकेली हौं और दूसरो नहीं दोखै है जगल की अँधेरो से घणो डर मैं भोजौं हौं मतिराम कवि कहै है मनमोहन सौं फेरि फेरि राधिका बात कहै है साचो करिकै पतीजिये कब की मैं देखौं हौं हे हरि देखने सौं नहीं पावते हौ बछरा खो गयो है सो नैक ढूढ़ि दोजिये इहां साझ अकेली बन अँधियारी इत्यादि पदनि सौं डर योग्य ठौर मैं मिलाप योग्य ठौर यह अर्थ कवि ने कह्यो राधिका कहै है साचो बात मानौं ऐसे गुप्त अर्थ प्रगट्यो यातैं विवृतोक्ति है ॥ ४०६ ॥

अथ युक्ति लक्षण दोहा

मरम छपावन कौ जहां क्रिया आन सधान।

तहाँ जुक्ति बरनन करत कवि कोविद सज्ञान ॥

१ मरम दुरायबे कों जहा और क्रिया को सधान करै है तहा कवि पण्डित ग्यानवान जुक्ति वर्नन करते है ॥ ४०७ ॥

उदाहरण सवैया ।

लेन कौं फूल निकुंजन माझ गयो मिलि गोपिन को गन भायो । नन्दलला तिय के हिय मै मतिराम तहाँ दृगवान खुभायो ॥ गेह चली सखियाँ सगरी चित सुंदर साँवरे रूप लुभायो । आँखिनि पूरि कटीले कपोलनि कटक कोमल पाय चुभायो ॥ ४०८ ॥

निकुजन में फूल लेवा कौं गोपीन को समूह भायो हुयो मिलि कै नन्द के लाल ने नायिका का हिया मैं मतिराम कहै है तहा नैनरूपो बान गडायो सब सखी घर कौं चली चित्त है सो सुदर स्याम का रूप पै लुभ्यो आखिन मैं जल भरि कै कपोलनि पै रोम उठि कै कोमल पग मैं काटो गडायो इहा अश्रु रोम सात्विक छिपाइबे कौं काटौं गडायो । यातें युक्ति है ॥ ४०८ ॥

अथ लोकोक्ति तथा छेकोक्ति लक्षण दोहा ।

जहँ कहनावति अनुकरन लोक उक्ति मतिराम। और अर्थ लीन्हे सु जो छेक उक्ति अभिराम ॥

जगत की कहनावति को अनुकरन होय सो मतिराम

कहै हैं लोकोक्ति है और अर्थ लियें हुयें लोकोक्ति होय सो सुन्दर छेकोक्ति है ॥ ४०९ ॥

लोकोक्ति उदाहरण सवैया ।

मोहन को मुखचद लखें बढि आनँद आँखिन ऊपर आवै । रोम उठें मतिराम कहै तनु चारु कदम्ब लता छवि छावै ॥ बूझति हौ हित कै सखि तोहिँ कहा रिस कै यह भौह चढावै । मै तृन सो गन्यो तीनहु लोकनि तू तृन ओट पहार छपावै ॥ ४१० ॥

कृष्ण को मुखचन्द्रमा देखते आनन्द बढिकै नैननि कै ऊपर आवै है मतिराम कहै है रोम उठे हैं शरीर है सुदर कदंब की शाखा की छवि छावै है हे सखी हित करिकै तोकों पूछों हों रोस करिकै यह भौंह काहे चढावै है मैने तीनो लोक कों तृन समान गन्यो है तू तृन को ओट लै पर्वत कों छिपावै है इहा तृन ओट पर्वत यह लोक कहनि है यातै लोकोक्ति है ॥ ४१० ॥

छेकोति उदाहरण सवैया ।

छिति नीर कृसानु समीर अकास समीर बिह्वै तिनु रूप धरै । अरु जागत सोवत ह्व मति राम सु आपनी जोति प्रकास करै ॥ जग ईश अनादि अनन्त अपार वहै सब ठौरनि मैं वि

हरै । सिगरे तनु मोह मैं मोहि रहे तृन ओट पहार न देखि परै ॥ ४११ ॥

भूमि जल अग्नि पवन नभ चन्द सूर भी तृनवत रूप कौं धारण करै ॥ जगत का स्वामी आदि अंत पाररहित है वही सपूर्ण स्थाननि मैं विचरै है सब शरीर के मोह म मोहित हो रहे हैं तिनूका के ओट पर्वत नहीं दीखि परै है इहा तृन ओट पहार न देखि परै यह लोक कहनि है तामैं यह अर्थ निकस्यौ सर्वव्यापी भगवान तनु के मोह सै नहीं दीखै याते छेकोक्ति है ॥ ४११ ॥

अथ वक्रोक्ति लक्षण दोहा।

श्लेष काकु सो अर्थ की रचना और जु होय ।
वक्र उक्ति सो जानिये ज्ञान सलिल मतिधोय ॥

श्लेष और काकूक्ति सो की अर्थ की बनावटि और हो जाय सो वक्रोक्ति जानिये ज्ञान पानी मैं बुद्धि कौ धोय कौ ॥ ४१२ ॥

श्लेष उदाहरण दोहा।

मेरे मन तुम वसत हौ मैन कियो अपराध ।
तुम्है दोष को देत हरि है यह काम असाध ॥

मेरा मन मैं तू वसै है मैने कुसूर नही कियो है हरि तुमकौं दोष कौन देत है यह कामदेव असाधु है इहा मैन पद के दोय अर्थ, मैं नहि और काम, तासौं अर्थ फिर्यो याते वक्रोक्ति है ॥ ४१३ ॥

अथ काकु उदाहरण सवैया ।

आज कहा तजि वैठी हौ भूपन ऐसही अग कछू अरसीले । बोलत बोल रुखाई लियें मति राम सनेह सने हौ सुसीले ॥ क्यों न कहै दुख प्रानप्रिया अँसुवानि रहे भरि नैन लजीले। कौन तिन्है दुख है जिनकै तुम से मनभावन छैल छ-बीले ॥ ४१४ ॥

(नायक वचन) आज काहे गहने खोलि के बैठी हौ ? (नायिका का उत्तर) ऐसेही कछु अग आलस भरे है, (नायक वचन) बचन रूखापन लिये बोलती हौ मतिराम कहै है (नायिका वचन) प्रेम लपेटे हौ सुसील, (ना०वचन) हे प्रानप्यारी दु ख क्यों नहि कहै है लजीले नैन आसून सौं भरि रहे है (नायिका वचन) तिनकौ कौन दु ख है जिनके आप से छवीले छैल मनभावते है इहा कौन दु ख है अर्थात सब दुख है यह काकोक्ति करि अर्थ फिर्यो याते वक्रोक्ति है ॥ ४१४ ॥

अथ जाति लक्षण दोहा ।

जाको जैसो होय सो वरनत जहाँ सुभाव ।
तहाँ जाति यह नाम कहि वरनत सब कविराव॥

जहा जिसको जिस तरह को सुभाव होय सो वरनै तहा जाति या नाम कहि कै सब कविराव वरनते हैं॥

उदाहरण कवित्त ।

जानत जहान ऐंड करि सुलताननि सौं कीनो कछवाह कामधुज को वचाव है । देत मतिराम भाट चारन कविन जात कौन पै गनायो जात गज समुदाव है॥ तेग त्याग सालिम सपूत शत्रुशालजू को खीझै रन रुद्र रीझैं मौजदरियाव है । साहनि सों अकसिबो हाथिन को बकसिबो रावभावसिंह जू को सहज सुभाव है ॥

जगत जाने है पातसाहन सों अकड़ करिकै कछवाह कामाधुज को बचाव कयो मतिराम कहै है वन्दीजन चारन कविन को जाति कों जो हाथीन को समूह देत है सो कौन पै गनना कियो जाय है तेग और दान में शत्रु शाल जी को सपूत सालिम है खोजे तो संग्राम में शिव है रीझै पै देन को समुद्र है पातसाहनि सों आट करिबो हाथीन को देवो राव भावसिंहजी को साधारण सुभाव है। इहाँ सुभाव को वर्नन है यातें सुभावोक्ति है ॥ ४१६ ॥

सवैया ।

इतरावतिही अबही बतियाँ बतरावतही जिन मै थल ना । सतरावतिही सखिया जन पै थिति पावतही पल टू पल ना ॥ छिन माहि अचानक आन भई असुवां भरलाल परै कल ना।

कस री सखि वाय भरें धुनि माय गुलाब न साथ चले ललना ॥ १ ॥

दोहा।

है अज्ञात नवोढ यौं पियढिंग मचलत जात ।
वर्नन जाति सुभाव को सुभावोक्ति विख्यात ॥

अथ भाविक लक्षण दोहा।

जहाँ भयो भावी अरथ बरनत हैं परतच्छ ।
तहँ भाविक सब कहत हैं जिनकी मति है अच्छ ॥

जो अर्थ हो गयो और आगे होयगो ताकौं प्रत्यक्ष वरनते हैं तहा भाविक कहते हैं जिनको बुद्धि अच्छी है तै ॥

उदाहरन कवित्त।

निसि दिन स्रौननि पियूष सो पियत रहैं छाय रह्यो नाद बाँसुरी के सुरग्राम को। तरनि-तनूजा-तीर बन कुंज बीथिन मैं जहा तहा देखति हैं रूप छबिधाम को ॥ कवि मतिराम होत हाती ना हिये ते नैक सुख प्रेम गात को परस अभिराम को। ऊधो तुम कहत बियोग तजि जोग करौ जोग तब करैं जो बियोग होय स्याम को ॥ ४१८ ॥

राति द्यौस कानति सें अमृत सो पीती रहैं हैं मुरली के सुरग्राम को नाद छाय रह्यो है सूरसुता के तट पै का

ननकुज को गलीन में जहां तहां शोभा के घर को रूप देखतो है मतिराम कवि कहै है हिया से नैक जुदो नही होय है प्रेम को सुख और शरीर का सुन्दर सरस को सुख, हे ऊधो तुम कहते हौ वियोग कों छोड़ि के जोग करो जोग तब करैं जो स्याम को वियोग होय जब। इहां हुई लीला प्रत्यक्ष वरनो याते भाविक है ॥ ४१८ ॥

द्वितीय उदाहरण दोहा।

जनि चलाइये चलन की चरचा स्याम सुजान।
मै देखति हौं वाहि यह वात सुनत विन प्रान॥

हे कृष्ण प्रवीन गमन की वात नहि करिये मैं उसकौं या बात सुनतेही प्रानरहित देखती हौं। इहां विन प्रान होयगी सो वर्तमान मैं वरनो याते भाविक है ॥ ४१६ ॥

अथ द्विविधा उदात्त लक्षण दोहा।

सपति को अधिकार जो अरु उपलक्षण और।
सो उदात्त द्वै भांति को वरनत कवि सिरमौर॥

जो सपति को आधिक्य और उपलक्षण और को, सो उदात्त दोय प्रकार को सिरमौर कवि वरनते है ॥ ४२० ॥

उदाहरण कवित्त।

पुहुमि को पुरहूत शत्रुशाल को सपूत सगर फतूहै सदा जासौं अनुरागती। दान देत रीझ मै दिवान भावसिंह जू को धनद के धाम को

तनक निधि लागती ॥ कहै मतिराम मजलिस मैं महीपनि की कविन की वानो हाडा सुजस मे पागती । जेती और राजनि के राजनि मैं सपति हैं तेती रोज राव के चिराकैं जोति जागती ॥ ४२१ ॥

मनुशाल को सपूत है सो पृथ्वी को इन्द्र है सग्राम की ध्वजा जिससैं प्रेम करती है सदा दिवान भावसिंह जो को रीझ मैं दान देतैं कुवेर के घर की दौलति थोडोसी लगै है, मतिराम कहै है राजानि की सभा मैं कवीश्वरनि की बोली हाडान का जस मैं पागै है जितनी और राजान की राज्यम समेत सपति है तितनी रोजोना राव के रोशनी मैं लगती है । इहां भावसिंह जो की सपति की अधिकता है यातैं उदात्त है ॥ ४२१ ॥

पुन कवित्त ।

पीयुषपयोधि मद्द मनिन सौं वद्द भूमि रोध सौं रुचिर रुचि रोचक रवन मैं । कामतरु विपिनि कद्‌व उपवन सौरो सुरभि पवन डोलै मृदु सी गवन मैं॥ चिन्तामनि मडप विराजे जगदव सदा सावधान मतिराम सेवक श्रवन मे । लपट लुवुध मन भत्र मे भँवत कहा धारि भूरि भाव ताको भावना-भवन मैं ॥ ४२२ ॥

अमृत की समुद्र के बीच मे मनिन सौं जटित पृथ्वी है तीर है सो सुन्दर सें सुन्दर रोचक को रोचक है तामैं कल्प वृक्षनि को वन है कदवनि को वाग है तामै धीरो सुगन्धित समीर डोलै है कोमल चाल में पारस के मडप में सदा जगमाता बिराजै है मतिराम कहै है दास की पालना में खबरदार है अरे कपटी लोभी मन संसार में कौंई भ्रमै है तिसको रचनाभवन में बहुत भाव करि। इहां भगवती को संपति को बढाई है यातै उदात्त है ॥ ४२१ ॥

उपलक्षण उदाहरण दोहा।

निकसत जीवहिँ बाधि कै तासौ राखति बाल।
जमुनातट वा कुंज मै तुम जु दई बनमाल ॥

जीव निकसै है उसकौं बाधि कै बाल है सो तासौं राखै है जमुना के तीर पै उस कुंज में आपने जो बनमाला दीनी ही। इहा वा कुंज मे बनमाला दीनी ही यह उपलक्षण है यातै उदात्त है ॥ ४२३ ॥

अथ अत्युक्ति लक्षण दोहा।

जो सुंदरतादिकनि की अधिक झुठाई होय ।
ताहि कहत अत्युक्ति हैं कवि पडित सब कोय ॥

जो सुन्दरता आदि की बहुत झूठ होय तिसकौं अत्यु क्ति कहते हैं कवि कोविद सब कोई। ४२४ ॥

उदाहरण सवैया।

ललित विलास कोटि मन्द मृदुहास अति

अंग की सुवास मृगमद-वास मन्द की । मदन के मद उनमद नैन मन्दिर मै गति गरवीली मद मोकल गयन्द की ॥ जोबन की जोति जग मग होत मतिराम लोचन चकोरनि की संपति अनद की । अधिक अँध्यारी में उज्यारी होत ज्यौ ज्यौ कछू चन्द की उजारी मै उजारी मुख चन्द की ॥ ४२५ ॥

सुन्दर विलासनि से कोटि गुणों मन्द कोमल हास्य है शरीर सुगन्ध ने कस्तूरी की गध अति मन्दी करी है काम देव के मद सें नेन उन्मत्त है मइल में गरवीली चाल है सो हाथी का मद कों दूरि करे है मतिराम कहै है जो जोबन जोति जगमग होय है लोचन रुपी चकोर है तिन के आनन्द की सपति है जैसें अति अधेरी मे कोई चादनी होतो है तैसें चन्द की चादनो में मुखचन्द्रमा को चादनो होतो है। इहाँ हास्य सुवास गति जोति मुख की उजारी को अतिसय वर्नन है याते अत्युक्ति है ॥ ४२५ ॥

पुन दोहा।

वाल विलोचन वारि के वारिधि बढैं अपार ।
जारै जो न वियोग की वडवानल की झार ॥

नायिका के नैन के जल का समुद्र बहुत बढै जो वि योग की अग्नि की झल नहीं जलावै तो इहां बिरह से आँसून को अतिसय वर्नन है याते अत्युक्ति है ॥ ४२६ ॥

अथ निरुक्ति लक्षण दोहा।

जहां जोग ते नाम को अर्थ कल्पना और ।
बरनत तहां निरुक्ति हैं कवि कोविद सिरमौर ॥

जहाँ सजोग सें नाम को अर्थ की रचना और होय तहां निरुक्ति बरनते है कवि पंडितन के सिर के मौर ॥४२९॥

उदाहरण कवित्त।

मोहनि मन्त्रनि मनमोहन कियो तैं बस वारन ज्यौं बांधि राखे तामरस ताग सो । कवि मतिराम आली अलि सो गुविन्द कीन्हौं मंडित चरन अरविन्द के पराग सौं ॥ ऐसो पति पायो बड़े भागनि सौं प्यारी सदा सुवरनही को पघिलावत सुहाग सो । स्याम स्याम कहिये सिंगार रस राच्यौ ताते लाल लाल कहिये रँग्यो है अनुराग सो ॥ ४२८ ॥

मोहनि मन्त्रनि सौं मैंने मनमोहन बसि कियो जैसें कमल का तार सो हाथी कौं बांधि राखे मतिराम कवि कहे है हे सखी गोविन्द कौं भ्रमर सो कियो भूषित पग रूपी कमल का केसर सौं हे प्यारी बड़े भागनि सौं ऐसो पति पायो है सदा सुबरन सें सुहागा कौं तावे है शृङ्गार रस में रचि रह्यो है तिससौं स्याम कहिये है अनुराग सौं रँग्यो है तातैं लाल लाल कहिये है। इहां शृंगार अनुराग के

जोग से स्याम लाल नाम का अर्थ की और रचना भई यातें निरुक्ति है ॥ ४१८ ॥

पुन कवित्त।

ह्वैकै डहडहे दिन समता के पायें विन माझ सरसिजनि सरसि सिर नायो है । निसा भरि निसापति करिकै उपाय विन पायें रूप वासर विरूप ह्वै लखायो है ॥ कहै मतिराम तेरे वदन वरावरि को आदरस विमल विरचि न वनायो है । दरप न रह्यो तातें दरपन कहियत मुकुर परत तातें मुकुर कहायो है ॥ ४२६ ॥

दिन में प्रफुल्लित होय कै वरावरी पाये विना सध्या में कमलनि ने लज्जित होय कै मस्तक नवायो है चन्द्रमा है सो सारी राति उपाय करिकै रूप पाये विना दिन में विना रूप होय कै दोख्यो है मतिराम कहै है तेरे मुख को वरा वरी को काच ब्रह्मा ने नहीं वनायो है गर्व नहीं रह्यो यातै दरप न कहिये है फिरि जाय है यातै मुकर कहायो है । इहाँ रूप के जोग दरपन को दूसरो अर्थ हुयो और मुकुर को दूसरो अर्थ भयो यातै निरुक्ति है ॥ ४०८ ॥

अथ प्रतिषेध लक्षण दोहा।

जहा प्रसिद्ध निषेध को अनुकीरतन प्रकास ।
तहा कहत प्रतिषेध है कविजन बुद्धिविलास ॥

जहां प्रसिद्ध बात का निषेध को अनुकथन प्रगट होय तहां प्रतिषेध कहते हैं कवि लोग बुद्धि के आनंद सें ॥

उदाहरण सवैया।

ऐसी करी करतूति बलाय ल्यौं नीकी बड़ाई लही जग जातें। आई नई तरुनाई तिहारीहौ ऐसि छके चितवौ दिन रातें ॥ लीजिये दान हौं दीजिये जान तिहारी सबै हम जानती घातें । जानौ हमैं जनि वै वनिता जिन सौं तुम ऐसी करी वलि बातें ॥ ४३१ ॥

वारी लाल ऐसो करमी करो जिससे जगत में अच्छो स्तुति पावो आपकी हो नई जवानी आई है ऐसे मस्त हुये राति दिन देखो हो हे लाल दान लीजिये हम कों जाने दीजे आपकी घात हम सब जानती हैं हमकों वे स्त्री मति जानौं जिनसों आप ऐसी बात करो वारे लाल। इहां हम कौं वे वनिता मति जानौं यह प्रसिद्ध को निषेध है यातें प्रतिषेध है ॥ ४३१ ॥

अथ विधि लक्षण दोहा ।

जहां सिद्धिहो बात को करत प्रसिद्ध बखान ।
विधि भूषन तहँ कहत हैं सकल सुकवि सज्ञान ॥

जहां सिद्ध बात हैहो ताको प्रसिद्ध वर्नन करे तहां विधि अलंकार कहते है सपूर्ण ज्ञानवान सुट्ठ कवि ॥४३६॥

उदाहरण कवित्त ।

कोप करि सगर मै खग्ग कौं पकरि कै व-
हायो वैरि नारिन को नैन-नीर सोत है । कहै
मतिराम कीन्हौ रीझि कै निहाल महीपालनि
के रूप सब गुनिन को गोत है । जागे जगसा
हिब सपूत सत्रुसाल जू को दसहू दिसानि जस
अमल उदोत है ॥ खलनि के खडिवे कौं मगन
के मडिवे कौं महावीर भावसिह भावसिह होत
है ॥ ४३३ ॥

सग्राम मे क्रोध करि कै तरवारि कौं पकडि के वैरीन
की स्त्रीनि के नेत्रजल को सोत बहायो मतिराम कहै है
रीझि करिकै निहाल कियो राजान के डोल को सब गुन
वानन को समूह, जागे है जगत में राजा शत्रुशाल जी के
सपूत को दसौं दिसानि में निर्मल जस को उदोत, दुष्टनि
के काटिवे कौं जाचकनि के भूषित करवे कौं महा सूर
भावसिह है सो भावसिह होय है । इहा सिद्ध भावसिह
कौं सिद्ध कियो यातैं विधि है ॥ ४३३ ॥

अथ हेतु लक्षण दोहा ।

जहा हेतुमत साथही कीजे हेतु वखान ।
तहा हेतु भूषन कहत कवि मतिराम सुजान ॥

जहा कारज के साथही कारन को वर्नन करिये तहा

हेतु अलंकार कहते है मतिराम कवि कहे है सुजान है ते। ४३४ ॥

उदाहरण सवैया।

और सकै कहि को मतिराम सतासुत की बरनै गुन बानी। राव सही दरियाव जहान को आय जहाँ ठहरात है पानी ॥ काम-तरोवर धेनु औ पारस नैकु न मगन के मन मानी। दारिद-दैत्य विदारिबे कों भई भाऊ दिवान की रीझ भवानी ॥ ४३५ ॥

मतिराम कहे है और कौन कहि सकै शत्रुशाल के पुत्र के गुन सरस्वती बरनें, सत्यही राव है सो जगत को समुद्र है जहां आय के पानी ठहरे है, कल्पवृक्ष कामधेनु पारस जाचक के मन में नहीं मानी दरिद्र रूप दानव के मारिवे कौं दिवान भावसिंह की रीझ है सो देवी है। इहा भाव सिंह की रीझ कारन, दारिद दूरि होयो कारज, तिनको साथ वर्नन है तातें हेतु है ॥ ४३५ ॥

पुन दोहा।

दरपन मैं निज रूप लखि नैंननि मोद उमग ।
तियमुख पियवसि करन को वढ्यो गर्व को रंग ॥

काच में अपना रूप कों देखि के नैननि में हर्ष की उमग देखि कै पीतम कों वस करवा को अभिमान को

रग नायिका का मुख पै बढ्यो। इहां रूप कारन पीतम को बसि होश्रो कारज साथ है यातैं हेतु है । अथवा पीतम को बसि होश्रो कारन गर्व को रग बढिवो कारज साथ है यातैं हेतु है ॥ ४३६ ॥

द्वितीय हेतु लक्षण दोहा।

जहां हेतुमत हेतु को वरनत एक सरूप ।
तहा हेतु औरो कहत सब कवि मडित भूप ॥

जहा कारज कारन को एक रूप बरनै तहा श्रौर हेतु कहते है सब कबि पण्डितन के राजा ॥ ४३७ ॥

उदाहरण दोहा।

नैननि को श्रानन्द है जिय को जीवनि जानि ।
प्रगट दरप कदर्प को तेरी मृदु मुसकानि ४३८

तेरो कोमल हासी है सो नैननि को सुख है जीव को जिवायवेवारी जानि कामदेव को जाहर गर्व है इहा हांसी कारन है श्रानन्द जीवन दर्प कारज है ताको एक सरूप बरन्यो यातैं द्वितीय हेतु है ॥ ४३८ ॥

तृतीय हेतु लक्षण दोहा।

जहँ समर्थिबे श्रर्थ को प्रगट समर्थन होय ।
तहा हेतु औरो कहत कवि कोविद सब कोय ।

जहा समर्थन करवे योग्य श्रर्थ को समर्थन होय तहा श्रौर हेतु कहते है कवि पण्डित सब कोई ॥ ४३९ ॥

उदाहरण सवैया।

भौंह कमान कै लोचन बान कै लाजहि मारि रहै बिसवासी। गोल कपोलनि केलि करै भयो कुंडल लोल हिँडोल बिलासी॥ कोट किरीट कियें मतिराम करै चढि मोर पखानि मवासी। क्यों मन हाथ करौं सजनी बनमाल मैं बैठि भयो बनवासी॥ ४४०॥

भ्रुकुटीन कौं धनुष करिकै नैननि कौं तीर करिकै लाज कौं मारिकै विश्वासी रहै है बर्तुल गालनि पै क्रीडा करै है चचल कुडल रूप झुलाकि विलासी भयो मतिराम कहै है मुकुट को किलो किये हुयें मयूर की पांखनि पै चढि कै मवासी करै है हे सजनी कैसें मन कौं बस मैं राखौं बन माला मैं बैठि करिकै बन को बासी भयो। इहां मन बस नहि होय इसके समर्थन कौं भौंह कमानादि कहे यातैं हेतु है॥ ४४०॥

पुन कवित्त।

देखि महिपालनि की कंपति है छाती ऐसी संपति सहित देत जाचकनि दान है। देत स-रनागत नरेशनि अभयदान महाबीर बैरिन कौ देत भयदान है॥ कहै मतिराम दिल्लीपति कौं

रग नायिका का मुख पै बढ्यो। इहां रूप कारन पीतम को वसि होश्रो कारज साथ है यातें हेतु है । अथवा पीतम को वसि होश्रो कारन गर्व को रग बढिवो कारज साथ है यातें हेतु है ॥ ४३६ ॥

द्वितीय हेतु लक्षण दोहा।

जहा हेतुमत हेतु को वरनत एक सरूप ।
तहा हेतु औरो कहत सब कवि पडित भूप ॥

जहा कारज कारन को एक रूप बरनै तहा और हेतु कहते है सब कवि पण्डितन के राजा ॥ ४३७ ॥

उदाहरण दोहा।

नैननि को आनन्द है जिय की जीवनि जानि ।
प्रगट दरप कदर्प को तेरी मृदु मुसकानि ४३८

तेरो कोमल हासी है सो नैननि को सुख है जीव को जिवायवेवारी जानि कामदेव को जाहर गर्व है। इहा हांसी कारन है आनन्द जीवन दर्प कारज है ताको एक सरूप बरन्यो यातें द्वितीय हेतु है ॥ ४३८ ॥

तृतीय हेतु लक्षण दोहा।

जहँ समर्थिवे अर्थ को प्रगट समर्थन होय ।
तहा हेतु औरो कहत कवि कोविद सब कोय ।

जहा समर्थन करवे योग्य अर्थ को समर्थन होय तहा और हेतु कहते हैं कवि पण्डित सब कोई ॥ ४३८ ॥

उदाहरण सवैया ।

भौंह कमान कै लोचन बान कै लाजहि मारि रहे विसवासी । गोल कपोलनि केलि करै भयो कुंडल लोल हिंडोल विलासी ॥ कोट किरीट कियें मतिराम करै चढि मोर पखानि मवासी । क्यो मन हाथ करौं सजनी वनमाल मै वैठि भयो वनवासी ॥ ४४० ॥

भ्रुकुटीन कौं धनुष करिकै नेत्रनि कौं तीर करिकै लाज कौं मारिकै बिस्वासी रहे है सतुंन गालनि पै क्रीडा करै है चचल कुडल रूप झुलाकि बिलासी भयो मतिराम कहै है मुकुट को किलो किये हुय मयूर को पापनि पै चढि कै मवासी करै है हे सजनी कैसे मन कौं बस मैं राखौं बन माला मैं बैठि करिकै बन को बासी भयो । इहा मन बस नहि होय इसके समर्थन कौं भौह कमानादि कहे यातैं हेतु है ॥ ४४० ॥

पुन कवित्त ।

देखि महिपालनि की कपति है छाती ऐसी सपति सहित देत लाचकनि दान है । देत सरनागत नरेशनि अभयदान महावीर वैरिन कौं देत भयदान है ॥ कहै मतिराम दिल्लीपति कौं

बडाई देत शत्रुशालनंद बलावध सुलतान है।
राव भावसिंह जू को सुजस बपानियत लीवे को
जहान सब दीवे कौं दिवान है ॥ ४४१ ॥

देखि के राजानि की कातो कापे है ऐसी सपति समेत दान जाचकनि कों दे है सरने आया राजानि कों अभय दान देहै महा सूर बैरीन को भय दान देहै मतिराम कहे है दिल्लीनाथ कों बडाई देहै शत्रुशाल को सुत है सो बलावध का पातसाह है राव भावसिंह जी को सुजस ब[illegible] खानिये है लेवा कों सब दुनिया है देवा कों दिव[illegible] ण है देहा लेवे कों जिहान सब दीवे कों दिवाण है य[illegible] ह समर्थ नोय है ताको जाचक सरनागत बैरी दिल्लीपति[illegible] कों दान ध्यता करि समर्थन कियो याते तीसरो हेतु[illegible] है। यह और ग्रथनि में काव्यलिंग लिख्यो है ॥ ४४१ ॥

दोहा।

रुचिर अर्थ भूषन इते रचि जाने म[illegible]तिराम।
ताकी बानी जगत मैं बिलसै अ[illegible]ति अभिराम ॥

सुंदर अर्थालंकार इतने जो बनाय जाने मतिराम कहे है ताकी अति मनोहर बानी जगत में अति शोभा कौं प्राप्त होय ॥ ४४२ ॥

छप्पय।

जब लगि कच्छप कोल सहसमुख धरनि

भारधर । जब लगि आठौं दिशनि दिग्ध शोभित दिग्गज वर ॥ जब लगि कवि मतिराम सगिरि सागर महिमण्डल। अनिल अनल जब लगि जोति मडल आखंडल ॥ नृप शत्रुशाल नन्दन नवल भावसिंह भूपालमनि । जग चिरजीव तब लगि सुखद कहत सकल संसार धनि ॥ ४४२ ॥

जब ताई कच्छप है बराह है शेष धरनी का बोझ कौं धरै तब ताई आठौ दिशानि के भारी सुंदर दिग्गज शोभित है मतिराम कवि कहै है जब तक गिरिन सहित समुद्रनि सहित पृथ्वीमण्डल है जब तक पवन है अग्नि की जोति है इन्द्र को मण्डल है राजा शत्रुशाल को मनोहर पुत्र भाव सिंह राजान की मनि तब ताई जगत मैं चिरजीव सुखदा यक रही सब दुनिया धन्य कहै है ॥ ४४१ ॥

दोहा।

कण्ठ करै सो सभनि मैं शोभै अति अभिराम।
भयो सकल संसार हित कविता ललितललाम ॥

जो कण्ठस्थ करै सो सभानि मैं अति शोभा पावे संपूर्ण जगत के वास्तै सुंदर ललितललाम ग्रन्थ भयो है ॥ ५४४ ॥

इति ललितललाम, ।

अथ कुवलयानन्द में पंचदश अलंकार और हैं ते कहियतु हैं॥

छप्पय।

रसवत १ प्रेयस २ होय तृतिय ऊर्जस्वित३ जानो। चतुथ समाहित ४ नाम पचम भावोदय ५ मानो॥ भावसंधि ६ षट भाव शबलता ७ सप्तम कहिये। प्रत्यक्षरु अनुमान ८ दशम उ/पमान १० निवहिये॥ पुनि शब्द११रु अर्थापत्ति १२ पुनि अनुपलब्धि १३ संभव १४ कहौ। ऐ-तिह्य१५ सहित सब पचदश कवि गुलाब भूषण गहौ॥ १॥

रसवत लक्षण दोहा।

इक रस रस को अंग ह्वै कै स्थाई को होय। कै व्यभिचारी भाव को अंग सुरसवत जोय॥

एक रस दूसरा रस को अंग होय अथवा स्थाई भाव को अथवा व्यभिचारी भाव को अंग होय सो रसवत अलंकार देखो॥ १॥

उदाहरण दोहा।

जयति जयति योगीन्द्रमुनि कुंभज महा अनूप। देखि ताके चुलुक में कच्छप मत्स्य सरूप॥ ३॥

जोगीन्द्र महा अनूप अगस्त्य मुनि सर्वोत्कर्षेण वर्तते। जाको चुलू में कच्छप मत्स्य स्वरूपावतार देखे। यहां मुनि विषयक रति भाव को अंग अद्भुत रस है यातें रस वत है ॥ ३ ॥

प्रेय लक्षण दोहा।

भाव होय अँग भाव को कै रस को अँग चार।
सु है प्रेय कहँ याहि कौं कविभावालकार ॥ ४॥

भाव को अंग भाव होय अथवा रस को अंग भाव सो प्रेयोऽलकार है याही कौं कवि हैं सो भावाऽलकार कहँ हैं॥

उदाहरण दोहा।

कब वसि मधि वाराणसी धरि कोपीनहि चीर।
हे हर शिव शकर जपत फिरिहौं गङ्गातीर ॥५॥

कौपीनमात्र चीर धारण करिके काशी में वसि कै। हे हर। हे शिव। हे शकर। ऐसे जपते हुए गङ्गा के तीर पै कब फिरौंगो। इहा शातरस को चिन्ता सचारी अंग है यातें प्रेयस है।

ऊर्ज्जस्वित लक्षण चन्द्रायण।

रसाभास जहँ अंग भास को होय वर।
अथवा भावाभास भाव को अंग तर॥
सो ऊर्ज्जस्वित होय भाव रस अनुचितहि।

भावाभासरु रसाभास क्रम सहित लहि ॥ ६ ॥

जहा भाव को अङ्ग रसाभास होय अथवा भाव को अग भावाभास होय सो ऊर्ज्जस्वित अलंकार होय है ॥ अनुचित भाव है सो भावाभास है और अनुचित रस है सो रसाभास है ॥ ६ ॥

उदाहरण दोहा ।

बन बन भीलन सँग रमत तुव वैरिन की वाम ।
अरु अरि तुव गुन गनत निति प्रबलप्रतापी राम ॥

हे प्रबल प्रतापी राम तेरे बैरीन की स्त्री भीलन के सग बन बन में रमती हैं इहा प्रभु विषयक रति भाव को अग रसाभास है यातें ऊर्ज्जस्वित है । और तेरे गुन सदा गुनते हैं इहा प्रभु विषयक रति भाव को अग भावाऽऽभास है यातें ऊर्जस्वित अलकार है ॥ ७ ॥

समाहित लक्षण दोहा ।

अग होय रस को जहाँ भाव साति के होय ।
भाव साति अँग भाव को जानि समाहित सोय ।

जहाँ रस को अग भाव शाति होय । अथवा भाव को अग भाव साति होय सो समाहित जानो ॥ ८ ॥

उदाहरण दोहा ।

पिय ठाढे भे मान लखि तिय दूत रही बिजोय ।
देखत हँसि दीनो ललन तिय तब दीनो रोय ॥

मान देखि वारिकै पिय हैं सो ठाढे ह्वै रहे । इत कौं तिय है सो विशेष देखि रही । देखतैं पिय ने हँसि दियो तब तिय ने रोय दियो । इहा शृंगाररस को अंग कोप शांति है । यातैं समाहित है ॥ ९ ॥

भावोदय लक्षण ।

होय अंग रस को जहा भावोदय कै होय ।
भावोदय अँग भाव को है भावोदय सोय ॥१०॥

भाव को उदय होय सो भावोदय ॥ जहा रस को अंग भावोदय होय अथवा भाव को अंग भावोदय होय सो भावोदय अलंकार है ॥ १० ॥

उदाहरण दोहा ।

सुनि गुन मोहन के रहे हिय हुलसी अति बाम ।
चहतविचारिविचारि उर कबमिलिहैं घनश्याम ॥

मोहन के गुन सुनि कै बाम है सो हिया में हुलसी रही है ॥ उर में बिचारि बिचारि कै चाहती है घनश्याम कब मिलैंगे । इहा शृंगार रस को अंग औत्सुक्यसंचारी को उदय है ॥ ११ ॥

भाव संधिलक्षण चन्द्रायण ।

भाव सन्धि जहँ अंग रसहि को कै जहाँ ।
भाव संधि ह्वै अंग भाव को वर तहाँ ॥
भाव संधि है जुरैं विरुद्ध जु भावही ।
भाव संधि तिहिँ नाम समस्त बतावही ॥ १२ ॥

जहा रस को अग भाव सधि होय अथवा भाव को अंग भाव सधि होय तहां भाव सधि अलकार है॥ जो विरुद्ध भाव जुरे तिसको सम्पूर्ण कवि भाव सधि नाम बतावै हैं। १२॥

उदाहरण दोहा।

चलतवीर सयाम कौं लखि बिलखी निज वाल।
अरुन वरन तन मै उठे विपुल पुलक ततकाल॥

वीर नैं सयाम कौं चलते बिलखी हुई अपनी स्त्री देखी ताही समय अरुन वरन तन मैं बहुत रोम उठे यहा प्रभु विषयक रति भाव को अग रमणी प्रेम रण उतकण्ठा की सन्धि है यातैं भाव सन्धि है॥ १३॥

भाव सबलतालक्षण॥ चन्द्रायण॥

भाव शवलता होय अग रस को मता।
कै भावहि को अग भाव को सबलता॥
भाव शवलता साय भाव जहँ वहुतही।
उपजै तहाँ सुभाव शवलता कवि कही॥१४॥

रस को अग भाव शवलता होय अथवा भाव को अग भाव शवलता होय सो भाव शवलता अलकार है। जहा बहुत भाव उपजै तहा कविन नै भाव सवलता कही है।

उदाहरण दोहा।

वशीधर वनमालधर हरि उर माहि रहाय।
कित मैं कितवहकितमिलन सजनीव्योतयताय॥

यशोधर वनमालधर हरि हैं सो उर मैं रहे हैं। कहाँ मैं। कहा वह। कहा मिलाप है। हे सजनी तू क्यौंत बता यहा यशोधर वनमाल धर यह तो कारण। कहा मैं कहा वह यह वितर्क ॥ कहा मिलन यह दीनता तू क्यौंत बता यह उत्कठा यह भाव सबलता है सो विप्रलभ शृगार रस को अङ्ग है यातैं भाव सबलता अलकार है ॥ १५ ॥

अथ प्रमाणालकार लिख्यते।

प्रत्यक्ष लक्षण दोहा।

इन्द्रिय अरु मन ये जहाँ विषय आपनी पाय।
ज्ञान करैं प्रत्यक्ष तिहिँ कहँ गुलाब कविराय ॥

जहा इन्द्रिय और मन हैं सो अपनी विषय पाय करि के ज्ञान करैं तिसकौं गुलाब कहै है कविराज हैं सो प्रत्यक्ष अलकार कहै हैं ॥ १६ ॥

उदाहरण दोहा।

लखन सुनहु जिहिँ कारनै होत जग्य धनुधारि।
मन मानत है देखि यह है वह जनककुमारि ॥

रामचन्द्र को उक्ति। हे लक्ष्मण सुनौं। जाके वास्ते धनुष उठायबे कौं जग्य होत है मेरा मन मानै है। देखि यह वही जनककुमारी है। इहा मन नेत्रन सो प्रत्यक्ष है यातैं प्रत्यक्षअलकार है ॥ १७ ॥

अनुमान लक्षण दोहा।

कारण कै जानै जहा कारज जान्यो जाय।

है अनुमान अलंकृती कवि गुलाब के भाय ॥

उदाहरण दोहा।

चटकाली दधिमथनधुनि चरणायुध ध्वनिपाय।
जानि शर्वरीअन्त तिय रहि पिय-हिय लपटाय ॥

चिरीन की ध्वनि दधिमथन ध्वनि मुर्गा की ध्वनि सुनि के राति को अन्त जानि करि के तिय है सो पिय का हिया सों लपटाय रही ॥ इहा चटकाली दधिमथन मुर्गा की ध्वनि कारन जाने तें निर्यात कारज जान्यो, कारज जान्यो यातें अनुमान है ॥ १८ ॥

उपमान लक्षण।

उपमा की सादृश्य तें विन देख्यौ उपमेय।
जानि परे उपमान सो अलंकार है ज्ञेय ॥२०॥

उपमान की सादृश से बिना देख्यो उपमेय जानि परै सो जानिवे योग्य उपमान अलंकार है ॥ २० ॥

उदाहरण दोहा।

मन्मथ सम सुंदर लसै रवि सम तेज विशाल।
सागर सम गंभीर है सो दसरथ को लाल ॥२१॥

कामदेव की समान सुंदर लसै है। सूर्य समान विशाल तेज है। समुद्र समान गंभोर है सो रामचन्द्र है इहा कामादि उपमानन सें रामचन्द्र जाने गये यातें उपमान है ॥

शब्द लक्षण दोहा ।

जहँा शास्त्र अरु लोक को वचन प्रमाण बखान ।
सो शब्दालंकार है भाषत सुकवि सुजान ॥२२॥

जहां शास्त्र और लोक का वचन का प्रमाण को ब खान होय सो शब्दालंकार है सुकवि सुजान हैं सो भाषते हैं ॥ २२ ॥

उदाहरण दोहा ।

धर्मविना सुखनहिँ मिलै गुरुविन लहै न ज्ञान ।
ज्ञान विना नहिँमुक्ति ह्वै पचिपचि मरै अजान ॥

धर्म विना सुख नहिँ मिलै । गुरु विना ज्ञान नहि मिलै ज्ञान विना मुक्ति नहि होय । अजान है सो पचि पचि कै मरे हैं । इहा शास्त्र प्रमाण है यातैं शब्दालंकार है ॥१६॥

अर्थापत्तिलक्षण दोहा ।

जहाँ व्यर्थ भे अर्थ को और जोग सैं थाप ।
अर्थापत्ति अलंकृति सु भाषत सुकवि सदाप॥२४॥

जहा व्यर्थ भये अर्थ कौं और जोग सैं थापे सो अर्था पत्ति अलंकार गर्व सहित सु कवि भाषते हैं ॥ २४ ॥

उदाहरण दोहा ।

तिय तेरे कटि है यहै मैं कीनो निर्धार ।
जो न होय तो को धरै विपुल पयोधर भार ॥

हे तिय तेरे कटि है यह मैंने निश्चय कियो है जो नहि होय तो भारी कुच भार कौं कौन धारे है यहां नहीं

यह यथार्थ कुच धारण योग करि ठहरायो । यातें अ र्थापत्ति है । २५ ॥

अथ अनुपलब्धिसम्भव लक्षण दोहा ।

जानि परै नहिँ वस्तु कछु अनुपलब्धि है सोय ।
जहँ सम्भव ह्वै वस्तु को सम्भव नाम सु होय ॥२६॥

जहां कछु वस्तु नहि जानि परै सो अनुपलब्धि अल ङ्कार है ॥ जहां वस्तु को सम्भव होय सो सम्भव नामक अ लङ्कार होय है ॥ २६ ॥

अथ अनुपलब्धि उदाहरण दोहा ।

नहिँ तेरे कटि सबकहत कुच थित बिनआधार ।
इन्द्रजाल यह काम को लोक करत निर्धार ॥

तेरे कटि नहि है । सब कहते हैं कुचन की स्थिति बिना आधार है । यह कामदेव को इन्द्रजाल है ऐसे लोक नि श्चय करते हैं ॥ इहां कटि को अभाव है ॥ यातें अनुपलब्धि है । २७ ॥

अथ सम्भव को उदाहरण दोहा ।

सुनी न देखी तुव सदृश हे वृषभानुकुमारि ।
जानत हौं कहु होयगी बिपुलाधार बिचारि ॥

हे वृषभानकुमारि समान तो देखी है न सुनी है प रन्तु पृथ्वी बड़ी बिचारि कै जानौं हौं कोई होयगी । इहां वस्तु को सम्भव है यातें सम्भवालङ्कार है ॥ २८ ।

अथ ऐतिह्यलक्षण दोहा ।

सु ऐतिह्य प्राचीन कोउ चलि आई जु कहानि ।
ताको वक्ता प्रथम को नहिन परै पहिचानि ॥

जो कोई प्राचीन कहानी चली आई होय ताको प्रथम वक्ता नही पहिचान्यो परै सो ऐतिह्य अलंकार है ॥

उदाहरण दोहा ।

हे सीता उर धीर धरि जन धरि मन अपघात ।
जीवत सो नर सुख लहै यहै लोक की बात ॥

त्रिजटा की उक्ति । हे सीता हृदय मैं धीरज धरि मन मैं अपघात मति धरै । जो आदमी जीवै सो सुख पावै यह लोक की बात है । इहां जीवत सो नर सुख लहै यह लोक कहानी है यातें ऐतिह्य है ॥ ३० ॥

इति प्रमाणालंकारा ।

अथ संसृष्टिसंकर लिख्यते दोहा ।

भूषण शब्दरु अर्थ के आपस मै मिलि जाँहि ।
संसृष्टिरु संकर तहाँ ये जुग नाम कहाँहि ॥३१॥

जहा शब्द और अर्थ के अलंकार आपस में मिलिजांहि तहा संसृष्टि और संकर ये दो नाम कहावें है ॥ ३१ ॥

अथ संसृष्टि लक्षण दोहा ।

एक अलंकृति कों रहै नहि दूसर की चाह ।
बाधकहूं इक आन को होय नहीं किंहुँ राह ॥३२॥

जुदे जुदे भासैं सकल अपनी अपनी ठाम ।
तिल तंडुल की रीति करि है संसृष्टि सुनाम ॥

एक अलकार कौं दूसरे अलकार की चाह नहीं रहै और एक अलकार दूसरे अलकार को बाधक भी किसी राह सैं नहीं होय ॥ ३० ॥

तिल तंडुल की रोति करिकै सब अपनो अपनो ठौर पर जुदे जुदे भासैं सो संसृष्टि नाम है ॥ ३३ ॥

अथ संसृष्टि भेद दोहा ।

अर्थ अर्थ के भूषणरु शब्द शब्द के होय ।
अर्थ शब्द के होय यौं त्रय संसृष्टि विजोय ॥३४॥

अर्थ अर्थ के अलंकार होय और शब्द शब्द के अलकार होय और अर्थ शब्द के अलकार होय ऐसैं तीन संसृष्टि देखौ । ३४ ॥

अथ शंकर लक्षण दोहा ।

पय पानी की रीति करि होय परस्पर लीन ।
ताको शंकर नामही भाषत परम प्रवीन ॥३५॥

दूध जल रीति करिकै अलकार परस्पर लीन होय ताकी परम प्रवीन हैं सो शंकर नाम भाखते है । ३५ ॥

अथ शंकर भेद दोहा ।

है अंगागी भाव अरु सम प्राधान्य वखानि ।
संदेह अरु इक वाचकानुप्रवेश चव मानि ॥३६॥

अगांगी भाव प्रकार है सम प्राधान्य २ प्रकार बखानौं सदेह कर ३ और एक वाचकानुप्रवेश प्रकार जानौं ये चारि भेद हैं ॥ ३६ ॥

अथ अगांगी भाव लक्षण दोहा ।

बीज वृक्ष के न्याय करि इक इक को अँग होय ।
सो अगांगी भाव है कवि गुलाब मत जोय ।३७।

बीज के न्याय करिकै एक अलङ्कार दूसरे अलकार को अंग होय सो अगांगी भाव प्रकार है गुलाब कवि के मत मैं देखौ ॥ ३७ ॥

अथ सम प्राधान्य प्रकार लक्षण दोहा ।

दिन दिनपति के न्याय करि सगप्रगटैं सँगभास ।
नाम सम प्राधान्यहो कवि गुलाब कह तास ।३८।

दिन सूर्य न्याय करि अलकार साथ ही प्रगटैं साथ ही भासैं गुलाब कवि है सो ताको नाम समप्रधान्य कहैं हैं ॥

अथ संदेह संकर लक्षण चन्द्रायण ।

प्रथम मिटायें द्वितिय अलङ्कृति भासही ।
द्वितिय मिटायें प्रथम विशेष प्रकासही ॥
बाध न इक को एक राति दिन न्याय करि ।
तिँहिँ प्रकार सदेह कहत कवि मोद धरि ॥३९॥

पहिलो अलकार मिटाये सैं दूसरो अलकार भासै दूसरो अलकार मिटाये सैं पहिलो अलकार प्रकासै राति दिन

न्याय करि एक कौं एक बाधे नहीं ताकौं सदेह प्रकार कहत हैं कवि मोद धरि करि कै ॥ ३८ ॥

अथ एकवाचकानुप्रवेश प्रकार लक्षण दोहा ।

न्याय नृसिंहाकार करि पदरु वाक्य इक माहि।
जुग भूषण इकवाचकानुप्रवेश कहि ताहि ॥४०॥

नृसिंहाकार न्याय करि एक पद और एक वाक्य मैं दोय अलकार होंय ताकों एक वाचकानुप्रवेश प्रकार कहो ॥ ४० ॥

अर्थ अर्थ की प्रथम संसृष्टि को उदाहरण दोहा ।

शशि सो उज्जल मुख लसै खजन हैं मनु नैंन ।
अधर नासिका बिंब शुक मधुर सुधा से वैन ॥

शशि सो उजलो मुख लसै है नैन है सो मानो खंजन हैं ॥ अधर और नासिका है सो किंदूरी और शुक हैं ॥ सुधा से मीठे बचन है ॥ यहां उपमा उत्प्रेक्षा यथासंख्य अर्थालंकार करि संसृष्टि है ॥ ४१ ॥

अथ कामाधा उदाहरन सवैया ।

छाडत ना पति कौं छिनहू गुरुलोगन को मन मानत भै ना । कानि करै सखियानहु की न कथै मदमार भरे बड वैना॥ नाक चढाय भ्रमा भृकुटी त्रिपुटी भरि भाल सुभावत सैना ॥ बान मनोभवचापचढे सम राखत उन्नत दीरघ नैना॥

दोहा।

स्वभावोक्ति पद चयन में उपमा चौथे मांहि ।
जुग अर्थालंकार करि ह्वा संसृष्टि सराहि ॥४३॥

द्वितीय संसृष्टि को उदाहरण दोहा।

कर की करकी वर चुरी धूरि-धूसरित देह ।
कत सुकरत परखी परत सुख सौं सनी सनेह ॥

सुन्दर कर की चूरी करकि गई है धूरि करि कै धूसरी देह है। क्यौं नटै है। पिछानी परै है। सुख सौं सनेह में सनी है यहा यमकछेकानुप्रास शब्दालंकारन की संसृष्टि है ॥ ४४ ॥

अथ नवल अनगा उदाहरन सवैया ।

उच्च हँसै नहि रोस करै मधुरे मृदु बैन वखानि सुटेरै । देहरि लाघि कढै घर तें नहि सासन-सासन नेक न गेरै ॥ कानि करै गुरुलोगन की अति नेह-नही नहि नैनन फेरै । पै पति की वर बात कहै तव भौह भमाय सखी तन हेरै ॥

दोहा।

सासन सासन मे जमक लखि छेकानुप्रास ।
शब्द शब्द जुग योग तें ह्वा संसृष्टिहि भास ।४६।

तृतीय संसृष्टि को उदाहरन दोहा ।

दृग से दृग हैं याहि के मुख सौ मुखही आहि।
कर से कर कुच से कुचहि उपमा उपजै काहि॥

याके दृग से याके ही दृग है। मुख सो मुखही है। कर से कर ही है कुच से कुच ही है। उपमा कौन कौं उपजै इहां छेकानुप्रास अनन्वय शब्दार्थालंकार की संसृष्टि है॥

अथ आरूढ यौवना उदाहरन सवैया ।

आज लखी इक गोपसुता करि-कुंभन से कुच की छबि चैना। है नहि चंपक की तन सी दुति आनन सी शशि की दुति है ना॥ गोल कपोल अमोल मनोहर पीपन प्रान सुधा सम वैना। कंजन-भंजन खंजन-गंजन है मनरंजन साँजन नैना॥ ४८॥

दोहा।

पूर्णोपम लुप्तोपमा अनुप्रास अनुमानि।
चवथ प्रतीप द्वितीय पद यौ संसृष्टि पिछानि॥

इति संसृष्टि ।

अथ अगांगी भाव प्रकार उदाहरण दोहा।

हलत पवन सें तरुनतर दोखत छांह अचूक।
शशिहरि नें तम-गज हनें मानहु तिनके टूक॥

पवन सें हालते वृक्षन के नीचे जो अचूक छाया दी खती है सो मानों शशिसिंह नें तम रूप हाथी मारे हैं ति नके टूक हैं। यहां शशिहरि तमगज रूपक है सो उत्प्रेक्षा को अंग है यातें अगांगी भाव प्रकार है॥ ५०॥

सम प्राधान्य प्रकार उदाहरण दोहा।

लंघित तुंग पयोधर सु रवितुरगावलि पार।
मध्य अरुण नायक मनहु नभ-श्रीमरकत हार॥

ऊचे मेघन कों उलाङ्घती हुई सूर्य का घोडान की पंक्ति है सो हमारी रक्षा करो सो मानों मध्य मे है लालमणि जाके ऐसो आकाश लक्ष्मी को पन्ना को हार है॥ इहां श्लेष उत्प्रेक्षा समासोक्ति साथ ही प्रगटते है साथही भासते हैं। यातें सम प्राधान्य प्रकार है। नभ श्री में नायिका व्यव हार को आरोप है सो समासोक्ति है। नायक नाम सारथी और हार की मणि को है। "नायको नेतरि श्रेष्ठे हारमध्य मणावपीति" विश्व॥ ५१॥

अथ संदेह प्रकार उदाहरण कवित्त।

शोभा तिहुलोक की मसाली शोष केलि मेलि
रूप वर भाजन में फेरि फेरि जोवतो। चंदन

कपूर रस चोवा सधि सानिसानि निज निपुनाई
सब ताही माझ पोवती ॥ सुकवि गुलाव जो व-
नाय विधि-कारीगर कुंकुम कनक बिज्जुमार जल
धोवती । चोपनी पियूष लेय नीकी भांति चोपती
तौ राधामुख चंद की समान चंद होवती ॥

तीनों लोक की शोभा है सो मसालो इकठ्ठो करि रूप है सो सुन्दर भाजन होय तामैं धरि कै फेरि फेरि शुध करतौ । चन्दन कपूर शृङ्गार रस इनका चोवा में सानि के अपनी सब चतुराई ताही में लगातौ गुलाव कबि कहै है ब्रह्मा कारीगर है सो केशर सोनो बिजुरी इनको सार है सो जल होय तामैं धोतौ अमृत रूप चोपनी लेय के आछी तरह सैं चोपतो तौ राधा का मुख चन्द्रमा की समान चन्द्रमा होतौ यह सभावना है जो यों यद सैं और न ऐसो चन्द्रमा होय न राधाका मुख की समान होय यह मिथ्याध्यवसित है दोनू मे असभव है याते सन्देह प्रकर है । जो वतौ पोवतौ धोवतौ चोपतौ यों भूत काल सैं अन्वय होय तब तौ सभावना होय । और जोवै पोवै धोवै चोपै तब होवै तौ होवै यों भविष्यति काल मैं अन्वय होय तब मिथ्याध्यवसिति होय ॥ ५२ ॥

अथ एक वाचकानुप्रवेश सकर दोहा ।

है हरि दीनदयालु मैं यह मांगों सिर नाय ।
तुव पद पंकज आसरै मन मधुकर लगि जाय ॥

हे हरि दीनदयालु मैं यह थिर नवाय करि कै मागौं हौं तुह्मारे चरण कमल के आसरें मेरो मन भ्रमर लगि जाय। इहा पदपकज मनमधुकर मे रूपक छेकानुप्रास है यातैं एक वाचकानुप्रवेश शकर है। काहू के मत मैं शब्दार्थालकार का ही एक वाचकानुप्रवेश होय है। काहू के मत मैं अर्थालकारन को भी होय है। जहां शब्दार्थालकार जुदा जुदा होय तहा ससृष्टि है। अरु जहा एक पद मैं दोनौं हौंय तहा एक वाचकानुप्रवेश शकार है॥ ५१॥

इति ससृष्टिशकर सम्पूर्ण॥

श्रीयुत जसयुत विजययुत युतमन वाछित काम।
राजो महि सिर शेष लो सुतन सहित न्रप राम॥
अव सवत उनईस से वावन फागुन माहि।
श्रीरघुवीरनरेश ने सुन्यौ ग्रन्थ चित चाहि॥५४॥
शीलसदन जनदुखकदन मदनरूप रनधीर।
अरिमदमर्दन वर बदन निर्मल मन रघुवीर॥

सवैया।

धीरन मैं रनधीर महा पर-पीरनिवारन मै इकलोई। सागरशील सयानन को गुनआगर आहि उजागर जोई॥ क्षिति दिगन्तन लौं रहि

छाय दया धनदायकता नहि गोई ।
मडल को मघवा रघुवीर समान न ५।

दोहा।

ग्राम दोय ताजी मगज दिये राम .
कचन ककन पगन मैं पहिराये रघुवी
दियो हुक्म सुनि ग्रन्थ इमि ू रघु
उदाहरन भूषनन के निज कृत धरहु
सो सासन सिर धरि धरे मम ग्रथन
उदाहरन भूषनन के जिँहिँ ठाँ जोग्य
जवलगि महि अहि शिर रहै जवलगि
तवलगि राजो सुखसहित सुवन स।

इति श्रीमद्गुलाबकविरायेण विरचिता ल।।
सपूर्णा ।



भाषा काव्य के ग्रन्थ—अलङ्कार।

अलङ्कार मञ्जरी	/)
कविकुलकण्ठाभरण	/)
कर्णाभरण	/)
चेतचन्द्रिका	।/)
दीपप्रकाश	/)
भाषाभूषण	/)

नायिका भेद।

नायिका भेद बरवे में	/,
रसप्रबोध	।/)
रसराज	।)
शृङ्गारनिर्णय	।/)
सुन्दरशृङ्गार	।)
शृङ्गारसुधाकर	२॥)
सुन्दरी सर्वस्व	२)
सुन्दरीविलास	।/)
सुधानिधि	॥)
जगतबिनोद	॥)

नखसिख।

केशवदासकृतनख सिख	/)
चन्द्रशेखरकृत नखसिख	/,
बलभद्रकृतनखसिख	/)

मैनेजर भारतजीवन बनारस सिटी।